18-01-2004

''वर्ल्ड अथॉरिटी के डायरेक्ट बच्चे हैं - इस स्मृति को इमर्ज रख सर्व शक्तियों को ऑर्डर से चलाओ''

आज चारों ओर स्नेह की लहरों में सभी बच्चे समाये हुए हैं। सभी के दिल में विशेष ब्रह्मा बाप की स्मृति इमर्ज है। अमृतवेले से लेके साकार पालना वाले रत्न और साथ में अलौकिक पालना वाले रत्न दोनों के दिल के यादों की मालायें बापदादा के पास पहुंच गई हैं। सभी के दिल में बापदादा के स्मृति की तस्वीर दिखाई दे रही है। और बाप के दिल में सर्व बच्चों की स्नेह भरी दिल समाई हुई है। सभी के दिल से एक ही स्नेह भरा गीत बज रहा है - ''मेरा बाबा'' और बाप की दिल से यही गीत बज रहा है -''मेरे मीठे-मीठे बच्चे''। यह आटोमेटिक गीत, अनहद गीत कितना प्यारा है। बापदादा चारों ओर के बच्चों को स्नेह भरी स्मृति के रिटर्न में दिल के स्नेह भरी दुआयें पदमगुणा दे रहे हैं।

बापदादा देख रहे हैं अभी भी देश वा विदेश में बच्चे स्नेह के सागर में लवलीन हैं। यह स्मृति दिवस विशेष सभी बच्चों के प्रति समर्थ बनाने का दिवस है। आज का दिन ब्रह्मा बाप द्वारा बच्चों की ताजपोशी का दिन है। ब्रह्मा बाप ने निमित्त बच्चों को विश्व सेवा की जिम्मेवारी का ताज पहनाया। स्वयं अननोन बनें और बच्चों को साकार स्वरूप में निमित्त बनाने का, स्मृति का तिलक दिया। स्वयं समान अव्यक्त फरिश्ते स्वरूप का, प्रकाश का ताज पहनाया। स्वयं करावनहार बन करनहार बच्चों को बनाया। इसलिए इस दिवस को स्मृति दिवस सो समर्थी दिवस कहा जाता है। सिर्फ स्मृति नहीं, स्मृति के साथ-साथ सर्व समर्थियाँ बच्चों को वरदान में प्राप्त हैं। बापदादा सभी बच्चों को सर्व स्मृतियों स्वरूप देख रहे हैं। मास्टर सर्व शक्तिवान स्वरूप में देख रहे हैं। शक्तिवान नहीं, सर्व-शक्तिवान। यह सर्व शक्तियां बाप द्वारा हर एक बच्चे को वरदान में मिली हुई हैं। दिव्य जन्म लेते ही बापदादा ने वरदान दिया - सर्वशक्तिवान भव! यह हर जन्म दिवस का वरदान है। इन शक्तियों को प्राप्त वरदान के रूप से कार्य में लगाओ। हर एक बच्चे को मिली हैं लेकिन कार्य में लगाने में नम्बरवार हो जाते हैं। हर शक्ति के वरदान को समय प्रमाण आर्डर कर सकते हो। अगर वरदाता के वरदान के स्मृति स्वरूप बन समय अनुसार किसी भी शक्ति को आर्डर करेंगे तो हर शक्ति हाज़िर होनी ही है। वरदान की प्राप्ति के, मालिकपन के स्मृति स्वरूप में हो आप आर्डर करो और शक्ति समय पर कार्य में नहीं आये, हो नहीं सकता। लेकिन मालिक, मास्टर सर्वशक्तिवान के स्मृति की सीट पर सेट हो, बिना सीट पर सेट के कोई आर्डर नहीं माना जाता है। जब बच्चे कहते हैं कि बाबा हम आपको याद करते तो आप हाज़िर हो जाते हो, हज़ूर हाज़िर हो जाता है। जब हज़ूर हाज़िर हो सकता तो शक्ति क्यों नहीं हाज़िर होगी! सिर्फ विधि पूर्वक मालिकपन के अथॉरिटी से आर्डर करो। यह सर्व शक्तियां संगमयुग की विशेष परमात्म प्रॉपर्टी है। प्रॉपर्टी किसके लिए होती है? बच्चों के लिए प्रॉपर्टी होती है। तो अधिकार से स्मृति स्वरूप की सीट से आर्डर करो, मेहनत क्यों करो, आर्डर करो। वर्ल्ड अथॉरिटी के डायरेक्ट बच्चे हो, यह स्मृति का नशा सदा इमर्ज रहे।

अपने आपको चेक करो - वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी की अधिकारी आत्मा हूँ, यह स्मृति स्वत: ही रहती है? रहती है या कभी-कभी रहती है? आजकल के समय में तो अधिकार लेने के ही झगड़े हैं और आप सबको परमात्म अधिकार, परमात्म अथॉरिटी जन्म से ही प्राप्त है। तो अपने अधिकार की समर्थी में रहो। स्वयं भी समर्थ रहो और सर्व आत्माओं को भी समर्थी दिलाओ। सर्व आत्मायें इस समय समर्थी अर्थात् शक्तियों की भिखारी हैं, आपके जड़ चित्रों के आगे मांगते रहते हैं। तो बाप कहते हैं ''हे समर्थ आत्मायें सर्व आत्माओं को शक्ति दो, समर्थी दो।'' इसके लिए सिर्फ एक बात का अटेन्शन हर बच्चे को रखना आवश्यक है - जो बापदादा ने इशारा भी दिया, बापदादा ने रिजल्ट में देखा कि मैजारिटी बच्चों का संकल्प और समय व्यर्थ जाता है। जैसे बिजली का कनेक्शन अगर थोड़ा भी लूज़ हो वा लीक हो जाए तो लाइट ठीक नहीं आ सकती। तो यह व्यर्थ की लीकेज़ समर्थ स्थिति को सदाकाल की स्मृति बनाने नहीं देती, इसलिए वेस्ट को बेस्ट में चेन्ज करो। बचत की स्कीम बनाओ। परसेन्टेज़ निकालो - सारे दिन में वेस्ट कितना हुआ, बेस्ट कितना हुआ? अगर मानो 40 परसेन्ट वेस्ट है, 20 परसेन्ट वेस्ट है तो उसको बचाओ। ऐसे नहीं समझो थोड़ा सा ही तो वेस्ट जाता है, बाकी तो सारा दिन ठीक रहता है। लेकिन यह वेस्ट की आदत बहुत समय की आदत होने के कारण लास्ट घड़ी में धोखा दे सकती है। नम्बरवार बना देगी, नम्बरवन नहीं बनने देगी। जैसे ब्रह्मा बाप ने आदि में अपनी चेकिंग के कारण रोज़ रात को दरबार लगाई। किसकी दरबार? बच्चों की नहीं, अपनी ही कर्मेन्द्रियों की दरबार लगाई। आर्डर चलाया - हे मन मुख्य मंत्री यह तुम्हारी चलन अच्छी नहीं, आर्डर में चलो। हे संस्कार आर्डर में चलो। क्यों नीचे ऊपर हुआ, कारण बताओ, निवारण करो। हर रोज़ आफीशल दरबार लगाई। ऐसे रोज़ अपनी स्वराज्य दरबार लगाओ। कई बच्चे बापदादा से मीठी-मीठी रूहरिहान करते हैं। पर्सनल रूहरिहान करते हैं, बतायें। कहते हैं हमको अपने भविष्य का चित्र बताओ, हम क्या बनेंगे? जैसे आदि रत्नों को याद होगा कि जगत अम्बा माँ से सभी बच्चे अपना चित्र मांगते थे, मम्मा आप हमको चित्र दो हम कैसे हैं। तो बापदादा से भी रूहरिहान करते अपना चित्र मांगते हैं। आप सबकी भी दिल तो होती होगी कि हमको भी चित्र मिल जाए तो अच्छा है। लेकिन बापदादा कहते हैं - बापदादा ने हर एक बच्चे को एक विचित्र दर्पण दिया है, वह दर्पण कौन सा है? वर्तमान समय आप स्वराज्य अधिकारी हो ना! हो? स्वराज्य अधिकारी हो? हो तो हाथ उठाओ। स्व-राज्य, अधिकारी हो? अच्छा। कोई-कोई नहीं उठा रहे हैं।

थोड़ा-थोड़ा हैं क्या? अच्छा। सभी स्वराज्य अधिकारी हो, मुबारक हो। **तो स्वराज्य अधिकार का चार्ट आपके लिए भविष्य पद की शक्ल दिखाने का दर्पण है।** यह दर्पण सबको मिला हुआ है ना? क्लीयर है ना? कोई ऐसे काले दाग तो नहीं लगे हुए हैं ना! अच्छा, काले दाग तो नहीं होंगे, लेकिन कभी-कभी जैसे गर्म पानी होता है ना, वह कोहरे के मुआफिक आइने पर आ जाता है। जैसे फागी होती है ना, तो आइने पर ऐसा हो जाता है जो आइना क्लीयर नहीं दिखाता है। नहाने के समय तो सबको अनुभव होगा। तो ऐसा अगर कोई एक भी कर्मेन्द्रिय अभी तक भी आपके पूरे कन्ट्रोल में नहीं है, है कन्ट्रोल में लेकिन कभी-कभी नहीं भी है। अगर मानों कोई भी कर्मेन्द्रिय, चाहे ऑख हो, चाहे मुख हो, चाहे कान हो, चाहे पाँव हो, पाँव भी कभी-कभी बुरे संग के तरफ चला जाता है। तो पाँव भी कन्ट्रोल में नहीं हुआ ना। संगठन में बैठ जायेंगे, रामायण और भागवत की उल्टी कथायें सुनेंगे, सुल्टी नहीं। तो कोई भी कर्मेन्द्रिय संकल्प, समय सहित अगर कन्ट्रोल में नहीं है तो इससे ही चेक करो जब स्वराज्य में कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है तो विश्व के राज्य में कन्ट्रोल क्या करेंगे! तो राजा कैसे बनेंगे? वहाँ तो सब एक्यूरेट है। कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर सब स्वत: ही संगमयुग के पुरुषार्थ की प्रालब्ध के रूप में है। तो संगमयुग अर्थात् वर्तमान समय अगर कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर कम है, तो पुरुषार्थ कम तो प्रालब्ध क्या होगी? हिसाब करने में तो होशियार हो ना! तो इस आइने में अपना फेस देखो, अपनी शक्ल देखो। राजा की आती है, रॉयल फैमिली की आती है, रॉयल प्रजा की आती है, साधारण प्रजा की आती है, कौन सी शक्ल आती है? तो मिला चित्र? इस चित्र से चेक करना। हर रोज़ चेक करना क्योंकि बहुतकाल के पुरुषार्थ से, बहुतकाल के राज्य भाग्य की प्राप्ति है। अगर आप सोचो कि अन्त के समय बेहद का वैराग्य तो आ ही जायेगा, लेकिन अन्त समय आयेगा तो बहुतकाल हुआ या थोड़ा काल हुआ? बहुतकाल तो नहीं कहेंगे ना! तो 21 जन्म पूरा ही राज्य अधिकारी बनें, तख्त पर भले नहीं बैठें, लेकिन राज्य अधिकारी हों। यह बहुतकाल (पुरुषार्थ का), बहुतकाल की प्रालब्ध का कनेक्शन है। इसीलिए अलबेले नहीं बनना, अभी तो विनाश की डेट फिक्स ही नहीं है, पता ही नहीं। 8 वर्ष होगा, 10 वर्ष होगा, पता तो है ही नहीं। तो आने वाले समय में हो जायेंगे, नहीं। विश्व के अन्तकाल सोचने के पहले अपने जन्म का अन्तकाल सोचो, आपके पास डेट फिक्स है, किसके पास पता है कि इस डेट पर मेरा मृत्यु होना है? है किसके पास? नहीं है ना! विश्व का अन्त तो होना ही है, समय पर होगा ही लेकिन पहले अपनी अन्तकाल सोचो और जगदम्बा का स्लोगन याद करो - क्या स्लोगन था? हर घड़ी अपनी अन्तिम घड़ी समझो। अचानक होना है। डेट नहीं बताई जायेगी। ना विश्व की, ना आपके अन्तिम घड़ी की। सब अचानक का खेल है। इसलिए दरबार लगाओ, हे राजे, स्वराज्य अधिकारी राजे अपनी दरबार लगाओ। आर्डर में चलाओ क्योंकि भविष्य का गायन है, लॉ एण्ड आर्डर होगा। स्वत: ही होगा। लव और लॉ दोनों का ही बैलेन्स होगा। नेचरल होगा। राजा कोई लॉ पास नहीं करेगा कि यह लॉ है। जैसे आजकल लॉ बनाते रहते हैं। आजकल तो पुलिस वाला भी लॉ उठा लेता है। लेकिन वहाँ नेचरल लव और लॉ का बैलेन्स होगा।

तो अभी आलमाइटी अथॉरिटी की सीट पर सेट रहो। तो यह कर्मेन्द्रियां, शक्तियां, गुण सब आपके जी हज़ूर, जी हज़ूर करेंगे। धोखा नहीं देंगे। जी हाज़िर। तो अभी क्या करेंगे? दूसरे स्मृति दिवस पर कौन सा समारोह मनायेंगे? यह हर एक ज़ोन तो समारोह मनाते हैं ना। सम्मान समारोह भी बहुत मना लिये। अब सदा हर संकल्प और समय के सफलता की सेरीमनी मनाओ। यह समारोह मनाओ। वेस्ट खत्म क्योंकि आपके सफलतामूर्त बनने से आत्माओं को तृप्ति की सफलता प्राप्त होगी। निराशा से चारों ओर शुभ आशाओं के दीप जगेंगे। कोई भी सफलता होती है तो दीपक तो जगाते हैं ना! अब विश्व में आशाओं के दीप जगाओ। हर आत्मा के अन्दर कोई न कोई निराशा है ही, निराशाओं के कारण परेशान हैं, टेन्शन में हैं। तो हे अविनाशी दीपकों अब आशाओं के दीपकों की दीवाली मनाओ। पहले स्व फिर सर्व। सुना!

बाकी बापदादा बच्चों के स्नेह को देख खुश हैं। स्नेह की सबजेक्ट में परसेन्टेज़ अच्छी है। आप इतनी मेहनत करके यहाँ क्यों पहुंचे हो, आपको कौन लाया? ट्रेन लाई, प्लेन लाया या स्नेह लाया? स्नेह के प्लेन से पहुंच गये हो। तो स्नेह में तो पास हो। अभी आलमाइटी अथॉरिटी में मास्टर हैं, इसमें पास होना, तो यह प्रकृति, यह माया, यह संस्कार, सब आपके दासी बन जायेंगे। हर घड़ी इन्तजार करेंगे मालिक क्या आर्डर है! ब्रह्मा बाप ने भी मालिक बन अन्दर ही अन्दर ऐसा सूक्ष्म पुरुषार्थ किया जो आपको पता पड़ा, सम्पन्न कैसे बन गया? पंछी उड़ गया। पिंजड़ा खुल गया। साकार दुनिया के हिसाब-किताब का, साकार के तन का पिंजड़ा खुल गया, पंछी उड़ गया। अभी ब्रह्मा बाप भी बहुत सिक व प्रेम से बच्चों का जल्दी आओ, जल्दी आओ, अभी आओ, अभी आओ, यह आह्वान कर रहे हैं। तो पंख तो मिल गये हैं ना! बस सभी एक सेकण्ड में अपने दिल में यह ड्रिल करो, अभी-अभी करो। सब संकल्प समाप्त करो, यही ड्रिल करो **''ओ बाबा मीठे बाबा, प्यारे बाबा हम आपके समान अव्यक्त रूपधारी बनें कि बनें।''**

(बापदादा ने ड्रिल कराई)

अच्छा - चारों ओर के स्नेही सो समर्थ बच्चों को, चारों ओर के स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी बच्चों को, चारों ओर के मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी के सीट पर सेट रहने वाले तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को, सदा मालिक बन प्रकृति को, संस्कार को, शक्तियों को, गुणों को आर्डर करने वाले विश्व राज्य अधिकारी बच्चों को, बाप समान सम्पूर्णता को, सम्पन्नता को समीप लाने

वाले देश विदेश के हर स्थान के कोने-कोने के बच्चों को समर्थ दिवस का, बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

अभी-अभी बापदादा को विशेष कौन याद आ रहा है? जनक बच्ची। खास सन्देश भेजा था कि मैं सभा में हाजिर अवश्य हूंगी। तो चाहे लण्डन, चाहे अमेरिका, चाहे आस्ट्रेलिया, चाहे अफ्रीका, चाहे एशिया और सर्व भारत के हर देश के बच्चों को एक-एक को नाम और विशेषता सहित यादप्यार। आपको तो सम्मुख यादप्यार मिल रहा है ना! अच्छा।

सेवा का टर्न - महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश का है:-(5000 आये हैं) अच्छा - महाराष्ट्र अर्थात् सर्व से महान। जैसे देश महान है वैसे आत्मायें भी महान हैं। बापदादा हर बच्चे को महान रूप में ही देखते हैं। सेवा का फल भी मिला, पुण्य जमा हुआ और बल भी मिला। इतने ब्राह्मण आत्माओं का साथ मिला। एक दो को देख-देख हर्षित हुए। एक दो के स्नेह का बल कम नहीं है। तो फल भी मिला, बल भी मिला। अच्छा पार्ट बजाया। बापदादा तो सदा अच्छा, अच्छा, अच्छा कहते आगे उड़ाते ही रहते हैं। तो सेवा का चांस अच्छा लगा ना। बहुत अच्छा लगा। समीप आने का चांस है। सेवा का प्रत्यक्ष मेवा मिलता है। अच्छा है। अभी कोई महान कर्तव्य भी करके दिखायेंगे ना! महाराष्ट्र है तो महान कर्तव्य के निमित्त भी बनेंगे। सेवा बहुत अच्छी करो लेकिन सेवा और स्व दोनों कम्बाइन्ड हों। जैसे बापदादा कम्बाइण्ड है ना। आत्मा और शरीर कम्बाइण्ड है ना! ऐसे स्व स्थिति और सेवा दोनों कम्बाइण्ड। परसेन्टेज़ में कोई कमी नहीं हो। कभी सेवा की परसेन्टेज़ ज्यादा, कभी स्व की परसेन्टेज़ ज्यादा, नहीं, सदा बैलेन्स। तो आपके बैलेन्स द्वारा विश्व की आत्माओं को ब्लैसिंग मिलती रहेगी। तो अभी विश्व की आत्माओं को ब्लैसिंग चाहिए। मेहनत नहीं चाहिए, ब्लैसिंग चाहिए। तो आपका बैलेन्स स्वत: ही ब्लैसिंग दिलायेगी। अच्छा।

आज मधुबन वालों को भी याद किया। यह आगे-आगे बैठते हैं ना। हाथ उठाओ मधुबन वाले। मधुबन की सभी भुजायें। मधुबन वालों को विशेष त्याग का भाग्य सूक्ष्म में तो प्राप्त होता है क्योंकि रहते पाण्डव भवन में, मधुबन में, शान्तिवन में हैं लेकिन मिलने वालों को चांस मिलता है, मधुबन साक्षी होके देखता रहता है। लेकिन दिल पर सदा मधुबन वाले याद हैं। आज आपका ग्रुप (गोलक भाई को) टोली लेने आना। मेहनत करते हैं ना! सभी मधुबन वाले सभी भुजाओं सहित मेहनत बहुत अच्छी करते हैं। मेहनत में मार्क्स बहुत अच्छी हैं। अभी नम्बरवन बनने में मार्क्स लेंगे। मधुबन के रहने वालों में एक-एक नम्बरवन महान हैं, यह नारा लगायें। मधुबन से वेस्ट का नाम-निशान समाप्त हो। सेवा में, स्थिति में सबमें महान। ठीक है ना! मधुबन वालों को भूलते नहीं हैं लेकिन मधुबन को त्याग का चांस देते हैं। ऐसे तो सभी, सब ज़ोन वाले बहुत सेवा में आगे बढ़ रहे हैं। सबने प्रोग्राम किये बहुत अच्छे किये, भोपाल ने भी अच्छा किया। हर एक स्थान की विशेषता अपनी-अपनी है। देखो भोपाल वालों को प्रकृति ने कितना सहयोग दिया। एक दिन बारिश, हवा, ठण्डी रूकी रही, आपका कार्य सम्पन्न हुआ और शुरू हो गया। तो प्रकृति ने सहयोग दिया। ऐसे ही प्रकृतिजीत बनना ही है, मायाजीत बनना ही है। आप नहीं बनेंगे तो और कौन बनेगा। तो बनना ही है। अच्छा।

दादी जी से:- बहुत मेहनत करती हैं, थक जाती हैं। अच्छा, बहुत अच्छा। आदि रत्नों से श्रंगार है। आदि रत्नों को देख बापदादा को खुशी होती है। अच्छा।

दादा नारायण से:- सब ठीक है। याद और मन्सा सेवा करते चलो, इसी कार्य में बिजी रहो। बाबा भूल नहीं सकता। खुश रहना। खुशी कभी नहीं गंवाना।

एकाउन्ट ग्रुप से:- सभी जो भी सेवायें कर रहे हो, वह अपनी समझकर बहुत अच्छी कर रहे हो। इसकी मुबारक हो। सिर्फ सेवा करते डबल लाइट रहना। कोई भी बोझ अपने ऊपर नहीं रखना। जैसे ब्रह्मा बाप के पास कितनी जिम्मेवारियां थी, फिर भी डबल लाइट रहा, ऐसे फालो फादर। कोई भी बोझ हो, बाप को देकर हल्के हो जाना, बाप आये ही हैं बोझ लेने के लिए, तो बोझ देना आता है ना। तो बोझ देकर डबल लाइट बन उड़ते रहना। अच्छा। ओम् शान्ति।

02-02-2004

''पूर्वज और पूज्य के स्वमान में रह विश्व की हर आत्मा की पालना करो, दुआयें दो, दुआयें लो''

आज चारों ओर के सर्व श्रेष्ठ बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा पूर्वज भी है और पूज्य भी है। इसलिए इस कल्प वृक्ष के आप सभी जड़ हैं, तना भी हैं। तना का कनेक्शन सारे वृक्ष के टाल टालियों से, पत्तों से स्वत: ही होता है। तो सभी अपने को ऐसी श्रेष्ठ आत्मा सारे वृक्ष के पूर्वज समझते हो? जैसे ब्रह्मा को ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर कहा जाता है, उनके साथी आप भी मास्टर ग्रेट ग्रैण्ड फादर हो। पूर्वज आत्माओं का कितना स्वमान है! उस नशे में रहते हो? सारे विश्व की आत्माओं से चाहे किसी भी धर्म की आत्मायें हैं लेकिन सर्व आत्माओं के आप तना के रूप में आधारमूर्त पूर्वज हो। इसीलिए पूर्वज होने के कारण पूज्य भी हो। पूर्वज द्वारा हर आत्मा को सकाश स्वत: ही मिलती रहती है। झाड़ को देखो, तना द्वारा, जड़ द्वारा लास्ट पत्ते को भी सकाश मिलती रहती है। पूर्वज का कार्य क्या होता है? पूर्वजों का कार्य है सर्व की पालना करना। लौकिक में भी देखो पूर्वजों द्वारा ही चाहे शारीरिक शक्ति की पालना, स्थूल भोजन द्वारा वा पढ़ाई द्वारा शक्ति भरने की पालना होती है। तो आप पूर्वज आत्माओं की पालना, बाप

द्वारा मिली हुई शक्तियों से सर्व आत्माओं की पालना करना है।

आज के समय अनुसार सर्व आत्माओं को शक्तियों द्वारा पालना की आवश्यकता है। जानते हो आजकल आत्माओं में अशान्ति और दु:ख की लहर छाई हुई है। तो आप पूर्वज और पूज्य आत्माओं को अपने वंशावली के ऊपर रहम आता है? जैसे जब कोई विशेष अशान्ति का वायुमण्डल होता है तो विशेष रूप से मिलेट्री या पुलिस अलर्ट हो जाती है। ऐसे ही आजकल के वातावरण में आप पूर्वज भी विशेष सेवा के अर्थ स्वयं को निमित्त समझते हो! सारे विश्व की आत्माओं के निमित्त हैं, यह स्मृति रहती है? सारे विश्व की आत्माओं को आज आपके सकाश की आवश्यकता है। ऐसे बेहद के विश्व की पूर्वज आत्मा अपने को अनुभव करते हो? विश्व की सेवा याद आती है वा अपने सेन्टर्स की सेवा याद आती है? आज आत्मायें आप पूर्वज देव आत्माओं को पुकार रही हैं। हर एक अपने-अपने भिन्न-भिन्न देवियां वा देवताओं को पुकार रहे हैं - आओ, क्षमा करो, कृपा करो। तो भक्तों का आवाज सुनने आता है? आता है सुनने या नहीं? कोई भी धर्म की आत्मायें हैं, जब उनसे मिलते हो तो अपने को सर्व आत्माओं के पूर्वज समझकर मिलते हो? ऐसे अनुभव होता है कि यह भी हम पूर्वज की ही टाल-टालियां हैं! इन्हों को भी सकाश देने वाले आप पूर्वज हो। अपने कल्प वृक्ष का चित्र सामने लाओ, अपने को देखो आपका स्थान कहाँ है! जड़ में भी आप हो, तना भी आप हो। साथ में परमधाम में भी देखो आप पूर्वज आत्माओं का स्थान बाप के साथ समीप का है। जानते हो ना! इसी नशे से कोई भी आत्मा से मिलते हो तो हर धर्म की आत्मा आपको यह हमारे हैं, अपने हैं, उस दृष्टि से देखते हैं। अगर उस पूर्वज के नशे से, स्मृति से, वृत्ति से, दृष्टि से मिलते हो, तो उन्हों को भी अपनेपन का आभास होता है क्योंकि आप सर्व के पूर्वज हो, सबके हो। ऐसी स्मृति से सेवा करने से हर आत्मा अनुभव करेगी कि यह हमारे ही पूर्वज वा ईष्ट फिर से हमें मिल गये। फिर पूज्य भी देखो कितनी बड़ी पूजा है, कोई भी धर्मात्मा, महात्मा की ऐसी आप देवी-देवताओं के समान विधि-पूर्वक पूजा नहीं होती। पूज्य बनते हैं लेकिन तुम्हारे जैसी विधि-पूर्वक पूजा नहीं होती। गायन भी देखो कितना विधि-पूर्वक कीर्तन करते हैं, आरती करते हैं। ऐसे पूज्य आप पूर्वज ही बनते हो। तो अपने को ऐसे समझते हो? ऐसा नशा है? है नशा? जो समझते हैं हम पूर्वज आत्मायें हैं, यह नशा रहता है, यह स्मृति रहती है वह हाथ उठाओ। रहती है? अच्छा। रहती है वह तो हाथ उठाया? बहुत अच्छा। अभी दूसरा क्वेश्चन कौन सा होता है? सदा रहता है?

बापदादा सभी बच्चों को हर प्राप्ति में अविनाशी देखने चाहते हैं। कभी-कभी नहीं। क्यों? जवाब बहुत चतुराई से देते हैं, क्या कहते हैं? रहते तो हैं..., अच्छा रहते हैं। फिर धीरे से कहते हैं थोड़ा कभी-कभी हो जाता है। देखो बाप भी अविनाशी, आप आत्मायें भी अविनाशी हो ना! प्राप्तियां भी अविनाशी, ज्ञान अविनाशी द्वारा अविनाशी ज्ञान है। तो धारणा भी क्या होनी चाहिए? अविनाशी होनी चाहिए या कभी-कभी?

बापदादा अभी सभी बच्चों को समय के सरकमस्टांश अनुसार बेहद की सेवा में सदा बिजी देखने चाहते हैं क्योंकि सेवा में बिजी रहने के कारण अनेक प्रकार की हलचल से बच जाते हैं। लेकिन जब भी सेवा करते हो, प्लैन बनाते हो और प्लैन अनुसार प्रैक्टिकल में भी आते हो, सफलता भी प्राप्त करते हो। लेकिन बापदादा चाहते हैं कि एक समय पर तीनों सेवा इक्ट्ठी हो, सिर्फ वाचा नहीं हो, मन्सा भी हो, वाचा भी हो और कर्मणा अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हुए भी सेवा हो। सेवा का भाव, सेवा की भावना हो। इस समय वाचा के सेवा की परसेन्टेज़ ज्यादा है, मन्सा है लेकिन वाचा की परसेन्टेज़ ज्यादा है। एक ही समय पर तीनों सेवा साथ-साथ होने से सेवा में सफलता और ज्यादा होगी।

बापदादा ने समाचार सुना है कि इस ग्रुप में भी भिन्न-भिन्न वर्ग वाले आये हुए हैं और सेवा के प्लैन अच्छे बना रहे हैं। अच्छा कर रहे हैं, लेकिन तीनों सेवा इक्ट्ठी होने से सेवा की स्पीड और वृद्धि को प्राप्त होगी। सभी चारों ओर से बच्चे पहुंच गये हैं, यह देख बापदादा को भी खुशी होती है। नये-नये बच्चे उमंग-उत्साह से पहुंच जाते हैं।

अभी बापदादा सभी बच्चों को सदा निर्विघ्न स्वरूप में देखने चाहते हैं, क्यों? जब आप निमित्त बने हुए निर्विघ्न स्थिति में स्थित रहो तब विश्व की आत्माओं को सर्व समस्याओं से निर्विघ्न बना सको। इसके लिए विशेष दो बातों पर अण्डरलाइन करो। करते भी हो लेकिन और अण्डरलाइन करो। एक तो हर एक आत्मा को अपने आत्मिक दृष्टि से देखो। आत्मा के ओरीज्नल संस्कार के स्वरूप में देखो। चाहे कैसे भी संस्कार वाली आत्मा है लेकिन आपकी हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, परिवर्तन की श्रेष्ठ भावना, उनके संस्कार को थोड़े समय के लिए परिवर्तन कर सकती है। आत्मिक भाव इमर्ज करो। जैसे शुरू-शुरू में देखा तो संगठन में रहते आत्मिक दृष्टि, आत्मिक वृत्ति, आत्मा-आत्मा से मिल रही है, बात कर रही है, इस दृष्टि से फाउण्डेशन कितना पक्का हो गया। अभी सेवा के विस्तार में, सेवा के विस्तार के सम्बन्ध में आत्मिक भाव से चलना, बोलना, सम्पर्क में आना मर्ज हो गया है। खत्म नहीं हुआ है लेकिन मर्ज हो गया है। आत्मिक स्वमान, आत्मा को सहज सफलता दिलाता है क्योंकि आप सभी कौन आकर इक्ट्ठे हुए हो? वही कल्प पहले वाले देव आत्मायें, ब्राह्मण आत्मायें इक्ट्ठे हुए हो। ब्राह्मण आत्मा के रूप में भी सभी श्रेष्ठ आत्मायें हो, देव आत्माओं के हिसाब से भी श्रेष्ठ आत्मायें हो। उसी स्वरूप से सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ। हर समय चेक करो -

मुझ देव आत्मा, ब्राह्मण आत्मा का श्रेष्ठ कर्तव्य, श्रेष्ठ सेवा क्या है? **''दुआओं देना और दुआयें लेना।''** आपके जड़ चित्र क्या सेवा करते हैं? कैसी भी आत्मा हो लेकिन दुआयें लेने जाते, दुआयें लेकर आते। और कोई भी अगर पुरुषार्थ में मेहनत समझते हैं तो सबसे सहज पुरुषार्थ है, सारा दिन दृष्टि, वृत्ति, बोल, भावना सबसे दुआयें दो, दुआयें लो। आपका टाइटल है, वरदान ही है महा-दानी, सेवा करते, कार्य में सम्बन्ध-सम्पर्क में आते सिर्फ यही कार्य करो - दुआयें दो और दुआयें लो। यह मुश्किल है क्या? कि सहज है? जो समझते हैं सहज है, वह हाथ उठाओ। कोई आपका आपोजीशन करे तो? तो भी दुआ देंगे? देंगे? इतनी दुआओं का स्टॉक है आपके पास? आपोजीशन तो होगी क्योंकि आपोजीशन ही पोजीशन तक पहुंचाती है। देखो, सबसे ज्यादा आपोजीशन ब्रह्मा बाप की हुई। हुई ना? और पोजीशन किसने नम्बरवन पाई? ब्रह्मा ने पाई ना! कुछ भी हो लेकिन मुझे ब्रह्मा बाप समान दुआयें देनी हैं। क्या ब्रह्मा बाप के आगे व्यर्थ बोलने, व्यर्थ करने वाले नहीं थे? लेकिन ब्रह्मा बाप ने दुआयें दी, दुआयें ली, समाने की शक्ति रखी। बच्चा है, बदल जायेगा। ऐसे ही आप भी यही वृत्ति दृष्टि रखो - यह कल्प पहले वाले हमारे ही परिवार के, ब्राह्मण परिवार के हैं। मुझे बदल इसको भी बदलना है। यह बदले तो मैं बदलूं, नहीं। मुझे बदलके बदलना है, मेरी जिम्मेवारी है। तब दुआ निकलेगी और दुआ मिलेगी।

अभी समय जल्दी से परिवर्तन की ओर जा रहा है, अति में जा रहा है लेकिन **समय परिवर्तन के पहले आप विश्व परिवर्तक श्रेष्ठ आत्मायें स्व परिवर्तन द्वारा सर्व के परिवर्तन के आधारमूर्त बनो।** आप भी विश्व के आधारमूर्त, उद्धारमूर्त हो। हर एक आत्मा लक्ष्य रखो - मुझे निमित्त बनना है। सिर्फ तीन बातों का स्व में संकल्प मात्र भी न हो, यह परिवर्तन करो। एक - परचिन्तन। दूसरा - परदर्शन। स्वदर्शन के बजाए परदर्शन नहीं। तीसरा - परमत या परसंग, कुसंग। श्रेष्ठ संग करो क्योंकि संगदोष बहुत नुक-सान करता है। पहले भी बापदादा ने कहा था - एक पर-उपकारी बनो और यह तीन पर काट दो। पर दर्शन, पर चिंतन, परमत अर्थात् कुसंग, पर का फालतू संग। पर-उपकारी बनो तब ही दुआयें मिलेंगी और दुआयें देंगे। कोई कुछ भी दे लेकिन आप दुआयें दो। इतनी हिम्मत है? है हिम्मत? तो बापदादा चारों ओर के सर्व सेन्टर्स वाले बच्चों को कहते हैं - अगर आप सब बच्चों ने हिम्मत रखी, कोई कुछ भी दे लेकिन हमें दुआयें देनी हैं, तो बापदादा इस वर्ष एकस्ट्रा आपको हिम्मत के, उमंग के कारण मदद देंगे। एकस्ट्रा मदद देंगे। लेकिन दुआयें देंगे तो। मिक्स नहीं करना। बापदादा के पास तो सारा रिकार्ड आता है ना! संकल्प में भी दुआओं के बदले और कुछ न हो। हिम्मत है? है तो हाथ उठाओ। करना पड़ेगा। सिर्फ हाथ नहीं उठाना। करना पड़ेगा। करेंगे? मधुबन वाले, टीचर्स करेंगे? अच्छा, एक्स्ट्रा मार्क्स जमा करेंगे? मुबारक हो। क्यों? बापदादा के पास एडवांस पार्टी बार-बार आती है। वह कहती है कि हमें तो एडवांस पार्टी का पार्ट दिया, वह बजा रहे हैं लेकिन हमारे साथी एडवांस स्टेज क्यों नहीं बनाते? अभी उत्तर क्या दें? क्या उत्तर दें? एडवांस स्टेज और एडवांस पार्टी का पार्ट, जब दोनों मिलें तब तो समाप्ति होगी। तो वह पूछते हैं तो क्या जवाब दें? कितने साल में बनेंगी? सब मना लिया, सिल्वर जुबली, गोल्डन जुबली, डायमण्ड जुबली सब मना लिया। **अभी एड-वांस स्टेज सेरीमनी मनाओ।** उसकी डेट फिक्स करो। पाण्डव बताओ, डेट होगी उसकी? पहली लाइन वाले बोलो। डेट फिक्स होगी कि अचानक होगा? क्या होगा? अचानक होगा कि हो जायेगा? बोलो, कुछ बोलो। सोच रहे हैं क्या? निर्वैर से पूछ रहे हैं? सेरीमनी होगी या अचानक होगा? आप दादी से पूछ रहे हो? यह दादी को देख रहा है कि दादी कुछ बोले। आप बताओ, रमेश को कहते हैं बताओ? (आखिर तो यह होना ही है) आखिर भी कब? (आप डेट बताओ, उस डेट तक कर लेंगे) अच्छा - बापदादा ने एक साल की एक्स्ट्रा डेट दी है। हिम्मत से एक्स्ट्रा मदद मिलेगी। यह तो कर सकते हैं ना, यह करके दिखाओ फिर बाप डेट फिक्स करेगा। (आपका डायरेक्शन चाहिए तो इस 2004 को ऐसा मना लेंगे) मतलब यह है कि अभी इतनी तैयारी नहीं है। तो एडवांस पार्टी को अभी एक वर्ष तो रहना पड़ेगा ना। अच्छा। क्योंकि अभी से लक्ष्य रखेंगे - करना ही है, तो बहुतकाल एड हो जायेगा क्योंकि बहुतकाल का भी हिसाब है ना! अगर अन्त में करेंगे तो बहुतकाल का हिसाब ठीक नहीं होगा। इसलिए अभी से अटेन्शन प्लीज़। अच्छा - अभी सभी वर्ग वाले कहेंगे कि हमको भी सुनना है।

अच्छा जो भी वर्ग वाले आये हैं, जिन्होंने भी मीटिंग की है, सभी उठो। अच्छा। यह टीचर्स भी आये हैं। सभी इकट्ठे होकर बैठे हो बहुत अच्छा किया। ग्राम वाले हाथ उठाओ। यह ग्राम वाले आगे बैठे हैं। अच्छा मीडिया वाले हाथ उठाओ। अच्छा - हार्ट वालों ने अपने ऊपर टाइटल रखा है, दिल वाले। तो दिलवाला ग्रुप उठो। अच्छा यह दिल वाले हैं। टाइटल अच्छा रखा है ना! अच्छा इन्होंने प्लैन बहुत अच्छा बनाया है। बापदादा के पास समाचार पहुंचा है। बापदादा समझते हैं कि प्रैक्टिकल का अनुभव प्रभाव जल्दी डालता है इसलिए जो प्लैन बनाया है वो बापदादा को पसन्द है। अच्छा है इस सेवा को बढ़ाओ और इस द्वारा चारों ओर आवाज फैलाओ। हिम्मत अच्छी रखी है। संगठन बनाया है, यह बहुत अच्छा किया है। यह दिल वाले उनको बापदादा टाइटल देते हैं ''अनु-भव के अथॉरिटी वाले।'' अच्छा है।

अच्छा जो भी वर्ग आये हैं, सभी उठो। (मीडिया विंग, बिजनेस विंग, ट्रांसपोर्ट विंग, रूरल डेवलपमेन्ट विंग तथा कैड ग्रुप की मीटिंग चल रही है) मीटिंग्स तो बहुत अच्छी की है लेकिन बापदादा की एक बात अभी तक कोई भी वर्ग वाले ने नहीं की है। याद आता है

कौन सी? (गीता के भगवान को सिद्ध करने की) ये गीता वाली बात छोड़ो, वह तो बापदादा ने कहा भी है कि यह बात बहुत श्रेष्ठ है परन्तु यह बहुत सम्भाल कर करनी है। पहले एक ग्रुप ऐसा तैयार करो जो आपके साथी बनें। और वह माइक बनें और आप माइट बनो। पहले ऐसा कोई तैयार करो। जो भी वर्ग सेवा कर रहे हो, कर रहे हो उसकी मुबारक है। लेकिन हर एक वर्ग से कौन सी विशेष आत्मायें जो सेवा में आगे बढ़ सकें वह अभी तक बापदादा के सामने नहीं आयी हैं। चलो सामने नहीं आवें, लिस्ट तो आवे। अभी तक लिस्ट भी नहीं आई है। उन्हों का संगठन, हर एक वर्ग के निकले हुए संगठन में आवें। वह भी नहीं किया है। पहले लिस्ट निकालो अभी तक के वर्ग की सेवा से हमारी सेवा में सहयोगी साथी कौन-कौन बने हैं! तो बापदादा देखे कि आवाज कितने तक पहुंचा है। जैसे देखो मेडिकल दिल वालों ने प्रैक्टिकल एग्जैम्पुल दिखाया है और प्रैक्टिकल में आवाज फैल रहा है, गवर्मेन्ट भी मान रही है। ऐसे कोई तैयार करो। कर रहे हो बहुत अच्छा, करते चलो। रिजल्ट निकालो। सुना। जो भी वर्ग आये हैं उन्हों को ऐसा करना है। अच्छा।

सेवा का टर्न - ईस्टर्न, नेपाल, तामिलनाडु का है:- तीनों को चांस मिला है। अच्छा तीनों की टीचर्स खड़ी हो जाएं। टीचर्स तो बहुत हैं, इतने ही सेन्टर्स होंगे ना! जब टीचर्स की संख्या इतनी है तो सेन्टर्स की संख्या भी इतनी ही होगी ना। अच्छा है, सबसे बड़ा विस्तार का ज़ोन है आवाज फैलाने का, अगर तीनों जगह पर आवाज पहुंच जाए, तो कितनी सेवा आटोमेटकली सहज हो जायेगी। अभी बापदादा की यही सभी बच्चों को शुभ राय है वा श्रीमत है कि ऐसा ग्रुप तैयार करो जो यह आवाज फैलाये कि यही परमात्म कार्य है। ऐसा ग्रुप तैयार करो जो निर्भय होकर, निरसंकोच बाप को प्रत्यक्ष करे, दृढ़ता से बोले, अथॉरिटी से बोले। आजकल के जमाने में स्थूल अथॉरिटी भी काम में आती है। लौकिक अथॉरिटी और परमात्म अथॉरिटी दोनों अथॉरिटी वाले आवाज फैला सकते हैं। तो ऐसा ग्रुप तैयार करो। चाहे हर वर्ग अपने-अपने वर्ग से तैयार करे, चाहे कोई भी करे लेकिन अभी अथॉरिटी से बोलने वाले निकालो। जिनके आवाज का, अनुभव का, अथॉरिटी का प्रभाव पड़े। समझा क्या करना है?

चाहे छोटा ग्रुप लाओ लेकिन सभी के सामने तो आये। जो भी वर्ग वाले बैठे हो, वो सभी वर्ग वाले बोलें कि हमारे वर्ग में ऐसे कोई तैयार हैं? कोई ऐसा निकला है, वह हाथ उठाओ। जिस वर्ग में ऐसा कोई निकला है, तैयार है वह हाथ उठाओ। है कोई? कोई नहीं। अभी तैयार कर रहे हैं। बिजनेस वाली (योगिनी बहन) उठो। (दो भाईयों ने कुछ समाचार सुनाया) अच्छा।

अभी रूहानी ड्रिल याद है? एक सेकण्ड में अपने पूर्वज स्टेज में आए परमधाम निवासी बाप के साथ-साथ लाइट हाउस बन विश्व को लाइट दे सकते हो? तो एक सेकण्ड में सभी चारों ओर देश-विदेश में सुनने वाले, देखने वाले लाइट हाउस बन विश्व के चारों ओर सर्व आत्माओं को लाइट दो, सकाश दो, शक्तियां दो। अच्छा।

चारों ओर के विश्व के पूर्वज और पूज्य आत्माओं को, सदा दाता बन सर्व को दुआयें देने वाले महादानी आत्माओं को, सदा दृढ़ता द्वारा स्व-परिवर्तन से सर्व का परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक आत्माओं को, सदा लाइट हाउस बन सर्व आत्माओं को लाइट देने वाले समीप आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और दिल की दुआओं सहित नमस्ते।

मोहिनी बहन से - चांस लेने वाले चांसलर बन जाते हैं।

शान्तामणी दादी से -(तबियत ठीक नहीं है) हिसाब चुक्तू हो रहा है। (ग्रहचारी है) आप जैसे रत्न को ग्रहचारी नहीं हो सकती। शुरू से वरदानों से पली हो, इसलिए आगे बढ़ती रहेंगी। बढ़ रही हो। कोई बात नहीं है। कम नहीं होंगी, आगे जायेंगी। (दादी रतन-मोहिनी, मनोहर दादी, मोहिनी बहन, ईशू दादी, मुन्नी बहन सब बापदादा के सामने हैं) देखो आप सभी विशेष सहयोगी आत्मायें हो, बापदादा जब दोनों को (दादी जी, दादी जानकी जी को) याद भेजते हैं तो आप सभी साथ में जरूर होते हैं क्योंकि सहयोगी हो ना! हैं ना सहयोगी? आपका पार्ट इन्हों से ज्यादा सेवा का है। शुरू से लेके बेहद की सेवा के निमित्त आप लोग बने हो। इसलिए आप सभी के महत्व से इन्हों का भी महत्व है। सदा अपने को बाप के समीप रत्न समझो। समझते भी हो लेकिन और अति समीप हैं, सदा समीप रहेंगे, यह गैरेन्टी है। है ना गैरन्टी? अच्छा है, पार्ट अच्छा बजा रही हो। चाहे नाम विशेष आत्माओं का आता है लेकिन आप सब उसमें समाये हुए हैं। अलग कुछ नहीं कर सकते हैं। आपसे यज्ञ की शोभा है। इसलिए अपने को बहुत बड़े जिम्मेवार समझो। जिम्मेवारी है। बापदादा जिम्मेवार आत्माओं के रूप में देखते हैं। ठीक है ना! सब विशेष हैं, विशेषतायें भी हैं। उन विशेष-ताओं से सबको चलाओ और आगे बढ़ाओ। अच्छा।

दादी जी, दादी जानकी जी से:- अच्छा है, दोनों दादियां बहुत अच्छी पालना कर रहे हो। अच्छी पालना हो रही है ना! बहुत अच्छा। सेवा के निमित्त बनी हुई है ना! तो आप सबको भी दादियों को देखके खुशी होती है। खुशी होती है ना! जिम्मेवारी का सुख भी तो मिलता है ना! सबकी दुआयें कितनी मिलती हैं। सभी को खुशी होती है, (दोनों दादियाँ बापदादा को गले लगी) जैसे यह देखकर खुशी होती है वैसे इन्हों जैसे बनके कितनी खुशी होगी क्योंकि बापदादा ने निमित्त बनाया है तो कोई विशेषता है तब निमित्त बनाया है। और वही विशेषतायें आप हर एक में आ जाएं तो क्या हो जायेगा? अपना राज्य आ जायेगा। जो बापदादा डेट कहते हैं ना, वह आ जायेगी। अभी याद है ना डेट फिक्स करनी है। हर एक समझे मुझे करनी है। तो सभी निमित्त बन जायेंगे तो विश्व का

नव निर्माण हो ही जायेगा। **निमित्त भाव, यह गुणों की खान है।** सिर्फ हर समय निमित्त भाव आ जाए तो और सभी गुण सहज आ सकते हैं क्योंकि निमित्त भाव में मैं पन नहीं है और मैं पन ही हलचल में लाता है। निमित्त बनने से मेरा पन भी खत्म, तेरा, तेरा हो जाता है। सहजयोगी बन जाते हैं। तो सभी का दादियों से प्यार है, बापदादा से प्यार है, तो प्यार का रिटर्न है - विशेषताओं को समान बनाना। तो ऐसे लक्ष्य रखो। विशेषताओं को समान बनाना है। किसी में भी कोई विशेषता देखो, विशेषता को भले फालो करो। आत्मा को फालो करने में दोनों दिखाई देंगे। विशेषता को देखो और उसमें समान बनो। अच्छा।

17-02-2004

''शिवरात्रि जन्म उत्सव का विशेष स्लोगन - सर्व को सहयोग दो और सहयोगी बनाओ, सदा अखण्ड भण्डारा चलता रहे''

आज बापदादा स्वयं अपने साथ बच्चों का हीरे तुल्य जन्म दिन शिव जयन्ती मनाने आये हैं। आप सभी बच्चे अपने पारलौकिक, अलौकिक बाप का बर्थ डे मनाने आये हैं तो बाप फिर आपका मनाने आये हैं। बाप बच्चों के भाग्य को देख हर्षित होते हैं वाह मेरे श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चे वाह! जो बाप के साथ-साथ अवतरित हुए विश्व के अन्धकार को मिटाने के लिए। सारे कल्प में ऐसा बर्थ डे किसी का भी नहीं हो सकता, जो आप बच्चे परमात्म बाप के साथ मना रहे हो। इस अलौकिक अति न्यारे, अति प्यारे जन्म दिन को भक्त आत्मायें भी मनाती हैं लेकिन आप बच्चे मिलन मनाते हो और भक्त आत्मायें सिर्फ महिमा गाते रहते हैं। महिमा भी गाते, पुकारते भी, बापदादा भक्तों की महिमा और पुकार सुनकर उन्हें भी नम्बरवार भावना का फल देते ही हैं। लेकिन भक्त और बच्चे दोनों में महान अन्तर है। आपका किया हुआ श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ भाग्य का यादगार बहुत अच्छा मनाते हैं इसीलिए बापदादा भक्तों के भक्ति की लीला देख उन्हें भी मुबारक देते हैं क्योंकि यादगार सब अच्छी तरह से कॉपी की है। वह भी इसी दिन व्रत रखते हैं, वह व्रत रखते हैं थोड़े समय के लिए, अल्पकाल के खान-पान और शुद्धि के लिए। आप व्रत लेते हो सम्पूर्ण पवित्रता, जिसमें आहार-व्यवहार, वचन, कर्म, पूरे जन्म के लिए व्रत लेते हो। जब तक संगम की जीवन में जीना है तब तक मन-वचन-कर्म में पवित्र बनना ही है। न सिर्फ बनना है लेकिन बनाना भी है। तो देखो भक्तों की बुद्धि भी कम नहीं है, यादगार की कॉपी बहुत अच्छी की है। आप सभी सब व्यर्थ समर्पण कर समर्थ बने हो अर्थात् अपने अपवित्र जीवन को समर्पण किया, आपकी समर्पणता का यादगार वह बलि चढ़ाते हैं लेकिन स्वयं को बलि नहीं चढ़ाते, बकरे को बलि चढ़ा देते हैं। देखो कितनी अच्छी कॉपी की है, बकरे को क्यों बलि चढ़ाते हैं? इसकी भी कॉपी बहुत सुन्दर की है, बकरा क्या करता है? में-में-में करता है ना! और आपने क्या समर्पण किया? मैं, मैं, मैं। देह-भान का मैं-पन, क्योंकि इस मैं-पन में ही देह-अभिमान आता है। जो देह-अभिमान सभी विकारों का बीज है।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि सर्व समर्पित होने में यह देह भान का मैं-पन ही रूकावट डालता है। कॉमन मैं-पन, मैं देह हूँ, वा देह के सम्बन्ध का मैं-पन, देह के पदार्थों का समर्पण यह तो सहज है। यह तो कर लिया है ना? कि नहीं, यह भी नहीं हुआ है! जितना आगे बढ़ते हैं उतना मैं-पन भी अति सूक्ष्म महीन होता जाता है। यह मोटा मैं-पन तो खत्म होना सहज है। लेकिन महीन मैं-पन है - जो परमात्म जन्म सिद्ध अधिकार द्वारा विशेषतायें प्राप्त होती हैं, बुद्धि का वरदान, ज्ञान स्वरूप बनने का वरदान, सेवा का वरदान वा विशेषतायें, या प्रभु देन कहो, उसका अगर मैं-पन आता तो इसको कहा जाता है महीन मैं-पन। मैं जो करता, मैं जो कहता वही ठीक है, वही होना चाहिए, यह रॉयल मैं-पन उड़ती कला में जाने के लिए बोझ बन जाता है। तो बाप कहते इस मैं-पन का भी समर्पण, प्रभु देन में मैं-पन नहीं होता, न मैं न मेरा। प्रभु देन, प्रभु वरदान, प्रभु विशेषता है। तो आप सबकी समर्पणता कितनी महीन है। तो चेक किया है? साधारण मैं-पन वा रॉयल मैं-पन दोनों का समर्पण किया है? किया है या कर रहे हैं? करना तो पड़ेगा ही। आप लोग आपस में हंसी में कहते हो ना, मरना तो पड़ेगा ही। लेकिन यह मरना भगवान की गोदी में जीना है। यह मरना, मरना नहीं है। 21 जन्म देव आत्माओं के गोदी में जन्मना है। इसीलिए खुशी-खुशी से समर्पित होते हो ना! चिल्ला के तो नहीं होते? नहीं। भक्ति में भी चिल्लाया हुआ बलि स्वीकार नहीं होती है। तो जो खुशी से समर्पित होते हैं, हद के मैं और मेरे में, वह जन्म-जन्म वर्से के अधिकारी बन जाते हैं।

तो चेक करना - किसी भी व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ चलन के परिवर्तन करने में खुशी से परिवर्तन करते वा मजबूरी से? मुहब्बत में परिवर्तन होते या मेहनत से परिवर्तन होते? जब आप सभी बच्चों ने जन्म लेते ही अपने जीवन का आक्युपेशन यही बनाया है - विश्व परिवर्तन करने वाले, विश्व परिवर्तक। यह आप सबका, ब्राह्मण जन्म का आक्युपेशन है ना! है पक्का तो हाथ हिलाओ। झण्डे हिला रहे हैं, बहुत अच्छा। (सभी के हाथों में शिवबाबा की झण्डियां हैं जो सभी हिला रहे हैं) आज झण्डों का दिन है ना, बहुत अच्छा। लेकिन ऐसे ही झण्डा नहीं हिलाना। ऐसे झण्डा हिलाना तो बहुत सहज है, मन को हिलाना है। मन को परिवर्तन करना है। हिम्मत वाले हो ना। हिम्मत है? बहुत हिम्मत है, अच्छा।

बापदादा ने एक खुशखबरी की बात देखी, कौन सी, जानते हो? बापदादा ने इस वर्ष के लिए विशेष गिफ्ट दी थी कि ''**इस वर्ष**

अगर थोड़ी भी हिम्मत रखेंगे, किसी भी कार्य में, चाहे स्व-परिवर्तन में, चाहे कार्य में, चाहे विश्व सेवा में, अगर हिम्मत से किया तो इस वर्ष को वरदान मिला है एकस्ट्रा मदद मिलने का।'' तो बापदादा ने खुशी की खबर या नज़ारा क्या देखा! कि इस बारी की शिव जयन्ती की सेवा में चारों ओर बहुत-बहुत-बहुत अच्छी हिम्मत और उमंग-उत्साह से आगे बढ़ रहे हैं। (सभी ने ताली बजाई) हाँ ताली भले बजाओ। सदा ऐसे ताली बजायेंगे या शिवरात्रि पर? सदा बजाते रहना। अच्छा। चारों ओर से तो मधुबन में समाचार लिखते हैं और बापदादा तो वतन में ही देख लेते हैं। उमंग अच्छा है और प्लैन भी अच्छे बनाये हैं। ऐसे ही सेवा में उमंग और उत्साह विश्व की आत्माओं में उमंग-उत्साह बढ़ायेगा। देखो निमित्त दादी की कलम ने कमाल तो की है ना! अच्छी रिजल्ट है। इसलिए बापदादा अभी एक-एक सेन्टर का नाम तो नहीं लेंगे लेकिन विशेष सभी तरफ के सेवा की रिजल्ट की, बापदादा हर एक सेवाधारी बच्चे की विशेषता और नाम ले लेकर पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। देख भी रहे हैं, बच्चे अपने-अपने स्थान पर देख के खुश हो रहे हैं। विदेश में भी खुश हो रहे हैं क्योंकि आप सभी तो वही विश्व की आत्माओं के लिए इष्ट देवी और देवतायें हो ना। बापदादा जब बच्चों की सभा को देखते हैं तो तीन रूपों से देखते हैं:-

1- वर्तमान स्वराज्य अधिकारी, अभी भी राजे हो। लौकिक में भी बाप बच्चों को कहते हैं मेरे राजे बच्चे, राजा बच्चा। चाहे गरीब भी हो तो भी कहते हैं राजा बच्चा। लेकिन बाप वर्तमान संगम पर भी हर बच्चे को स्वराज्य अधिकारी राजा बच्चा देखते हैं। राजे हो ना! स्वराज्य अधिकारी। तो वर्तमान स्वराज्य अधिकारी। 2- भविष्य में विश्व राज्य अधिकारी और

3- द्वापर से कलियुग अन्त तक पूज्य, पूजन के अधिकारी – इन तीनों रूपों में हर बच्चे को बापदादा देखते हैं। साधारण नहीं देखते हैं। आप कैसे भी हो लेकिन बापदादा हर एक बच्चे को स्वराज्य अधिकारी राजा बच्चा देखते हैं। राजयोगी हो ना! कोई इसमें प्रजा योगी है क्या? प्रजायोगी है? नहीं। सब राजयोगी हैं। तो राजयोगी अर्थात् राजा। ऐसे स्वराज्य अधिकारी बच्चों का बर्थ डे मनाने स्वयं बाप आये हैं। देखो, आप डबल विदेशी तो विदेश से आये हो, बर्थ डे मनाने। हाथ उठाओ डबल विदेशी। तो ज्यादा में ज्यादा दूरदेश कौन सा है? अमेरिका या उससे भी दूर है? और बापदादा कहाँ से आया है? बापदादा तो परमधाम से आये हैं। तो बच्चों से प्यार है ना! तो जन्म दिन कितना श्रेष्ठ है, जो भगवान को भी आना पड़ता है। हाँ यह (बर्थ डे का एक बैनर सभी भाषाओं का बनाया हुआ दिखा रहे हैं) अच्छा बनाया है, सभी भाषाओं में लिखा है। बापदादा सभी देश के सभी भाषाओं वाले बच्चों को बर्थ डे की मुबारक दे रहे हैं।

देखो, बाप की शिव जयन्ती मनाते हैं लेकिन बाप है क्या? बिन्दी। बिन्दी की जयन्ती, अवतरण मना रहे हैं। सबसे हीरे तुल्य जयन्ती किसकी है? बिन्दू की, बिन्दी की। तो बिन्दी की कितनी महिमा है! इसीलिए बापदादा सदा कहते हैं कि तीन बिन्दू सदा याद रखो - आठ नम्बर, सात नम्बर तो फिर भी गड़बड़ से लिखना पड़ेगा लेकिन बिन्दू कितना इज़ी है। तीन बिन्दू - सदा याद रखो। तीनों को अच्छी तरह से जानते हो ना। आप भी बिन्दू, बाप भी बिन्दू, बिन्दू के बच्चे बिन्दू हो। और कर्म में जब आते हो तो इस सृष्टि मंच पर कर्म करने के लिए आये हो, यह सृष्टि मंच ड्रामा है। तो ड्रामा में जो भी कर्म किया, बीत गया, उसको फुलस्टाप लगाओ। तो फुलस्टाप भी क्या है? बिन्दू। इसलिए तीन बिन्दू सदा याद रखो। सारी कमाल देखो, आजकल की दुनिया में सबसे ज्यादा महत्व किसका है? पैसे का। पैसे का महत्व है ना! माँ बाप भी कुछ नहीं हैं, पैसा ही सब कुछ है। उसमें भी देखो अगर एक के आगे, एक बिन्दी लगा दो तो क्या बन जायेगा! दस बन जायेगा ना। दूसरी बिन्दी लगाओ, 100 हो जायेगा। तीसरी लगाओ- 1000 हो जायेगा। तो बिन्दी की कमाल है ना। पैसे में भी बिन्दी की कमाल है और श्रेष्ठ आत्मा बनने में भी बिन्दी की कमाल है। और करनकरावनहार भी बिन्दू है। तो सर्व तरफ किसका महत्व हुआ! बिन्दू का ना। बस बिन्दू याद रखो और विस्तार में नहीं जाओ, बिन्दू तो याद कर सकते। बिन्दू बनो, बिन्दू को याद करो और बिन्दू लगाओ, बस। यह है पुरुषार्थ। मेहनत है? या सहज है? जो समझते हैं सहज है वह हाथ उठाओ। सहज है तो बिन्दू लगाना पड़ेगा। जब कोई समस्या आती है तब बिन्दू लगाते हो या क्वेश्चन मार्क? क्वेश्चन मार्क नहीं लगाना, बिन्दू लगाना। क्वेश्चन मार्क कितना टेढ़ा होता है। देखो, लिखो क्वेश्चन मार्क, कितना टेढ़ा है और बिन्दू कितना सहज है। तो बिन्दू बनना आता है? आता है? सभी होशियार हैं।

बापदादा ने विशेष सेवाओं के उमंग-उत्साह की मुबारक तो दी, बहुत अच्छा कर रहे हैं, करते रहेंगे लेकिन आगे के लिए हर समय, हर दिन - वर्ल्ड सर्वेन्ट हूँ - यह याद रखना। आपको याद है - ब्रह्मा बाप साइन क्या करते थे? वर्ल्ड सर्वेन्ट। तो वर्ल्ड सर्वेन्ट हैं, तो सिर्फ शिवरात्रि की सेवा से वर्ल्ड की सेवा समाप्त नहीं होगी। लक्ष्य रखो कि मैं वर्ल्ड सर्वेन्ट हूँ, तो वर्ल्ड की सेवा हर श्वांस में, हर सेकण्ड में करनी है। जो भी आवे, जिससे भी सम्पर्क हो, उसको दाता बन कुछ न कुछ देना ही है। खाली हाथ कोई नहीं जावे। अखण्ड भण्डारा हर समय खुला रहे। कम से कम हर एक के प्रति शुभ भाव और शुभ भावना, यह अवश्य दो। शुभ भाव से देखो, सुनो, सम्बन्ध में आओ और शुभ भावना से उस आत्मा को सहयोग दो। अभी सर्व आत्माओं को आपके सहयोग की बहुत-बहुत आवश्यकता है। तो सहयोग दो और सहयोगी बनाओ। कोई न कोई सहयोग चाहे मन्सा का, चाहे बोल से कोई सहयोग दो, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से सहयोग दो, तो इस शिवरात्रि जन्म उत्सव का विशेष स्लोगन याद रखो - **''सहयोग दो और सहयोगी**

बनाओ''। कम से कम जो भी सम्पर्क-सम्बन्ध में आवे उसे सहयोग दो, सहयोगी बनाओ। कोई न कोई तो सम्बन्ध में आता ही है, उसकी और कोई खातिरी भल नहीं करो लेकिन हर एक को दिलखुश मिठाई जरूर खिलाओ। यह जो यहाँ भण्डारे में बनती है वह नहीं। दिल खुश कर दो। तो दिल खुश करना अर्थात् दिल खुश मिठाई खिलाना। खिलायेंगे! उसमें तो कोई मेहनत नहीं है। न टाइम एकस्ट्रा देना है, न मेहनत है। शुभ भावना से दिल खुश मिठाई खिलाओ। आप भी खुश, वह भी खुश और क्या चाहिए। तो खुश रहेंगे और खुशी देंगे, कभी भी आप सभी का चेहरा ज्यादा गम्भीर नहीं होना चाहिए। टूमच गम्भीर भी अच्छा नहीं लगता है। मुस्कराहट तो होनी चाहिए ना। गम्भीर बनना अच्छा है, लेकिन टूमच गम्भीर होते हैं ना, तो वह ऐसे होते हैं जैसे पता नहीं कहाँ गायब हैं। देख भी रहे हैं लेकिन गायब। बोल भी रहे हैं लेकिन गायब रूप में बोल रहे हैं। तो वह चेहरा अच्छा नहीं। चेहरा सदा मुस्कराता रहे। चेहरा सीरियस नहीं करना। क्या करें, कैसे करें तो सीरियस हो जाते हो। बहुत मेहनत है, बहुत काम है... सीरियस हो जाते हो लेकिन जितना बहुत काम उतना ज्यादा मुस्कराना। मुस्कराना आता है ना? आता है? आपके जड़ चित्र देखो कभी ऐसे सीरियस दिखाते हैं क्या! अगर सीरियस दिखावे तो कहते हैं आर्टिस्ट ठीक नहीं है। तो **अगर आप भी सीरियस रहते हो तो कहेंगे इसको जीने का आर्ट नहीं आता है।** इसलिए क्या करेंगे? टीचर्स क्या करेंगे? अच्छा बहुत टीचर्स हैं, टीचर्स मुबारक हो। सेवा की मुबारक हो।

अच्छा - बापदादा ने और भी आप पूज्य आत्माओं की खुशखबरी सुनी। आप पूज्य आत्माओं को आज 36 प्रकार का भोग लगना है। क्यों? आपके जड़ चित्रों को भोग लगाते हैं लेकिन आप तो खाते नहीं हो। इसलिए अभी चैतन्य में भोग लगा लो। अच्छा किया, बापदादा को खुशी है कि हर एक बच्चा 36 प्रकार का भोग तो स्वीकार करेगा। थैली दिखा रहे हैं। जो बाहर बैठे हैं विदेश में या अपने-अपने सेन्टर पर। तो वह यहाँ टी.वी. में जब थैला देखो ना, थैला बांटेंगे ना तो आप थैले के अन्दर से वासना ले लेना। बापदादा सब सेन्टर वाले चाहे देश वाले, चाहे विदेश वाले सभी को इन सभी बच्चों से पहले खिला रहे हैं। खा लो, खा लो। और ऐसे करना जिस भी सेन्टर की टीचर आई है, जहाँ तक भेज सको वहाँ तक भेजना, एक-एक थैली भेजना। ज्यादा नहीं भेजना। एक-एक थैली सैम्पल के मात्र भेज देना। तो जब भी आप भोग स्वीकार करो तो किस स्वरूप से स्वीकार करेंगे? अपना पूज्य स्वरूप इमर्ज करना और पूज्य बन भोग स्वीकार करना। अच्छी बात की है। दादी को मुबारक ज्यादा है। अच्छा।

एक सेकण्ड में अपना पूर्वज और पूज्य स्वरूप इमर्ज कर सकते हो? वही देवी और देवताओं के स्वरूप के स्मृति में अपने को देख सकते हो? कोई भी देवी या देवता। मैं पूर्वज हूँ, संगमयुग में पूर्वज हैं और द्वापर से पूज्य हैं। सतयुग, त्रेता में राज्य अधिकारी हैं। तो एक सेकण्ड में सभी और संकल्प समाप्त कर अपने पूर्वज और पूज्य स्वरूप में स्थित हो जाओ। अच्छा।

भोपाल ज़ोन की सेवा का टर्न है: अच्छा - भोपाल वाले उठो। झण्डी हिलाओ। सेवा का एकस्ट्रा फल और बल दोनों अनुभव किया? किया? क्योंकि यज्ञ सेवा का गोल्डन चांस कम भाग्य नहीं है। बहुत बड़ा भाग्य है। एकस्ट्रा बल, वायुमण्डल शक्तिशाली का बल मिलता है। और यज्ञ सेवा करने से जिन ब्राह्मण आत्माओं की सेवा करते हो उनकी दुआओं का फल मिलता है। तो यह चांस मिलना अर्थात् सेवा का एकस्ट्रा बल और फल खाना। तो सभी ने ऐसा अनुभव किया! किया? कितनी दुआयें जमा की? कितने जन्म यह दुआयें चलेंगी? वैसे तो सदा दुआओं के पात्र हो लेकिन यह दुआओं की भर-भर थालियां मिलती हैं। संगठन होता है ना। तो यह दुआयें अगर कायम रखेंगे तो आपके पुरुषार्थ में एक लिफ्ट की गिफ्ट हो जायेगी। अच्छा किया है। सबकी दुआयें खुशी बढ़ाती हैं। तो सदा इस दुआओं को साथ रखना। तो मुबारक हो। सेवा की मुबारक हो।

एज्युकेशन विंग की मीटिंग चल रही है:- एज्युकेशन वाले उठो। अच्छा - एज्युकेशन द्वारा हर एक आत्मा को मैं कौन हूँ, यह नॉलेज देने का कार्य कर भी रहे हो लेकिन अभी और भी सेवा रही हुई है। कम से कम यह तो नॉलेज सबको मिल जाए, मैं कौन हूँ और मेरा पिता कौन है। मैं कौन हूँ, यही नहीं जानते हैं, आश्चर्य की तो यही बात है। सारा समय मैं-मैं कहते लेकिन मैं कौन यह जानते नहीं। इसलिए एज्युकेशन वर्ग, अभी जगह-जगह पर जाकर यह पहला पाठ तो पक्का कराओ। बिचारे बेसमझ नहीं रह जायें, इतनी तो समझ मिले। तो रहमदिल आत्मायें हो ना। जैसे बाप कृपालु है, दयालु है तो आप भी मास्टर दयालु, कृपालु हो। तो इस समझ की कृपा करो। प्लैन बनाया है ना? नये-नये प्लैन बनाये! समय अनुसार सेवा की गति और फास्ट होगी क्योंकि समय बहुत फास्ट भाग रहा है। जैसे समय फास्ट भाग रहा है तो सेवा भी फास्ट होनी ही है। अच्छा है, वर्ग-वर्ग अलग होने से विश्व की आलराउण्ड आत्माओं के सेवा की तरफ अटेन्शन जाता है। तो बापदादा को वर्गीकरण की सेवा अच्छी लगती है। बहुत अच्छा, आये मिलन भी मनाया, मीटिंग भी की और प्रैक्टिकल तो करेंगे ही। मुबारक हो। अच्छा।

चारों ओर के कार्ड और पत्र बापदादा के पास बहुत पहुंच गये हैं। आप सबके कार्ड सभी ब्राह्मण आत्मायें भी देखकर खुश हो रही हैं। तो जिन्होंने भी कार्ड और पत्र भेजे हैं, उन सभी सिकीलधे, लाडले बच्चों को बाप के जन्म दिन और आप बच्चों के जन्म दिन की विशेष सम्मुख वालों से भी पहले आप सबको मुबारक हो। बहुत दिल से भेजते हैं तो दिल की बात तो दिलाराम जाने। अच्छा। कई इन्डिया के सेन्टर्स के सेवा के उमंग-उत्साह के और बापदादा को विशेष याद के पत्र, सन्देश, फोन आये हैं। बापदादा नाम

कितनों का लेवे, लेकिन जिन्होंने भी अपने उमंग-उत्साह का समाचार दिया है, उन सभी को भी बापदादा सम्मुख दृष्टि में इमर्ज कर उमंग-उत्साह का रिटर्न बहुत-बहुत दिल की यादप्यार दे रहे हैं। सेवा में सदा ही ऐसे उमंग-उत्साह में उड़ते रहो। अच्छा।

चारों ओर के अलौकिक दिव्य अवतरण वाले बच्चों को बाप के जन्म दिन और बच्चों के जन्म दिन की दुआयें और यादप्यार, दिलाराम बाप की दिल में राइट हैण्ड सेवाधारी बच्चे सदा समाये हुए हैं। तो ऐसे दिल तख्तनशीन श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बिन्दी के महत्व को जानने वाले श्रेष्ठ बिन्दी स्वरूप बच्चों को, सदा अपने स्वमान में स्थित रह सर्व को रूहानी सम्मान देने वाले स्वमानधारी आत्माओं को, सदा दाता के बच्चे मास्टर दाता बन हर एक को अपने अखण्ड भण्डार से कुछ न कुछ देने वाले मास्टर दाता बच्चों को बापदादा की बहुत-बहुत पदमगुणा, कोहिनूर हीरे से भी ज्यादा प्रभु नूर बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

–

सभी दादियों से, दादी जानकी से:- चक्रवर्ती के संस्कार ज्यादा हैं। चक्रवर्ती बनके चक्कर लगाना अच्छा लगता है। (बाबा को सब देखें ना) देखना ही है। सिर्फ बच्चे थोड़े से एवररेडी हो जायें ना। एवरी टाइम एवररेडी, तो ठका हो जायेगा। देखेंगे, बोलेंगे भी। अहो प्रभू भी तो बोलेंगे। लेकिन खुशी से नहीं, पश्चाताप के रूप में। लेकिन बोलेंगे जरूर। सभी ठीक हैं, बहुत मजे में! बस देखो, आपके संगठन को देख सभी कितने खुश होते हैं। आप कुछ कहो, करो नहीं तो भी खुशी देते हो। पिल्लर्स हैं ना। सभी देखो कितने पक्के पिल्लर्स हैं। पिल्लर्स के मजबूती से आगे भी मजबूत होके चल रहे हैं। थोड़ा हिलते भी हैं तो पिल्लर्स उनका आधार बन जाता है। अच्छा।

हैदराबाद के भ्राता के.एस. राजू जी से:- अभी जल्दी-जल्दी आया करो तो सब काम ठीक हो जायेगा। अभी काम के पीछे नहीं पड़ो, काम आपके पीछे पड़े। अभी जल्दी-जल्दी आना। इतना समय नहीं लगाना। काम सब सहज हो जायेगा। (जो आज्ञा) आते रहेंगे शक्ति लेते रहेंगे तो कर्म में योग काम में आयेगा। ठीक है ना। कर्मयोगी। ज्यादा पीछे पड़ने से ठीक नहीं होता। जैसे परछाई होती है ना उसके पीछे पड़ो तो आगे-आगे जाती है, और आगे चलो तो पीछे-पीछे आती है, ऐसे यह है।

कर्नाटक हाई कोर्ट के जज से:- यहाँ जो कार्य चल रहा है विश्व परिवर्तन का, उसमें आप भी सहयोगी आत्मा हो। आपका भी कार्य अच्छा है। आत्माओं को समझ मिलती है। परिवर्तन सब चाहते हैं। तो यहाँ परिवर्तन की धुन लगी हुई है। उसमें आप भी बहुत अच्छे सहयोगी हैं और सहयोगी से योगी रहेंगे। सिर्फ सहयोगी नहीं रहना, योगी सहयोगी दोनों रहना। कर्मयोगी बनना। कर्म को नहीं छोड़ना है, कर्म और योग का बैलेन्स हो। जितना बैलेन्स रखेंगे उतनी ब्लैसिंग मिलेगी और मेहनत कम प्राप्ति ज्यादा होगी। (युगल से) यह भी साथ में है।

विदेश की बड़ी बहिनों से:- अभी तो विदेशियों को विशेष टर्न मिलना है। लाडले हैं ना। बापदादा खुश होते हैं। कोने-कोने में रही हुई आत्मायें वंचित न रह जाएं, यह सेवा उमंग-उत्साह से आप कर रहे हो और रिजल्ट अच्छे ते अच्छी निकल रही है। कोई उल्हना नहीं रहेगा। तो बापदादा खुश हैं। (अभी कुछ देश रहे हैं, वहाँ भी अक्टूबर तक सन्देश देने का प्लैन बना रहे हैं) होना ही है, अपने ही भाई-बहन हैं, तो मर्सीफुल तो बनना ही है। सन्देश तो मिल जाए फिर उन्हों का भाग्य।

प्यारे बापदादा ने अपने हस्तों से स्टेज पर झण्डा फहराया तथा सभी बच्चों को 68 वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती की मुबारक दी:-

आप सबके दिलों में तो बाप की याद का झण्डा लहराता ही रहता है। यह झण्डा तो यादगार के रूप में मनाते हैं। लेकिन आपके दिल में बाप के प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा रहा है। हर एक की दिल सदा क्या कहती! हर श्वांस क्या गाता? मेरा बाबा। और बाप-दादा भी हर सेकण्ड क्या गाता? मेरे मीठे-मीठे बच्चे। अभी वह दिन समीप लाना है जो हर एक आत्मा के दिल में बाप के प्रत्यक्षता का झण्डा लहराये। हर दिल कहे मेरा बाबा। जो पाना था वह पा लिया, इस गीत पर डांस करें। वह दिन भी दूर नहीं है। वाह! बाबा वाह! वाह! बाप के सिकीलधे बच्चे वाह! यह खूब नारा लगेगा। तो आज बापदादा सिर्फ यह झण्डा नहीं देख रहे हैं लेकिन हर एक बच्चे के दिल में जो बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा रहा है वह देख रहे हैं। आपके दिल में लहर गया है। अभी लहराना नहीं है, लहर रहा है। एक ही बाप संसार है, संसार बना दिया। ऐसे है ना। और कोई संसार है क्या! बाप ही संसार है। बाप के संस्कार ही मेरे संस्कार हैं। संसार भी है, संस्कार भी हैं। हैं ना? बहुत-बहुत सभी देश-विदेश के बच्चों को बाप के बर्थ डे का झण्डा लहराने की मुबारक हो, मुबारक हो।

——

05-03-2004

''कमजोर संस्कारों का संस्कार कर सच्ची होली मनाओ तब संसार परिवर्तन होगा''

आज बापदादा अपने चारों ओर के राज दुलारे बच्चों को देख रहे हैं। यह परमात्म दुलार आप कोटों में कोई श्रेष्ठ आत्माओं को ही प्राप्त है। हर एक बच्चे के तीन राज तख्त देख रहे हैं। यह तीन तख्त सारे कल्प में इस संगम पर ही आप बच्चों को प्राप्त होते हैं।

दिखाई दे रहे हैं तीन तख्त? एक तो यह भ्रकुटी रूपी तख्त, जिस पर आत्मा चमक रही है। दूसरा तख्त है - परमात्म दिल तख्त। दिल तख्त नशीन हो ना! और तीसरा है - भविष्य विश्व तख्त। सबसे भाग्यवान बने हो दिल तख्तनशीन बनने से। यह परमात्म दिल तख्त आप तकदीरवान बच्चों को ही प्राप्त है। भविष्य विश्व का राज्य तख्त तो प्राप्त होना ही है। लेकिन अधिकारी कौन बनता? जो इस समय स्वराज्य अधिकारी बनता है। स्वराज्य नहीं तो विश्व का राज्य भी नहीं क्योंकि इस समय के स्व राज्य अधिकार द्वारा ही विश्व राज्य प्राप्त होता है। विश्व के राज्य के सर्व संस्कार इस समय बनते हैं। तो हर एक अपने को सदा स्वराज्य अधिकारी अनुभव करते हो? जो भविष्य राज्य का गायन है - जानते हो ना! एक धर्म, एक राज्य, लॉ एण्ड ऑर्डर, सुख-शान्ति, सम्पत्ति से भरपूर राज्य, याद आता है - कितने बार यह स्वराज्य और विश्व राज्य किया है? याद है कितने बार किया है? क्लीयर याद आता है? कि याद करने से याद आता है? कल राज्य किया था और कल राज्य करना है - ऐसे स्पष्ट स्मृति है? यह स्पष्ट स्मृति उस आत्मा को होगी जो अभी सदा स्वराज्य अधिकारी होगा। तो स्वराज्य अधिकारी हो? सदा हो या कभी-कभी? क्या कहेंगे? सदा स्वराज्य अधिकारी हो? डबल फारेनर्स का टर्न है ना। तो स्वराज्य अधिकारी सदा हो? पाण्डव सदा हैं? सदा शब्द पूछ रहे हैं? क्यों? जब इस एक जन्म में, छोटा सा तो जन्म है, तो इस छोटे से जन्म में अगर सदा स्वराज्य अधिकारी नहीं हैं तो 21 जन्म का सदा स्वराज्य कैसे प्राप्त होगा! 21 जन्म का राज्य अधिकारी बनना है कि कभी-कभी बनना है? क्या मंजूर है? सदा बनना है? सदा? कांध तो हिलाओ। अच्छा, 21 जन्म ही राज्य अधिकारी बनना है? राज्य अधिकारी अर्थात् रॉयल फैमिली में भी राज्य अधिकारी। तख्त पर तो थोड़े बैठेंगे ना, लेकिन वहाँ जितना तख्त अधिकारी को स्वमान है, उतना ही रॉयल फैमिली को भी है। उन्हों को भी राज्य अधिकारी कहेंगे। लेकिन हिसाब अभी के कनेक्शन से है। अभी कभी-कभी तो वहाँ भी कभी-कभी। अभी सदा तो वहाँ भी सदा। तो बापदादा से सम्पूर्ण अधिकार लेना अर्थात् वर्तमान और भविष्य का पूरा-पूरा 21 जन्म राज्य अधिकारी बनना। तो डबल फारेनर्स पूरा अधिकार लेने वाले हो या आधा या थोड़ा? क्या? पूरा अधिकार लेना है? पूरा। एक जन्म भी कम नहीं। तो क्या करना पड़ेगा?

बापदादा तो हर एक बच्चे को सम्पूर्ण अधिकारी बनाते हैं। बने हैं ना? पक्का? कि बनेंगे या नहीं बनेंगे क्वेश्चन है? कभी-कभी क्वेश्चन उठता है - पता नहीं बनेंगे, नहीं बनेंगे? बनना ही है। पक्का? जिसको बनना ही है वह हाथ उठाओ। बनना ही है? अच्छा, यह सब किस माला के मणके बनेंगे? 108 के? यहाँ तो कितने आये हुए हैं? सभी 108 में आने हैं? तो यह तो 1800 हैं। तो 108 की माला को बढ़ायेंगे? अच्छा। 16 हजार तो अच्छा नहीं लगता। 16 हजार में जायेंगे क्या? नहीं जायेंगे ना! यह निश्चय और निश्चित है, ऐसा अनुभव हो। हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा। है नशा? आप नहीं बनेंगे तो और कोई नहीं बनेगा ना। आप ही बनने वाले हो ना! बोलो, आप ही हो ना! पाण्डव आप ही बनने वाले हो? अच्छा। अपना दर्पण में साक्षात्कार किया है? बापदादा तो हर बच्चे का निश्चय देख बलिहार जाते हैं। वाह! वाह! हर एक बच्चा वाह! वाह वाह वाले हो ना! वाह! वाह! कि व्हाई। व्हाई तो नहीं? कभी-कभी व्हाई हो जाता? या तो है व्हाई और हाय और तीसरा क्राय। तो आप तो वाह! वाह! वाले हो ना!

बापदादा को डबल फारेनर्स के ऊपर विशेष फखुर है। क्यों? भारतवासियों ने तो बाप को भारत में बुला लिया। लेकिन डबल फारेनर्स के ऊपर फखुर इसलिए है कि डबल फारेनर्स ने बापदादा को अपने सच्चाई के प्यार के बंधन में बांधा है। मैजारिटी सच्चाई वाले हैं। कोई-कोई छिपाते भी हैं लेकिन मैजारिटी अपनी कमजोरी सच्चाई से बाप के आगे रखते हैं। तो बाप को सबसे बढ़िया चीज़ लगती है - सच्चाई। इसलिए भक्ति में भी कहते हैं गाड इज ट्रुथ। सबसे प्यारी चीज़ सच्चाई है क्योंकि जिसमें सच्चाई होती है उसमें सफाई रहती है। क्लीन और क्लीयर रहता है। इसलिए बापदादा को डबल फारेनर्स के सच्चाई की प्रेम की रस्सी खींचती है। थोड़ा बहुत मिक्स तो होता है, कोई-कोई। लेकिन डबल फारेनर्स अपनी यह सच्चाई की विशेषता कभी नहीं छोड़ना। सत्यता की शक्ति एक लिफ्ट का काम करती है। सबको सच्चाई अच्छी लगती है ना! पाण्डव अच्छी लगती है? ऐसे तो मधुबन वालों को भी अच्छी लगती है। सभी चारों ओर के मधुबन वाले हाथ उठाओ। दादी कहती है ना भुजायें हैं। तो मधुबन, शान्तिवन सब हाथ उठाओ। बड़ा हाथ उठाओ। मधुबन वालों को सच्चाई अच्छी लगती है? जिसमें सच्चाई होगी ना, उसको बाप को याद करना बहुत सहज होगा। क्यों? बाप भी सत्य है ना! तो सत्य बाप की याद जो सत्य है उसको जल्दी आती है। मेहनत नहीं करनी पड़ती है। अगर अभी भी याद में मेहनत लगती है तो समझो कोई न कोई सूक्ष्म संकल्प मात्र, स्वप्न मात्र कोई सच्चाई कम है। जहाँ सच्चाई है वहाँ संकल्प किया बाबा, हज़ूर हाज़िर है। इसलिए बापदादा को सच्चाई बहुत प्रिय है।

तो बापदादा सभी बच्चों को यही इशारा देते हैं - कि पूरा वर्सा 21 ही जन्मों का लेना है तो अभी स्वराज्य को चेक करो। अब का स्वराज्य अधिकारी बनना, जितना जैसा बनेंगे उतना ही अधिकार प्राप्त होगा। तो चेक करो - जैसे गायन है एक राज्य...., एक ही राज्य होगा, दो नहीं। तो वर्तमान स्वराज्य की स्थिति में सदा एक राज्य है? स्वराज्य है वा कभी-कभी पर-राज्य भी हो जाता है? कभी माया का राज्य अगर है तो पर-राज्य कहेंगे या स्वराज्य कहेंगे? तो सदा एक राज्य है, पर-अधीन तो नहीं हो जाते? कभी माया का, कभी स्व का? इससे समझो कि सम्पूर्ण वर्सा अभी प्राप्त हो रहा है, हुआ नहीं है, हो रहा है। तो चेक करो सदा एक राज्य

है? एक धर्म - धर्म अर्थात् धारणा। तो विशेष धारणा कौन सी है? पवित्रता की। तो एक धर्म है अर्थात् संकल्प, स्वप्न में भी पवित्रता है? संकल्प में भी, स्वप्न में भी अगर अपवित्रता की परछाई है तो क्या कहेंगे? एक धर्म है? पवित्रता सम्पूर्ण है? तो चेक करो, क्यों? समय फास्ट जा रहा है। तो समय फास्ट जा रहा है और स्वयं अगर स्लो है तो समय पर मंजिल पर तो नहीं पहुंच सकेंगे ना! इसलिए बार-बार चेक करो। एक राज्य है? एक धर्म है? लॉ और आर्डर है? कि माया अपना आर्डर चलाती है? परमात्म बच्चे श्रीमत के लॉ और आर्डर पर चलने वाले। माया के लॉ एण्ड आर्डर पर नहीं। तो चेक करो - सभी भविष्य के संस्कार अभी दिखाई दें क्योंकि संस्कार अभी भरने हैं। वहाँ नहीं भरने हैं, यहाँ ही भरने हैं। सुख है? शान्ति है? सम्पत्तिवान हैं? सुख अभी साधनों के आधार पर तो नहीं है? अतीन्द्रिय सुख है? साधन, इन्द्रियों का आधार है। अतीन्द्रिय सुख साधनों के आधार पर नहीं है। अखण्ड शान्ति है? खण्डित तो नहीं होती है? क्योंकि सतयुग के राज्य की महिमा क्या है? अखण्ड शान्ति, अटल शान्ति। सम्पन्नता है? सम्पत्ति से क्या होता है? सम्पन्नता होती है। सर्व सम्पत्ति है? गुण, शक्तियां, ज्ञान यह सम्पत्ति है। उसकी निशानी क्या होगी? अगर मैं सम्पत्ति में सम्पन्न हूँ - तो उसकी निशानी क्या? सन्तुष्टता। **सर्व प्राप्ति का आधार है सन्तुष्टता, असन्तुष्टता अप्राप्ति का साधन है।** तो चेक करो - एक भी विशेषता की कमी नहीं होनी चाहिए। तो इतना चेक करते हो? सारा संसार आप अभी के संस्कार द्वारा बनाने वाले हो। अभी के संस्कार अनुसार भविष्य का संसार बनेगा। तो आप सभी क्या कहते हो? कौन हो आप? विश्व परिवर्तक हो ना! विश्व परिवर्तक हो? तो विश्व परिवर्तक के पहले स्व-परिवर्तक। तो यह सब संस्कार अपने में चेक करो। इससे समझ जाओ कि मैं 108 की माला में हूँ या आगे पीछे हूँ? यह चेकिंग एक दर्पण है, इस दर्पण में अपने वर्तमान और भविष्य को देखो। देख सकते हो?

अभी तो होली मनाने आये हो ना! होली मनाये आये हो, अच्छा। होली के अर्थ को वर्णन किया है ना! तो बापदादा आज विशेष डबल फारेनर्स को कहते हैं, मधुबन वाले साथ में हैं, यह बहुत अच्छा है। मधुबन वालों को भी साथ में कह रहे हैं। जो भी आये हैं, चाहे बॉम्बे से आये हैं, चाहे दिल्ली से आये हो, लेकिन इस समय तो मधुबन निवासी हो। डबल फारेनर्स भी इस समय कहाँ के हो? मधुबन निवासी हो ना! मधुबन निवासी बनना अच्छा है ना! तो सभी बच्चों को चाहे यहाँ सामने बैठे हैं, चाहे अपने अपने चारों तरफ के स्थानों पर बैठे हैं, बापदादा एक परिवर्तन चाहते हैं - अगर हिम्मत हो तो बापदादा बतावे। हिम्मत है? हिम्मत है? हिम्मत है? करना पड़ेगा। ऐसे नहीं हाथ उठा लिया तो हो गया, ऐसा नहीं। हाथ उठाना तो बहुत अच्छा है लेकिन मन का हाथ उठाना। आज सिर्फ यह हाथ नहीं उठाना, मन का हाथ उठाना।

डबल फारेनर्स नजदीक बैठे हैं ना, तो नजदीक वालों को दिल की बातें सुनाई जाती हैं। मैजारिटी देखने में आता है, कि सभी का बापदादा से, सेवा से बहुत अच्छा प्यार है। बाप के प्यार के बिना भी नहीं रह सकते और सेवा के बिना भी नहीं रह सकते हैं। यह मैजारिटी का सर्टीफिकेट ठीक है। बापदादा चारो ओर देखते हैं लेकिन...., लेकिन आ गया। मैजारिटी का यही आवाज आता है कि कोई न कोई ऐसा संस्कार, पुराना जो चाहते नहीं हैं लेकिन वह पुराना संस्कार अभी तक भी आकर्षित कर लेता है। तो जब होली मनाने आये हो तो होली का अर्थ है - बीती सो बीती। हो ली, हो गई। तो कोई भी जरा भी कोई संस्कार 5 परसेन्ट भी हो, 10 परसेन्ट हो, 50 परसेन्ट भी हो, कुछ भी हो। कम से कम 5 परसेन्ट भी हो तो आज संस्कार की होली जलाओ। जो संस्कार समझते हैं सभी कि थोड़ा सा यह संस्कार मुझे बीच-बीच में डिस्टर्ब करता है। हर एक समझता है। समझते हैं ना? तो होली एक जलाई जाती है, दूसरी रंगी जाती है। दो प्रकार की होली होती है और होली का अर्थ भी है, बीती सो बीती। तो बापदादा चाहते हैं - कि जो भी कोई ऐसा संस्कार रहा हुआ है, जिसके कारण संसार परिवर्तन नहीं हो रहा है, तो आज उस कमजोर संस्कार को जलाना अर्थात् संस्कार कर देना। जलाने को भी संस्कार कहते हैं ना। जब मनुष्य मरता है तो कहते हैं संस्कार करना है अर्थात् सदा के लिए खत्म करना है। तो क्या आज संस्कार का भी संस्कार कर सकते हैं? आप कहेंगे कि हम तो नहीं चाहते कि संस्कार आवें, लेकिन आ जाता है, क्या करें? ऐसे सोचते हो? अच्छा। आ जाता है, गलती से। अगर किसको दी हुई चीज़, गलती से आपके पास आ जाए तो क्या करते हो? सम्भाल के अलमारी में रख देते हो? रख देंगे? तो अगर आ भी जाये तो दिल में नहीं रखना क्योंकि दिल में बाप बैठा है ना! तो बाप के साथ अगर वह संस्कार भी रखेंगे, तो अच्छा लगेगा? नहीं लगेगा ना! इसलिए अगर गलती से आ भी जाये, तो दिल से कहना बाबा, बाबा, बाबा, बस। खत्म। बिन्दी लग जायेगी। बाबा क्या है? बिन्दी। तो बिन्दी लग जायेगी। दिल से कहेंगे तो। बाकी ऐसे ही मतलब से याद करेंगे - बाबा ले लो ना, ले लो ना, रखते हैं अपने पास और कहते हैं ले लो ना, ले लो ना। तो कैसे लेंगे? आपकी चीज़ कैसे लेंगे? पहले आप अपनी चीज़ नहीं समझो तब लेंगे। ऐसे थोड़ेही दूसरे की चीज़ ले लेंगे। तो क्या करेंगे? होली मनायेंगे? हो ली, हो ली। अच्छा, जो समझते हैं कि दृढ़ संकल्प कर रहे हैं, वह हाथ उठाओ। आप घड़ी-घड़ी निकाल देंगे ना, तो निकल जायेगी। अन्दर रख नहीं दो, क्या करें, कैसे करें, निकलता नहीं है। यह नहीं, निकालना ही है। तो दृढ़ संकल्प करेंगे? जो करेगा वह मन से हाथ उठाना, बाहर से नहीं उठाना। मन से। (कोई-कोई नहीं उठा रहे हैं) यह नहीं उठा रहे हैं। (सभी ने उठाया) बहुत अच्छा, मुबारक हो, मुबारक हो। क्या है कि एक तरफ एडवांस पार्टी बापदादा को बार-बार

कहती है - कब तक, कब तक, कब तक? दूसरा - प्रकृति भी बाप को अर्जी करती है, अभी परिवर्तन करो। ब्रह्मा बाप भी कहते हैं कि अब कब परमधाम का दरवाजा खोलेंगे? साथ में चलना है ना, रह तो नहीं जाना है ना! साथ चलेंगे ना! साथ में गेट खोलेंगे! चाहे चाबी ब्रह्मा बाबा लगायेगा, लेकिन साथ तो होंगे ना! तो अभी यह परिवर्तन करो। बस, लाना ही नहीं है। मेरी चीज़ ही नहीं है, दूसरे की, रावण की चीज़ क्यों रखी है! दूसरे की चीज़ रखी जाती है क्या? तो यह किसकी है? रावण की है ना! उसकी चीज़ आपने क्यों रखी है? रखनी है? नहीं रखनी है ना, पक्का? अच्छा। तो रंग की होली भले मनाना लेकिन पहले यह होली मनाना। आप देखते हो, आपका गायन है – मर्सीफुल। आप मर्सीफुल देवियां और देवतायें हो ना! तो रहम नहीं आता है? अपने भाई-बहिनें इतने दु:खी हैं, उन्हों का दु:ख देख करके रहम नहीं आता? आता है रहम? तो संस्कार बदलो, तो संसार बदल जायेगा। जब तक संस्कार नहीं बदले हैं, तब तक संसार नहीं बदल सकता। तो क्या करेंगे?

आज खुशखबरी सुनी थी कि सबको दृष्टि लेनी है। अच्छी बात है। बापदादा तो बच्चों के आज्ञाकारी हैं लेकिन... लेकिन सुनकर हंसते हैं। भले हंसो। दृष्टि के लिए कहते हैं - दृष्टि से सृष्टि बदलती है। तो आज की दृष्टि से सृष्टि परिवर्तन करना ही है, क्योंकि सम्पन्नता वा जो भी प्राप्तियां हुई हैं, उसका बहुत समय से अभ्यास चाहिए। ऐसे नहीं समय पर हो जायेगा, नहीं। बहुत समय का राज्य भाग्य लेना है, तो सम्पन्नता भी बहुत समय से चाहिए। तो ठीक है? डबल फारेनर्स खुश हैं? अच्छा।

इस बारी शान्तिवन के बेहद घर में रहे हो ना! देखो हर स्थान का अपना-अपना लाभ है। ऊपर का लाभ अपना है और शान्तिवन का लाभ अपना है। यहाँ परिवार के समीप हैं, दादियों के समीप हैं, और वहाँ बापदादा की कर्मभूमि के समीप होते हैं। लेकिन अच्छा लगता है या नहीं? थोड़ा-थोड़ा याद आता है? बापदादा को तो यही खुशी है कि डबल फारेनर्स की एक ही समय की संख्या बढ़ रही है। संख्या के कारण ऊपर नहीं रह सके ना। तो संख्या बढ़ना तो खुशी की बात है ना! और एक ही समय पर आपस में एक साथ रहना, यह भी तो अनुभव है ना! और मधुबन वालों को डबल फारेनर्स को थैंक्स देना चाहिए कि डबल फारेनर्स ने अपने टाइम पर विशेष मधुबन निवासियों को चांस दिया है। मधुबन वाले ताली बजाओ। देखो, मधुबन वाले कितने खुश हो रहे हैं। नहीं तो मधुबन वालों को पूरी सीजन में चांस कहाँ मिला है और डबल फारेनर्स ने चांस दिया, तो बापदादा भी थैंक्स देते हैं। अच्छा।

डबल फारेनर्स के सेवा के प्रोग्राम्स भी सुने हैं। अच्छे प्रोग्राम्स बनाये हैं। जिन्होंने भी सेवाओं के सन्देश भेजे हैं वह बापदादा ने सुने हैं और अच्छा है क्योंकि फारेन में अगर बड़े-बड़े प्रोग्राम्स करेंगे तो फारेन का आवाज अभी मीडिया द्वारा भारत में पहुंच सकता है क्योंकि अभी भारत वालों ने ट्रायल की है ना, कि भारत का आवाज मीडिया द्वारा फारेन में पहुंचे। तो फारेन वालों को भी मीडिया द्वारा भारत में आवाज फैलाना है। मीडिया का साधन अच्छा है। तो जो भी प्रोग्राम्स बनाये हैं वह बापदादा को पसन्द हैं। प्रैक्टिकल में लाओ। तो प्रैक्टिकल में लाने से आवाज फैलेगा। ठीक है ना! अच्छा है। और एक बात देखी - कि फारेन की बापदादा को लिस्ट मिली है। किस बात की लिस्ट मिली? जो बापदादा ने कहा था कि जो भी सेवा से स्नेही, सहयोगी बने हैं, चाहे वर्गीकरण की सेवा से, चाहे कॉन्फ्रेन्स की सेवा से, तो कौन-कौन स्नेही सहयोगी बने हैं, वह लिस्ट दो। तो आज बापदादा के पास नम्बरवन लिस्ट फारेन से मिली, इसके लिए मुबारक हो। अच्छी मेहनत की है। यू.के. की, यूरोप की और कहाँ की लिस्ट है? अच्छा है भारत वालों को भी लिस्ट निकालनी चाहिए तो कभी इन्टरनेशनल स्नेही सहयोगियों का संगठन करेंगे। एक दो का अनुभव सुनकर भी उमंग में आते हैं। तो यह भी नम्बरवन फारेन की लिस्ट आई है, इसलिए बापदादा खुश हैं। बाकी सभी के पत्र और कार्ड तो आते ही हैं। आजकल तो ईमेल बहुत आते हैं। तो जिन बच्चों ने भी समाचार दिये हैं, चाहे भारत के चाहे विदेश के। भारत में भी शिवरात्रि के प्रोग्राम्स बहुत धूमधाम से किये हैं और समाचार भी दिये हैं। अभी समय की रफ्तार से आगे रफ्तार करो। अच्छा।

बापदादा ने सुना कि बहुत देशों के आये हुए हैं। सब देशों के मुख्य डबल फारेन से जो भी आये हैं, तो हर एक देश के एक-एक मुख्य निमित्त टीचर उठो। 77 देशों से आये हुए हैं। अच्छा। पाण्डव भी हैं, बहनें भी हैं। सबको टी.वी. में दिखाओ। अच्छा किया है, मुबारक हो। अपने-अपने ग्रुप को ले आये हैं, यहाँ तक बनाके तैयार किया है, इसके लिए बापदादा आप एक-एक को पर्सनल मुबारक दे रहे हैं। अच्छी सेवा की है। अच्छा। (सभी की ग्रुप वाइज़ भट्ठी चली है) यह अच्छा किया है। स्पेशल एक-एक संगठन की जो भट्ठी रखी, उसमें हर एक को अपने-अपने डिपार्टमेंट में रहकर, संगठन में रहकर मज़ा भी आता है। तो यह जो विधि रखी, वह अच्छा है। बहुत अच्छा है। अच्छा लगा ना! (पहली बार युगलों की, कुमारों की अलग भट्ठी हुई है) कुमार उठो। अच्छा लगा? अलग भट्ठी की तो अच्छा लगा। वैसे कुमारों की होती भी रहती है। अच्छा है। सभी कुमार अमर भव के वरदानी हो ना। अमर भव का वरदान मिला हुआ है ना! अमर ही रहना। अच्छा। (युगल उठो) बहुत अच्छा। (विष्णु के सिम्बल का झण्डा सबके हाथ में है) बहुत अच्छा। बापदादा को अच्छा लगा। अभी सदा ही प्रवृत्ति को प्रवृत्ति नहीं, पर वृत्ति, पर वृत्ति माना न्यारी और प्यारी वृत्ति में रहना। तो प्रवृत्ति वाले नहीं, पर वृत्ति वाले युगल हैं। बहुत अच्छा, मुबारक हो। (अधर कुमार उठो) सभी अधरकुमार जो भी हैं उन्हों को क्या नशा रहता है? हमारा कम्पेनियन आलमाइटी अथॉरिटी है। कम्पेनियन भी बाप है, कम्पन्नी भी बाप की। तो अधर कुमार सदा इसी नशे में रहना। बाप के साथ कम्बाइन्ड हैं। अपने को सिंगल नहीं समझना। कम्बाइन्ड हैं। बाप और आप कम्बाइन्ड हैं।

बहुत अच्छा। (कुमारियां उठो) कुमारियां भी हैं तो ब्रह्माकुमारियां भी हैं। वैसे भी कुमारी हैं और ब्रह्माकुमारी तो हैं ही। तो कुमारियां क्या करेंगी? कमाल करके दिखायेंगी? अभी बापदादा के सेवा के राइट हैण्ड हैं। राइट हैण्ड हो ना! अच्छा है कुमारियों को देख करके बापदादा बहुत खुश होते हैं कि यह कितनी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनेंगी। विश्व कल्याणकारी बनेंगी। बहुत अच्छा। (मातायें उठो) मातायें होशियार बहुत हैं। देखो बापदादा ने माताओं को ही विशेष आगे बढ़ने का चांस दिया है। तो चांस को प्रैक्टिकल में लाया इसके लिए बहुत-बहुत मुबारक हो। बहुत अच्छा शक्ति अवतार, अपने संगठन को और बढ़ाओ। जहाँ तहाँ माताओं की संख्या ज्यादा है। डबल फारेन में भी माताओं की संख्या अभी भी ज्यादा है, भारत में भी माताओं की संख्या ज्यादा है। सारे कल्प में अभी तो चांस मिला है तो अपना चांस अच्छा लिया है। (सेन्टर निवासी और एन.सी.ओ. मीटिंग के भाई बहिनें उठो) बहुत अच्छा - सेन्टर निवासी अर्थात् पुण्य का खाता बढ़ाने वाले। जो भी आता है उनको बाप का परिचय देके बाप का बनाते हो, यह पुण्य जमा होता है। तो सेन्टर निवासी सदा अपने को मैं पुण्य आत्मा हूँ, पुण्य जमा करने का चांस मिला है। जितना-जितना पुण्य जमा होता जायेगा तो जरा भी स्वप्न मात्र, अगर थोड़ा भी पाप की रेखा रह गई, वह खत्म हो जायेगी। तो पुण्य आत्माओं का ग्रुप है। अच्छा है कुमार, पाण्डव भी सेवा के निमित्त बने हैं, यह भी बहुत अच्छा चांस मिला है। सदा सेवा को बढ़ाने के निमित्त आत्मायें हैं। पाण्डव, चाहे शक्तियां दोनों को बापदादा सेवा की मुबारक दे रहे हैं। अच्छा। (छोटे बच्चों ने भी रिट्रीट की है, बच्चे उठो) अच्छा लगा, बच्चों को बहुत अच्छा लगा! अच्छा है। बच्चे कमाल करके दिखायेंगे। बच्चे ऐसी सेवा करेंगे जो कोई बड़ों ने नहीं की हो क्योंकि बच्चों से सबको प्यार होता है। तो बहुत अच्छा किया है, बहुत अच्छा। अच्छा।

स्पार्क ग्रुप भी आया है :- बहुत अच्छा है। अनुभवी मूर्त बन, अनुभव कराने का प्रैक्टिकल में रिसर्च कर रहे हैं। और इसी को, अनुभूति कराने की रीसर्च को और बढ़ाओ। प्रैक्टिकल में सबूत लाओ तो दुनिया एक्जैम्पुल देख करके सहज मान जाती है। अच्छा है। आगे बढ़ते चलो और एक्जैम्पुल बन औरों को भी एक्जैम्पुल बनाओ। बहुत अच्छा।

मधुबन निवासी उठो:- (सभी ने खूब तालियां बजाई) देखो, सभी का मधुबन निवासियों से कितना प्यार है। मधुबन निवासियों की सेवा को देख सब बहुत खुश होते हैं। लोग भी कहते हैं कि यह कौन चलाता है, कौन डायरेक्शन दे रहा है, यह पता ही नहीं पड़ता है। जैसे मशीन चल रही है। तो मधुबन निवासियों की यह सेवा का भाग्य बहुत बड़ा है। जो भी ग्रुप आता है, उसके आगे एक्जैम्पुल तो मधुबन निवासी होते हैं। चाहे भाषण नहीं करो, सेन्टर पर बैठकर मुरली नहीं सुनाओ, लेकिन एक्जैम्पुल बनना, यह सबसे बड़ी सेवा है। सबको सन्तुष्टता का अनुभव कराना, यह बहुत बड़ी सेवा है। इसलिए मधुबन वालों से चाहे फारेनर्स, चाहे भारत के सबका प्यार है। और कहाँ भी मधुबन वाले जाते हैं, तो मधुबन की हर आत्मा को बहुत रिगार्ड से देखते हैं। सबके मुख से निकलता है - मधुबन से आये हैं। तो मधुबन वाले कम नहीं हैं। साकार ब्रह्मा बाबा कहते थे ''जो चुल पर है वह दिल पर है।'' तो मधुबन निवासी चुल पर भी हैं, दिल पर भी हैं। बापदादा का हर एक मधुबन निवासी से प्यार है। प्यार के पात्र हैं क्योंकि सेवा में सन्तुष्ट करने का लक्ष्य रखा है। अच्छा है। संगठन भी देखो कितना बड़ा है। तो सेवा और संगठन की मुबारक। डबल फारेनर्स को खुशी हो रही है। मधुबन वालों को देख के खुशी होती है।

अच्छा - बापदादा की बात याद रखना - भूल नहीं जाना। अभी पुराने संस्कार की समाप्ति की सेरीमनी मनायेंगे, पसन्द है ना! उस सेरीमनी में आपको बुलायेंगे। जो करेगा, उसको बुलायेंगे। अच्छा।

चारों ओर के सर्व तीन तख्त नशीन, विशेष आत्माओं को, सदा स्वराज्य अधिकारी विशेष आत्माओं को, सदा रहमदिल बन आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली देने वाले महादानी आत्माओं को, सदा दृढ़ता और सफलता का अनुभव करने वाले बाप समान आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- बेफिकर बादशाह हैं। बापदादा सदा ही बेफिकर बादशाह के रूप में देखते हैं। कारण क्या है? बेफिकर क्यों हैं? क्योंकि दिल बड़ी है। जहाँ दिल बड़ी होती है ना तो जो होना है वह हो जाता है। जो आना है वह आ जाता है। (बड़ा बाबा, बड़ी दिल, बड़ा परिवार)

(परदादी से) बहुत अच्छा, संगठन में आ गई बहुत अच्छा किया। सभी याद तो करते हैं ना! बहुत अच्छा। दिल में बातें बहुत करती है। सब दिल से कह देती है। रूहरिहान बहुत करती है ना! रूहरिहान बहुत करती है। बहुत अच्छा। तबियत को भी चला तो रही है ना! यह ठीक है। अच्छा है ना! पुराना शरीर है, लेकिन पुराने शरीर में भी आपको देखकर सब खुश होते हैं। आदि रत्न हैं ना, तो सब खुश होते हैं। सबका नाम लेते हैं कितना आपको याद करते हैं। अच्छा है।

(मनोहर दादी से) सभी को अपना-अपना पार्ट अच्छा मिला है। जहाँ भी रहते हैं वह स्थान शानदार स्थान हो जाता है। सबको खुशी होती है कोई दादी बैठी है। मधुबन के श्रृंगार हो। हैं ना! अच्छा।

विदेश की बड़ी बहिनों से:- यह ग्रुप भी बहुत अच्छा निकला है। अच्छा है, सभी आलराउण्ड सेवाधारी हैं। सेवा में मजा आता है ना! अच्छा है विश्व के चारों कोनों में आवाज तो फैलाया ना। ठीक है, सबकी तबियत ठीक है? बहुत अच्छा ग्रुप है। बापदादा का

सेवा से प्यार है, बच्चों से प्यार है। बहुत अच्छा, जो भी आये हैं, उनकी सेवा का प्लैन भी बहुत अच्छा बनाया है, मुबारक हो। सभी ने मिलकर बहुत अच्छा बनाया है। अच्छा - ओम् शान्ति।

20-03-2004

''इस वर्ष को विशेष जीवनमुक्त वर्ष के रूप में मनाओ, एकता और एकाग्रता से बाप की प्रत्यक्षता करो''

आज स्नेह के सागर चारों ओर के स्नेही बच्चों को देख रहे हैं। बाप का भी बच्चों से दिल का अविनाशी स्नेह है और बच्चों का भी दिलाराम बाप से दिल का स्नेह है। यह परमात्म स्नेह, दिल का स्नेह सिर्फ बाप और ब्राह्मण बच्चे ही जानते हैं। परमात्म स्नेह के पात्र सिर्फ आप ब्राह्मण आत्मायें हो। भक्त आत्मायें परमात्म प्यार के लिए प्यासी हैं, पुकारती हैं। आप भाग्यवान ब्राह्मण आत्मायें उस प्यार की प्राप्ति के पात्र हो। बापदादा जानते हैं कि बच्चों का विशेष प्यार क्यों हैं, क्योंकि इस समय ही सर्व खजानों के मालिक द्वारा सर्व खजाने प्राप्त होते हैं। जो खजाने सिर्फ अब का एक जन्म नहीं चलते लेकिन अनेक जन्मों तक यह अविनाशी खजाने आपके साथ चलते हैं। आप सभी ब्राह्मण आत्मायें दुनिया के मुआफिक हाथ खाली नहीं जायेंगे, सर्व खजाने साथ रहेंगे। तो ऐसे अविनाशी खजानों की प्राप्ति का नशा रहता है ना! और सभी बच्चों ने अविनाशी खजाने जमा किये हैं ना! जमा का नशा, जमा की खुशी भी सदा रहती है। हर एक के चेहरे पर खजानों के जमा की झलक नज़र आती है। जानते हो ना - कौन से खजाने बाप द्वारा प्राप्त हैं? कभी अपने जमा का खाता चेक करते हो? बाप तो सभी बच्चों को हर एक खजाना अखुट देते हैं। किसको थोड़ा, किसको ज्यादा नहीं देते हैं। हर एक बच्चा अखुट, अखण्ड, अविनाशी खजानों के मालिक हैं। बालक बनना अर्थात् खजानों का मालिक बनना। तो इमर्ज करो कितने खजाने बापदादा ने दिये हैं।

सबसे पहला खजाना है - ज्ञान धन, तो सभी को ज्ञान धन मिला है? मिला है या मिलना है? अच्छा - जमा भी है? या थोड़ा जमा है थोड़ा चला गया है? ज्ञान धन अर्थात् समझदार बन, त्रिकालदर्शी बन कर्म करना। नॉलेजफुल बनना। फुल नॉलेज और तीनों कालों की नॉलेज को समझ ज्ञान धन को कार्य में लगाना। इस ज्ञान के खजाने से प्रत्यक्ष जीवन में, हर कार्य में यूज़ करने से विधि से सिद्धि मिलती है - जो कई बंधनों से मुक्ति और जीवनमुक्ति मिलती है। अनुभव करते हो? ऐसे नहीं कि सतयुग में जीवनमुक्ति मिलेगी, अभी भी इस संगम के जीवन में भी अनेक हद के बंधनों से मुक्ति मिल जाती है। जीवन, बंधन मुक्त बन जाती है। जानते हो ना, कितने बन्धनों से फ्री हो गये हो! कितने प्रकार के हाय-हाय से मुक्त हो गये हो! और सदा हाय-हाय खत्म, वाह! वाह! के गीत गाते रहते हो। अगर कोई भी बात में जरा भी मुख से नहीं लेकिन संकल्प मात्र भी, स्वप्न मात्र भी हाय.. मन में आती है तो जीवन-मुक्त नहीं। वाह! वाह! वाह! ऐसे है? मातायें, हाय-हाय तो नहीं करती? नहीं? कभी-कभी करती हैं? पाण्डव करते हैं? मुख से भले नहीं करो लेकिन मन में संकल्प मात्र भी अगर किसी भी बात में हाय है तो फ्लाय नहीं। हाय अर्थात् बंधन और फ्लाय, उड़ती कला अर्थात् जीवन-मुक्त, बंधन-मुक्त। तो चेक करो क्योंकि ब्राह्मण आत्मायें जब तक स्वयं बन्धन मुक्त नहीं हुए हैं, कोई भी सोने की, हीरे की रॉयल बंधन की रस्सी बंधी हुई है तो सर्व आत्माओं के लिए मुक्ति का गेट खुल नहीं सकता। आपके बंधन-मुक्त बनने से सर्व आत्माओं के लिए मुक्ति का गेट खुलेगा। तो गेट खोलने की वा सर्व आत्माओं के दु:ख, अशान्ति से मुक्त होने की जिम्मेवारी आपके ऊपर है।

तो चेक करो - अपनी जिम्मेवारी कहाँ तक निभाई है? आप सबने बापदादा के साथ विश्व परिवर्तन का कार्य करने का ठेका उठाया है। ठेकेदार हो, जिम्मेवार हो। अगर बाप चाहे तो सब कुछ कर सकता है लेकिन बाप का बच्चों से प्यार है, अकेला नहीं करने चाहते, आप सर्व बच्चों को अवतरित होते ही साथ में अवतरित किया है। शिवरात्रि मनाई थी ना! तो किसकी मनाई? सिर्फ बाप-दादा की? आप सबकी भी तो मनाई ना! बाप के आदि से अन्त तक के साथी हो। यह नशा है - आदि से अन्त तक साथी हैं? भग-वान के साथी हो।

तो बापदादा अभी इस वर्ष की सीजन के अन्त के पार्ट बजाने में यही सब बच्चों से चाहते हैं, बतायें क्या चाहते हैं? करना पड़ेगा। सिर्फ सुनना नहीं पड़ेगा, करना ही होगा। ठीक है टीचर्स? टीचर्स हाथ उठाओ। टीचर्स पंखें भी हिला रही हैं, गर्मी लगती है। अच्छा, सभी टीचर्स करेंगी और करायेंगी? करायेंगी, करेंगी? अच्छा। हवा भी लग रही है, हाथ भी हिला रहे हैं। सीन अच्छी लगती है। बहुत अच्छा। तो बापदादा इस सीजन के समाप्ति समारोह में एक नये प्रकार की दीपमाला मनाने चाहते हैं। समझा! नये प्रकार की दीपमाला मनाने चाहते हैं। तो आप सभी दीपमाला मनाने के लिए तैयार हैं? जो तैयार हैं वह हाथ उठाओ। ऐसे ही हाँ नहीं करना। बापदादा को खुश करने के लिए हाथ नहीं उठाना, दिल से उठाना। अच्छा। **बापदादा अपने दिल की आशाओं को सम्पन्न करने के दीप जगे हुए देखने चाहते हैं।** तो बापदादा के आशाओं के दीपकों की दीपमाला मनाने चाहते हैं। समझा, कौन सी दीपावली? स्पष्ट हुआ?

तो बापदादा के आशाओं के दीपक क्या हैं? अगले वर्ष से लेकर, यह वर्ष भी सीजन का पूरा हो गया। बापदादा ने कहा था - आप सबने भी संकल्प किया था, याद है? कोई ने वह संकल्प सिर्फ संकल्प तक पूरा किया है, कोई ने संकल्प को आधा पूरा किया है

और कोई सोचते हैं लेकिन सोच, सोचने तक है। वह संकल्प क्या? कोई नई बात नहीं है, पुरानी बात है - **स्व-परिवर्तन से सर्व परिवर्तन।** विश्व की तो बात छोड़ो लेकिन बापदादा स्व-परिवर्तन से ब्राह्मण परिवार परिवर्तन, यह देखने चाहते हैं। अभी यह नहीं सुनने चाहते कि ऐसे हो तो यह हो। यह बदले तो मैं बदलूं, यह करे तो मैं करूं... इसमें विशेष हर एक बच्चे को ब्रह्मा बाप विशेष कह रहा है कि मेरे समान हे अर्जुन बनो। इसमें पहले मैं, पहले यह नहीं, पहले मैं। यह ''मैं'' कल्याणकारी मैं है। बाकी हद की मैं, मैं नीचे गिराने वाली है। इसमें जो कहावत है - जो ओटे सो अर्जुन, तो अर्जुन अर्थात् नम्बरवन। नम्बरवार नहीं, नम्बरवन। तो आप नम्बर दो बनने चाहते हो या नम्बरवन बनने चाहते हो? कई कार्य में बापदादा ने देखा है - हँसी की बात, परिवार की बात सुनाते हैं। परिवार बैठा है ना! कोई ऐसे काम होते हैं तो बापदादा के पास समाचार आते हैं, तो कई कार्य ऐसे होते हैं, कई प्रोग्राम्स ऐसे होते हैं जो विशेष आत्माओं के निमित्त होते हैं। तो बापदादा के पास दादियों के पास समाचार आते हैं, क्योंकि साकार में तो दादियां हैं। बापदादा के पास तो संकल्प पहुंचते हैं। तो क्या संकल्प पहुंचता है? मेरा भी नाम इसमें होना चाहिए, मैं क्या कम हूँ! मेरा नाम क्यों नहीं! तो बाप कहते हैं - हे अर्जुन में आपका नाम क्यों नहीं! होना चाहिए ना! या नहीं होना चाहिए? होना चाहिए? सामने महारथी बैठे हैं, होना चाहिए ना! होना चाहिए? तो ब्रह्मा बाप ने जो करके दिखाया, किसको देखा नहीं, यह नहीं करते, यूं नहीं करते, नहीं। पहले मैं। इस मैं में जो पहले सुनाया था अनेक प्रकार के रॉयल रूप के मैं, सुनाया था ना! वह सब समाप्त हो जाते हैं। तो बापदादा की आशायें इस सीजन के समाप्ति की यही हैं कि हर एक बच्चा जो ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी कहलाते हैं, मानते हैं, जानते हैं, वह हर एक ब्राह्मण आत्मा जो भी संकल्प रूप में भी हद के बन्धन हैं, उस बंधनों से मुक्त हो। ब्रह्मा बाप समान बन्धनमुक्त, जीवन-मुक्त। ब्राह्मण जीवन मुक्त, साधारण जीवन मुक्त नहीं, **ब्राह्मण श्रेष्ठ जीवनमुक्त का यह विशेष वर्ष मनायें।** हर एक आत्मा जितना अपने सूक्ष्म बंधनों को जानते हैं, उतना और नहीं जान सकता है। बापदादा तो जानते हैं क्योंकि बापदादा के पास तो टी.वी. है, मन की टी.वी., बॉडी की नहीं, मन की टी.वी. है। तो क्या अभी जो फिर से सीजन होगी, सीजन तो होगी ना या छुट्टी करें? एक वर्ष छुट्टी करें? नहीं? एक साल तो छुट्टी होनी चाहिए? नहीं होनी चाहिए? पाण्डव एक साल छुट्टी करें? (दादी जी कह रही हैं, मास में 15 दिन की छुट्टी) अच्छा। बहुत अच्छा, सभी कहते हैं, जो कहते हैं छुट्टी नहीं करनी है वह हाथ उठाओ। नहीं करनी है? अच्छा। ऊपर की गैलरी वाले हाथ नहीं हिला रहे हैं। (सारी सभा ने हाथ हिलाया) बहुत अच्छा। बाप तो सदा बच्चों को हाँ जी, हाँ जी करते हैं, ठीक है। अभी बाप को बच्चे कब हाँ जी करेंगे! बाप से तो हाँ जी करा ली, तो बाप कहते हैं, बाप भी अभी एक शर्त डालते हैं, शर्त मंजूर होगी? सभी हाँ जी तो करो। पक्का? थोड़ा भी आनाकानी नहीं करेंगे? अभी सबकी शक्लें टी.वी. में निकालो। अच्छा है। बाप को भी खुशी होती है कि सभी बच्चे हाँ जी, हाँ जी करने वाले हैं।

तो बापदादा यही चाहते हैं कि कोई कारण नहीं बताये, यह कारण है, यह कारण है, इसलिए यह बंधन है! समस्या नहीं, समाधान स्वरूप बनना है और साथियों को भी बनाना है क्योंकि समय की हालत को देख रहे हो। भ्रष्टाचार का बोल कितना बढ़ रहा है। भ्रष्टाचार, अत्याचार अति में जा रहा है। **तो श्रेष्ठाचार का झण्डा पहले हर ब्राह्मण आत्मा के मन में लहराये, तब विश्व में लह-रेगा।** कितनी शिवरात्रि मना ली! हर शिवरात्रि पर यही संकल्प करते हो कि विश्व में बाप का झण्डा लहराना है। विश्व में यह प्रत्य-क्षता का झण्डा लहराने के पहले हर एक ब्राह्मण को अपने मन में सदा दिल-तख्त पर बाप का झण्डा लहराना होगा। इस झण्डे को लहराने के लिए सिर्फ दो शब्द हर कर्म में लाना पड़ेगा। कर्म में लाना, संकल्प में नहीं, दिमाग में नहीं। दिल में, कर्म में, सम्बन्ध में, सम्पर्क में लाना होगा। मुश्किल शब्द नहीं है कॉमन शब्द है। वह है-**एक सर्व सम्बन्ध, सम्पर्क में आपस में एकता।** अनेक संस्कार होते, अनेकता में एकता। और दूसरा - जो भी श्रेष्ठ संकल्प करते हो, बापदादा को बहुत अच्छा लगता है, जब आप संकल्प करते हो ना, तो बापदादा वह संकल्प देखकर, सुनकर बहुत खुश होते हैं, वाह! वाह! बच्चे वाह! वाह! श्रेष्ठ संकल्प वाह! लेकिन, लेकिन... आ जाता है। आना नहीं चाहिए लेकिन आ जाता है। संकल्प मैजारिटी, मैजारिटी अर्थात् 90 परसेन्ट, कई बच्चों के बहुत अच्छे-अच्छे होते हैं। बापदादा समझते हैं आज इस बच्चे का संकल्प बहुत अच्छा है, प्रोग्रेस हो जायेगी लेकिन बोल में थोड़ा आधा कम हो जाता, कर्म में फिर पौना कम हो जाता, मिक्स हो जाता है। कारण क्या? संकल्प में एकाग्रता, दृढ़ता नहीं। अगर संकल्प में एकाग्रता होती तो एकाग्रता सफलता का साधन है। दृढ़ता सफलता का साधन है। उसमें फर्क पड़ जाता है। कारण क्या? एक ही बात बापदादा देखते हैं रिजल्ट में, दूसरे के तरफ ज्यादा देखते हैं। आप लोग बताते हो ना, (बापदादा ने एक अंगुली आगे करके दिखाई) ऐसे करते हैं, तो एक अंगुली दूसरे तरफ, चार अपने तरफ हैं। तो चार को नहीं देखते, एक को बहुत देखते हैं। इसीलिए **दृढ़ता और एकाग्रता**, एकता हिल जाती है। यह करे, तो मैं करूं, इसमें ओटे अर्जुन बन जाते, उसमें दूजा नम्बर बन जाते हैं। नहीं तो स्लोगन अपना बदली करो। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के बजाए करो - विश्व परिवर्तन से स्व परिवर्तन। दूजे परिवर्तन से स्व परिवर्तन। बदली करें? बदली करें? नहीं करें? तो फिर बापदादा भी एक शर्त डालता है, मंजूर है, बतायें? बाप-दादा 6 मास में रिजल्ट देखेंगे, फिर आयेंगे, नहीं तो नहीं आयेंगे। जब बाप ने हाँ जी किया, तो बच्चों को भी हाँ जी करना चाहिए ना! कुछ भी हो जाए, बापदादा तो कहता है, स्व परिवर्तन के लिए इस हद के मैं पन से मरना पड़ेगा, मैं पन से मरना, शरीर से नहीं

मरना। शरीर से नहीं मरना, मैं पन से मरना है। मैं राइट हूँ, मैं यह हूँ, मैं क्या कम हूँ, मैं भी सब कुछ हूँ, इस मैं पन से मरना है। तो मरना भी पड़े तो यह मृत्यु बहुत मीठा मृत्यु है। यह मरना नहीं है, 21 जन्म राज्य भाग्य में जीना है। तो मंजूर है? मंजूर है टीचर्स? डबल फारेनर्स? डबल फारेनर्स जो संकल्प करते हैं ना, वह करने में हिम्मत रखते हैं, यह विशेषता है। और भारतवासी ट्रिपल हिम्मत वाले हैं, वह डबल तो वह ट्रिपल। तो बापदादा यही देखने चाहते हैं। समझा! यही बापदादा की श्रेष्ठ आशाओं का दीपक, हर बच्चे के अन्दर जगा हुआ देखने चाहते हैं। अभी इस बारी यह दीवाली मनाओ। चाहे 6 मास के बाद मनाओ। फिर जब बापदादा दीपावली का समारोह देखेंगे फिर अपना प्रोग्राम देंगे। करना तो है ही। आप नहीं करेंगे तो और पीछे वाले करेंगे क्या! माला तो आपकी है ना! 16108 में तो आप पुराने ही आने हैं ना। नये तो पीछे-पीछे आयेंगे। हाँ कोई-कोई लास्ट सो फास्ट आयेंगे। कोई-कोई मिसाल होंगे जो लास्ट सो फास्ट जायेंगे, फर्स्ट आयेंगे। लेकिन थोड़े। बाकी तो आप ही हैं, आप ही हर कल्प बने हो, आप ही बनने हैं। चाहे कहाँ भी बैठे हैं, विदेश में बैठे हैं, देश में बैठे हैं लेकिन जो आप पक्के निश्चय बुद्धि बहुतकाल के हैं, वह अधिकारी हैं ही हैं। बापदादा का प्यार है ना, तो जो बहुतकाल वाले अच्छे पुरुषार्थी, सम्पूर्ण पुरुषार्थी नहीं, लेकिन अच्छे पुरुषार्थी रहे हैं उनको बापदादा छोड़ के जायेगा नहीं, साथ ही ले चलेगा। इसीलिए पक्का, निश्चय करो हम ही थे, हम ही हैं, हम ही साथ रहेंगे। ठीक है ना! पक्का है ना? बस सिर्फ शुभ चिंतक, शुभ चिंतन, शुभ भावना, परिवर्तन की भावना, सहयोग देने की भावना, रहम दिल की भावना इमर्ज करो। अभी मर्ज करके रखी है। इमर्ज करो। शिक्षा बहुत नहीं दो, क्षमा करो। एक दो को शिक्षा देने में सब होशियार हैं लेकिन क्षमा के साथ शिक्षा दो। मुरली सुनाने, कोर्स कराने या जो भी आप प्रोग्राम्स चलाते हो, उसमें भले शिक्षा दो, लेकिन आपस में जब कारोबार में आते हो तो क्षमा के साथ शिक्षा दो। सिर्फ शिक्षा नहीं दो, रहमदिल बनके शिक्षा दो तो आपका रहम ऐसा काम करेगा जो दूसरे की कमजोरी की क्षमा हो जायेगी। समझा।

बाकी सेवायें तो सभी ने बहुत प्रकार की की हैं और अभी कर भी रहे हैं लेकिन बापदादा एक इशारा देते हैं कि क्वान्टिटी और क्वालिटी, क्वान्टिटी की भी सेवा करो लेकिन क्वान्टिटी को सेवा के सहयोगी बनाओ। क्वालिटी वालों को सामने लाओ, सेवा की स्टेज पर लाओ। क्वालिटी और क्वान्टिटी दोनों की सेवा साथ-साथ हो। ऐसे नहीं क्वान्टिटी के पीछे क्वालिटी रह जाये क्योंकि समय समीप आ रहा है। बाप की प्रत्यक्षता तब होगी जब क्वालिटी वाले कार्य को और बाप को प्रत्यक्ष करें। सन्देश देना वह भी जरूरी है लेकिन सन्देश वाहक बनाना वह भी आवश्यक है। अभी भी भिन्न-भिन्न वर्ग वाले आये हैं। बापदादा ने सुना, जो भी भिन्न-भिन्न वर्ग वाले आये हैं वह एक एक हाथ उठाओ।

स्पोर्ट, एडमिनिस्टेटर, यूथ, आई. टी. ग्रुप, सभी वर्ग वालों से बापदादा ने हाथ उठवाये

जो भी वर्ग वाले आये हैं, मीटिंग तो की लेकिन बापदादा को हर वर्ग ने अपना सेवा में नम्बरवन आई.पी. सामने नहीं दिखाया है। कौन से वर्ग का कोई माइक तैयार हुआ है, बताओ। हर एक वर्ग का कोई ऐसा माइक तैयार किया है जो आप माइट बनो और वह माइक बनें? किस वर्ग वाले ने किया है? हाथ उठाओ। कौन किया है? अभी जो वर्गों का प्रोग्राम होगा, उसमें हर एक वर्ग अपने छोटे माइक ग्रुप को मधुबन में सामने लावे। यह तो कर सकते हैं ना! बापदादा भी देखे तो सही, कौन से बच्चे तैयार हुए हैं। बाप-दादा के आगे नहीं लाना, पहले दादियों के आगे लाओ। फिर वह पास करेंगे फिर बापदादा के सामने लाना। अच्छा है। अच्छा - सुना तो बहुत है। अभी सुनना अर्थात् समाना। समाना अर्थात् स्वरूप में लाना। अभी 6 लाख ब्राह्मण परिवार एक दो में सदा स्नेही, सहयोगी और सदा हिम्मत बढ़ाने वाले हों। अच्छा।

सेवा का टर्न राजस्थान का है, यू.पी. मददगार है:- अच्छा है ना, राजस्थान को बहुत चांस मिला है - ज्यादा पुण्य जमा करने का। देखो जितनी संख्या बढ़ गई, उतनी आत्माओं का पुण्य सेवाधारियों के खाते में जमा हुआ। तो राजस्थान को बिना संकल्प किये गोल्डन लाटरी पुण्य की मिली है। अच्छा है। राजस्थान को मिली तो सभी खुश हो रहे हैं। अच्छा है सबने अच्छा समय दे करके निभाया। और सेवा में सफलता प्राप्त की, इसकी मुबारक हो। अच्छा। (सभा से, आज सभा में 25 हजार से भी ज्यादा भाई बहिनें पहुंचे हैं) आप सभी ने भी दादियों को, सेवाधारियों को मुबारक दी। इतनी मेहनत कराई है। खूब तालियां बजाओ। अच्छा।

अभी एक सेकेण्ड में मन के मालिक बन मन को जितना समय चाहे उतना समय एकाग्र कर सकते हो? कर सकते हो? तो अभी यह रूहानी एक्सरसाइज करो। बिल्कुल मन की एकाग्रता हो। संकल्प में भी हलचल नहीं। अचल। अच्छा -

चारों ओर के सर्व अविनाशी अखण्ड खजानों के मालिक, सदा संगमयुगी श्रेष्ठ बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त स्थिति पर स्थित रहने वाले, सदा बापदादा की आशाओं को सम्पन्न करने वाले, सदा एकता और एकाग्रता के शक्ति सम्पन्न मास्टर सर्व शक्तिवान आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

चारों ओर दूर बैठने वाले बच्चों को, जिन्होंने यादप्यार भेजी है, पत्र भेजे हैं, उन्हों को भी बापदादा बहुत-बहुत दिल के प्यार सहित यादप्यार दे रहे हैं। साथ-साथ बहुत बच्चों ने मधुबन की रिफ्रेशमेंट के पत्र बहुत अच्छे-अच्छे भेजे हैं, उन बच्चों को भी विशेष याद-प्यार और नमस्ते।

15-10-04

एक को प्रत्यक्ष करने के लिए एकरस स्थिति बनाओ, स्वमान में रहो, सबको सम्मान दो

आज बापदादा हर एक बच्चे के मस्तक में तीन भाग्य के सितारे चमकते हुए देख रहे हैं। एक परमात्म पालना का भाग्य, परमात्म पढ़ाई का भाग्य, परमात्म वरदानों का भाग्य। ऐसे तीन सितारे सभी के मस्तक बीच देख रहे हैं। आप भी अपने भाग्य के चमकते हुए सितारों को देख रहे हो? दिखाई देते हैं? ऐसे श्रेष्ठ भाग्य के सितारे सारे विश्व में और किसी के भी मस्तक में चमकते हुए नहीं नज़र आयेंगे। यह भाग्य के सितारे तो सभी के मस्तक में चमक रहे हैं, लेकिन चमक में कहाँ-कहाँ अन्तर दिखाई दे रहा है। कोई की चमक बहुत शक्तिशाली है, कोई की चमक मध्यम है। भाग्य विधाता ने भाग्य सभी बच्चों को एक समान दिया है। कोई को स्पेशल नहीं दिया है। पालना भी एक जैसी, पढ़ाई भी एक साथ, वरदान भी एक ही जैसा सबको मिला है। सारे विश्व के कोने-कोने में पढ़ाई सदा एक ही होती है। यह कमाल है जो एक ही मुरली, एक ही डेट और अमृतवेले का समय भी अपने-अपने देश के हिसाब से होते भी, हैं एक ही, वरदान भी एक ही है। स्लोगन भी एक ही है। फ़र्क होता है क्या? अमेरिका और लण्डन में फ़र्क होता है? नहीं होता है। तो अन्तर क्यों?

अमृतवेले की पालना चारों ओर बापदादा एक ही करते हैं। निरन्तर याद की विधि भी सबको एक ही मिलती है, फिर नम्बरवार क्यों? विधि एक और सिद्धि की प्राप्ति में अन्तर क्यों? बापदादा का चारों ओर के बच्चों से प्यार भी एक जैसा ही है। बापदादा के प्यार में चाहे पुरुषार्थ प्रमाण

नम्बर में लास्ट नम्बर भी हो लेकिन बापदादा का प्यार लास्ट नम्बर में भी वही है। और ही प्यार के साथ लास्ट नम्बर में रहम भी है कि यह लास्ट भी फास्ट, फर्स्ट हो जाए। आप सभी जो दूर-दूर से पहुंचे हो, कैसे पहुंचे हो? परमात्म प्यार खींच के लाया है ना! प्यार की डोरी में खिंच के आ गये। तो बापदादा का सबसे प्यार है। ऐसे समझते हो या क्वेश्चन उठता है कि मेरे से प्यार है या कम है? बापदादा का प्यार हर एक बच्चे से एक दो से ज्यादा है। और यह परमात्म प्यार ही सब बच्चों की विशेष पालना का आधार है। हर एक क्या समझते हैं - मेरा प्यार बाप से ज्यादा है कि दूसरे का प्यार ज्यादा है, मेरा कम है? ऐसे समझते हैं? ऐसे समझते हो ना कि मेरा प्यार है? मेरा प्यार है, है ना ऐसे? पाण्डव ऐसे है? हर एक कहेगा ''मेरा बाबा'', यह नहीं कहेगा सेन्टर इन्चार्ज का बाबा, दादी का बाबा, जानकी दादी का बाबा, कहेंगे? नहीं। मेरा बाबा कहेंगे। जब मेरा कह दिया और बाप ने भी मेरा कह दिया, बस एक मेरा शब्द में ही बच्चे बाप के बन गये और बाप बच्चों का बन गया। मेहनत लगी क्या? मेहनत लगी? थोड़ी-थोड़ी? नहीं लगी? कभी-कभी तो लगती है? नहीं लगती? लगती है। फिर मेहनत लगती है तो क्या करते हो? थक जाते हो? दिल से, मुहब्बत से कहो ''मेरा बाबा'', तो मेहनत मुहब्बत में बदल जायेगी। मेरा बाबा कहने से ही बाप के पास आवाज पहुंच जाता है और बाप एकस्ट्रा मदद देते हैं। लेकिन है दिल का सौदा, जबान का सौदा नहीं है। दिल का सौदा है। तो दिल का सौदा करने में होशियार हो ना? आता है ना? पीछे वालों को आता है? तभी तो पहुंचे हो। लेकिन सबसे दूरदेशी कौन? अमेरिका? अमेरिका वाले दूरदेशी वाले हैं या बाप दूरदेशी है? अमेरिका तो इस दुनिया में है। बाप तो दूसरी दुनिया से आता है। तो सबसे दूरदेशी कौन? अमेरिका नहीं। सबसे दूरदेशी बापदादा है। एक आकार वतन से आता, एक परमधाम से आता, तो अमेरिका उसके आगे क्या है? कुछ

भी नहीं।

तो आज दूरदेशी बाप इस साकार दुनिया के दूरदेशी बच्चों से मिल रहे हैं। नशा है ना? आज हमारे लिए बापदादा आये हैं! भारतवासी तो बाप के हैं ही लेकिन डबल विदेशियों को देख बापदादा विशेष खुश होते हैं। क्यों खुश होते हैं? बापदादा ने देखा है भारत में तो बाप आये हैं इसीलिए भारतवासियों को यह नशा एकस्ट्रा है लेकिन डबल फॉरेनर्स से प्यार इसलिए है कि भिन्न-भिन्न कल्चर होते हुए भी ब्राह्मण कल्चर में परिवर्तन हो गये। हो गये ना? अभी तो संकल्प नहीं आता - यह भारत का कल्चर है, हमारा कल्चर तो और है? नहीं। अभी बापदादा रिजल्ट में देखते हैं, सब एक कल्चर के हो गये हैं। चाहे कहाँ के भी हैं, साकार शरीर के लिए देश भिन्न-भिन्न हैं लेकिन आत्मा ब्राह्मण कल्चर की है और एक बात बापदादा को डबल फॉरेनर्स की बहुत अच्छी लगती है, पता है कौनसी? (जल्दी सेवा करने लग गये हैं) और बोलो? (नौकरी भी करते हैं, सेवा भी करते हैं) ऐसे तो इण्डिया में भी करते हैं। इण्डिया में भी नौकरी करते हैं। (कुछ भी होता है तो सच्चाई से अपनी कमजोरी को बता देते हैं, स्पष्टवादी हैं) अच्छा, इण्डिया स्पष्टवादी नहीं है?

बापदादा ने यह देखा है कि चाहे दूर रहते हैं लेकिन बाप के प्यार के कारण प्यार में मैजारिटी पास हैं। भारत को तो भाग्य है ही लेकिन दूर रहते प्यार में सब पास हैं। अगर बापदादा पूछेगा तो प्यार में परसेन्टेज है क्या? बाप से प्यार की सबजेक्ट में परसेन्टेज है? जो समझते हैं प्यार में 100 परसेन्ट हैं वह हाथ उठाओ। **(सभी ने हाथ उठाया)** अच्छा - 100 परसेन्ट? भारतवासी नहीं उठा रहे हैं? देखो, भारत को तो सबसे बड़ा भाग्य मिला है कि बाप भारत में ही आये हैं। इसमें बाप को अमेरिका पसन्द नहीं आई, लेकिन भारत पसन्द आया है। यह **(अमेरिका की गायत्री बहन)** सामने बैठी है इसलिए अमेरिका कह रहे हैं। लेकिन दूर

होते भी प्यार अच्छा है। प्राब्लम आती भी है लेकिन फिर भी बाबा-बाबा कहके मिटा लेते हैं।

प्यार में तो बापदादा ने भी पास कर लिया और अभी किसमें पास होना है? होना भी है ना! है भी और होना भी है। तो वर्तमान समय के प्रमाण बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बच्चे में स्व-परिवर्तन के शक्ति की परसेन्टेज़, जैसे प्यार की शक्ति में सबने हाथ उठाया, सभी ने हाथ उठाया ना! इतनी ही स्व-परिवर्तन की तीव्र गति है? इसमें आधा हाथ उठेगा या पूरा? क्या उठेगा? परिवर्तन करते भी हो लेकिन समय लगता है। समय की समीपता के प्रमाण स्व-परिवर्तन की शक्ति ऐसी तीव्र होनी चाहिए जैसे कागज के ऊपर बिन्दी लगाओ तो कितने में लगती है? कितना समय लगता है? बिन्दी लगाने में कितना समय लगता है? सेकण्ड भी नहीं। ठीक है ना! तो ऐसी तीव्रगति है? इसमें हाथ उठायें क्या? इसमें आधा हाथ उठेगा। समय की रफ्तार तेज़ है, स्व-परिवर्तन की शक्ति ऐसे तीव्र होनी है और जब परिवर्तन कहते हैं तो परिवर्तन के आगे पहले स्व शब्द सदा याद रखो। परिवर्तन नहीं, स्व-परिवर्तन। बापदादा को याद है कि बच्चों ने बाप से एक वर्ष के लिए वायदा किया था कि संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन करेंगे। याद है? वर्ष मनाया था - संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन। तो संसार की गति तो अति में जा रही है। लेकिन संस्कार परिवर्तन उसकी गति इतनी फास्ट है? वैसे फॉरेन की विशेषता है, कॉमन रूप से, फॉरेन फास्ट चलता, फास्ट करता। तो बाप पूछते हैं कि संस्कार परिवर्तन में फास्ट हैं? तो बापदादा स्व-परिवर्तन की रफ्तार अभी तीव्र देखने चाहते हैं। सभी पूछते हो ना! बापदादा क्या चाहते हैं? आपस में रूहरिहान करते हो ना, तो एक दो से पूछते हो बापदादा क्या चाहते हैं? तो बापदादा यह चाहते हैं। सेकण्ड में बिन्दी लगे। जैसे कागज में बिन्दी लगती है ना, उससे भी फास्ट, परिवर्तन में जो अयथार्थ है उसमें बिन्दी लगे।

बिन्दी लगाने आती है? आती है ना! लेकिन कभी-कभी क्वेश्चन मार्क हो जाता है। लगाते बिन्दी हैं और बन जाता है क्वेश्चन मार्क। यह क्यों, यह क्या? यह क्यों और क्या... यह बिन्दी को क्वेश्चन मार्क में बदल देता है। बापदादा ने पहले भी कहा था – व्हाई-व्हाई नहीं करो, क्या करो? फ्लाई या वाह! वाह! करो या फ्लाई करो। व्हाई-व्हाई नहीं करो। व्हाई-व्हाई करना जल्दी आता है ना! आ जाता है? जब व्हाई आवे ना तो उसको वाह! वाह! कर लो। कोई भी कुछ करता है, कहता है, वाह! ड्रामा वाह!। यह क्यों करता है, यह क्यों कहता, नहीं। यह करे तो मैं करूं, नहीं।

आजकल बापदादा ने देखा है, सुना दूं। परिवर्तन करना है ना! तो आजकल रिजल्ट में चाहे फॉरेन में चाहे इण्डिया में दोनों तरफ एक बात की लहर है, वह क्या? यह होना चाहिए, यह मिलना चाहिए, यह इसको करना चाहिए... जो मैं सोचता हूँ, कहता हूँ वह होना चाहिए...। यह चाहिए, चाहिए जो संकल्प मात्र में भी होता है यह वेस्ट थॉट्स, बेस्ट बनने नहीं देता है। बापदादा ने सभी का वेस्ट का चार्ट थोड़े समय का नोट किया है। चेक किया है। बापदादा के पास तो पॉवरफुल मशीनरी है ना। आप जैसा कम्प्युटर नहीं है, आपका कम्प्युटर तो गाली भी देता है। लेकिन बापदादा के पास चेकिंग मशीनरी बहुत फास्ट है। तो बापदादा ने देखा मैजारिटी का वेस्ट संकल्प सारे दिन में बीच-बीच में चलता है। क्या होता है यह वेस्ट संकल्प का वज़न भारी होता है और बेस्ट थॉटस का वज़न कम होता है। तो यह जो बीच-बीच में वेस्ट थॉट्स चलते हैं वह दिमाग को भारी कर देते हैं। पुरुषार्थ को भारी कर देते हैं, बोझ है ना तो वह अपने तरफ खींच लेता है। इसलिए शुभ संकल्प जो स्व-उन्नति की लिफ्ट है, सीढ़ी भी नहीं है लिफ्ट है वह कम होने के कारण, मेहनत की सीढ़ी चढ़नी पड़ती है। बस दो शब्द याद करो – वेस्ट को खत्म करने के लिए अमृतवेले से लेके रात तक दो शब्द संकल्प में, बोल में और कर्म में, कार्य में

लगाओ। प्रैक्टिकल में लाओ। वह दो शब्द हैं – स्वमान और सम्मान। स्वमान में रहना है और सम्मान देना है। कोई कैसा भी है, हमें सम्मान देना है। सम्मान देना, स्वमान में स्थित होना है। दोनों का बैलेन्स चाहिए। कभी स्वमान में ज्यादा रहते, कभी सम्मान देने में कमी पड़ जाती है। ऐसे नहीं कि कोई सम्मान दें तो मैं सम्मान दूं, नहीं। मुझे दाता बनना है। शिव शक्ति पाण्डव सेना दाता के बच्चे दाता हैं। वह दे तो मैं दूं, वह तो बिजनेस हो गया, दाता नहीं हुआ। तो आप बिजनेसमैन हो कि दाता हो? दाता कभी लेवता नहीं होता। अपने वृत्ति और दृष्टि में यही लक्ष्य रखो मुझे, औरों को नहीं, मुझे सदा हर एक के प्रति अर्थात् सर्व के प्रति चाहे अज्ञानी है, चाहे ज्ञानी है, अज्ञानियों के प्रति फिर भी शुभ भावना रखते हो लेकिन ज्ञानी तू आत्माओं प्रति आपस में हर समय शुभ भावना, शुभ कामना रहे। वृत्ति ऐसी बन जाये, दृष्टि ऐसी बन जाये। बस दृष्टि में जैसे स्थूल बिन्दी है, कभी बिन्दी गायब होती है क्या! आंखों में से अगर बिन्दी गायब हो जाये तो क्या बन जायेंगे? देख सकेंगे? तो जैसे आंखों में बिन्दी है, वैसे आत्मा वा बाप बिन्दी नयनों में समाई हो। जैसे देखने वाली बिन्दी कभी गायब नहीं होती, ऐसे आत्मा वा बाप के स्मृति की बिन्दी वृत्ति से, दृष्टि से गायब नहीं हो। फ़ालो फ़ादर करना है ना! तो जैसे बाप की दृष्टि वा वृत्ति में हर बच्चे के लिए स्वमान है, सम्मान है ऐसे ही अपनी दृष्टि वृत्ति में स्वमान, सम्मान। सम्मान देने से जो मन में आता है कि यह बदल जाये, यह नहीं करे, यह ऐसा हो, वह शिक्षा से नहीं होगा लेकिन सम्मान दो तो जो मन में संकल्प रहता है, यह हो, यह बदले, यह ऐसा करे, वह करने लग जायेंगे। वृत्ति से बदलेंगे, बोलने से नहीं बदलते। तो क्या करेंगे? स्वमान और सम्मान, दोनों याद रहेगा ना या सिर्फ स्वमान याद रहेगा? सम्मान देना अर्थात् सम्मान लेना। किसी को भी मान देना समझो माननीय बनना है। आत्मिक प्यार की निशानी है – दूसरे की कमी को अपनी शुभ भावना, शुभ कामना

से परिवर्तन करना। बापदादा ने अभी लास्ट सन्देश भी भेजा था कि वर्तमान समय अपना स्वरूप मर्सीफुल बनाओ, रहमदिल। लास्ट जन्म में भी आपके जड़ चित्र मर्सीफुल बन भक्तों पर रहम कर रहे हैं। जब चित्र इतने मर्सीफुल हैं तो चैतन्य में क्या होगा? चैतन्य तो रहम की खान है। रहम की खान बन जाओ। जो भी आवे रहम, यही प्यार की निशानी है। करना है ना? या सिर्फ सुनना है? करना ही है, बनना ही है। तो बापदादा क्या चाहते हैं, इसका उत्तर दे रहा है। प्रश्न करते हैं ना, तो बापदादा उत्तर दे रहे हैं।

बाकी बापदादा को खुशी है, कितने देशों से देखो आये हैं? भिन्न-भिन्न देशों से एक मधुबन में पहुंच गये हैं। बापदादा ने अगले वर्ष एक काम दिया था, याद है? याद है? किसको याद है? पाण्डव, शक्तियां? बापदादा ने कहा कि इस वर्ष, एक वर्ष हो गया तो वारिस और माइक बाप के सामने लाना है। कितने वारिस निकाले हैं? बोलो, आस्ट्रेलिया? कितने वारिस निकले हैं? अमेरिका कितने वारिस निकले हैं? माइक तैयार हो रहे हैं? ऐसे? लेकिन बाबा के सामने नहीं आये हैं। आप तो आ गये लेकिन माइक और वारिस नहीं आये हैं। आये हैं? किसी देश का नया वारिस आया है? पुराने तो हैं ही। हाथ उठाओ कोई भी देश। कितने देश आये हैं? यह वारिस बनके आई है, (कोलम्बिया की एक बहन ने हाथ उठाया) मुबारक हो। बहुत अच्छा। और कहाँ से आये हैं? (एक ब्राजील से आया है) मुबारक हो। और कहाँ से आये हैं? (कैनाडा से, अर्जन्टीना से, हाँगकाँग से, अमेरिका से, न्युजीलैण्ड से, जर्मनी से नये-नये बच्चे हाथ उठा रहे है) बहुत अच्छा, मुबारक हो। हाँगकाँग से 4 निकले हैं। अच्छा पक्के वारिस हैं? अच्छा, ब्राह्मण बनके आये हैं। बहुत अच्छा सेवा में वृद्धि की है, यह तो बहुत अच्छा। वर्तमान समय सेवा में वृद्धि अच्छी हो रही है, चाहे भारत में, चाहे फॉरेन में लेकिन बापदादा चाहते हैं ऐसी कोई निमित्त आत्मा

बनाओ जो कोई विशेष कार्य करके दिखाये। ऐसा कोई सहयोगी बने जो अब तक करने चाहते हैं, वह करके दिखावे। प्रोग्राम्स तो बहुत किये हैं, जहाँ भी प्रोग्राम्स किये हैं उन सर्व प्रोग्राम्स की सभी तरफ वालों को बापदादा बधाई देते हैं। अभी कोई और नवीनता दिखाओ। जो आपकी तरफ से आपके समान बाप को प्रत्यक्ष करें। परमात्मा की पढ़ाई है, यह मुख से निकले। बाबा-बाबा शब्द दिल से निकले। सहयोगी बनते हैं, लेकिन अभी एक बात जो रही है कि यही एक है, यही एक है, यही एक है.... यह आवाज फैले। ब्रह्माकुमारियां काम अच्छा कर रही हैं, कर सकती हैं, यहाँ तक तो आये हैं लेकिन यही एक हैं और परमात्म ज्ञान है। बाप को प्रत्यक्ष करने वाला बेधड़क बोले। आप बोलते हो परमात्मा कार्य करा रहा है, परमात्मा का कार्य है लेकिन वह कहे कि जिस परमात्मा बाप को सभी पुकार रहे हैं, वह ज्ञान है। अभी यह अनुभव कराओ। जैसे आपके दिल में हर समय क्या है? बाबा, बाबा, बाबा... ऐसे कोई ग्रुप निकले। अच्छा है, कर सकते हैं, यहाँ तक तो ठीक है। परिवर्तन हुआ है। लेकिन लास्ट परिवर्तन है - एक है, एक है, एक है। वह होगा जब ब्राह्मण परिवार एकरस स्थिति वाले हो जाये। अभी स्थिति बदलती रहती है। एकरस स्थिति एक को प्रत्यक्ष करेगी। ठीक है ना! तो डबल फॉरेनर्स एक्जैम्पुल बनो। सम्मान देने में, स्वमान में रहने में एक्जैम्पुल बनो, नम्बर ले लो। चारों ओर जैसे मोहजीत परिवार का दृष्टान्त बताते हैं ना, जो चपरासी भी, नौकर भी सब मोहजीत। वैसे कहाँ भी जायें अमेरिका जायें, आस्ट्रेलिया जायें, हर देश में एकरस, एकमत, स्वमान में रहने वाले, सम्मान देने वाले, इसमें नम्बर लो। ले सकते हैं ना? लो। लेना है नम्बर? यह बैठी है ना, **(निर्मला बहन)** नम्बर लो। नम्बर लेकर दिखाओ फिर बापदादा दो बारी आयेंगे। **(सभी ने ताली बजाई)** ताली बजाओ लेकिन पहले रिजल्ट देखेंगे। अच्छा - सब उड़ रहे हो ना। उड़ती कला वाले हो ना! नीचे ऊपर नहीं,

थक जायेंगे। उड़ते रहो, उड़ाते रहो। अच्छा।

बापदादा ने देखा है - जो नहीं पहुंच सके हैं, उन बच्चों ने यादप्यार तो सबने भेजी है लेकिन पत्र भी बहुतों ने भेजे हैं। दूर बैठे भी देख रहे हैं। लेकिन बाप कहते हैं वह दूर नहीं हैं, दिल पर हैं। तो सबसे ज्यादा समीप दिल होती है। इसलिए चाहे कहाँ भी बैठे हैं, नहीं भी देख रहे हैं, दिल से देख रहे हैं, सांधन से नही देख सकते, दिल से तो देख सकते हैं। तो दिल से देखने वाले, दूर बैठने वाले, सभी बाप के दिलतख्त पर हैं। यादप्यार दिल से भेजा है, समाचार भी अपने भेजे हैं, बापदादा सभी को यादप्यार के साथ-साथ यही वरदान दे रहे हैं – बीती को बीती कर बिन्दी लगाए, बिन्दी बन, बिन्दू बाप को याद करो। यही सभी के याद वा समाचारों का रेसपान्ड बापदादा दे रहे हैं। फर्स्ट चांस डबल फॉरेनर्स ने लिया है, तो फर्स्ट में आना पड़ेगा। बापदादा खुश हैं। फ़ालो फ़ादर, सदा खुश रहना। अच्छा –

चारों ओर के बाप के नयनों में समाये हुए, नयनों के नूर बच्चों को सदा एकरस स्थिति में स्थित रहने वाले बच्चों को, सदा भाग्य का सितारा चमकने वाले भाग्यवान बच्चों को, सदा स्वमान और सम्मान साथ-साथ रखने वाले बच्चों को, सदा पुरुषार्थ की तीव्र रफ्तार करने वाले बच्चों को बापदादा का यादप्यार, दुआयें और नमस्ते।

दादियों से

आदि रत्न तो बहुत थोड़े रह गये हैं। (मनोहर दादी ने बहुत-बहुत याद दिया है, वह कानपुर में बैठी है) अच्छा किया, त्याग किया है लेकिन बहुत आत्माओं की दुआयें ले ली। अच्छा, सभी दादियों को देखके खुश होते हैं ना। अच्छा – पार्ट बजाए रही हैं।

(सभा से) बापदादा देख रहे हैं तो यह भी देख रहे हैं। देखने में आ रहा है ना। अच्छा है देखो इण्डिया वालों ने त्याग तो किया ना। आप डबल फॉरेनर्स को चांस दिया। अच्छा है सबके चेहरे हर्षित हो रहे हैं। अभी ऐसे ही हर्षित रखना। अभी अपना फोटो देख रहे हो ना। अभी का फोटो अपना दिखाई दे रहा है तो सदा ऐसे रहेगा! सदा रहेगा कि बदलेगा? सदा अपने को बापदादा के सम्मुख देखना। साथ देखो। तो सदा ऐसा ही चेहरा रहेगा। अच्छा है, मेहनत तो सभी बहुत कर रहे हैं। और प्यार भी सभी का बहुत अच्छा है। अभी चलते फिरते साधारण नहीं दिखाई दो, फरिश्ते दिखाई दो। अच्छा दादियां सभी सेवा की लगन में, याद की लगन में रहने वाली हैं। सब बहुत अच्छे हैं।

विदेश की बड़ी बहनों से

मीटिंग अच्छी चल रही है, अभी प्लैन को प्रैक्टिकल में लाना। लेकिन अच्छा करते हैं, आपस में सभी की राय सलाह लेने से दुआयें मिल जाती हैं। एक अपना लक्ष्य दूसरी दुआयें, तो डबल काम करती हैं। बाकी हर एक अपना-अपना सम्भाल रहे हैं, अच्छा चल रहा है, चलता रहेगा, उसकी मुबारक हो। सब अच्छा चल रहा है ना। अनुभवी भी हो गये हैं। अनुभव से औरों को भी अनुभवी बना रहे हैं। निर्विघ्न चल रहा है इसकी मुबारक। और उमंग भी सेवा का अच्छा है। बापदादा ने भी समाचार सुना, अफ्रीका के उमंग-उत्साह को मुबारक हो। पहला नम्बर शुरू किया है, उसकी मुबारक। ऐसे सभी को नम्बरवार करना है लेकिन पहले पान का बीड़ा उठाया है, अच्छा है। प्लैन भी अच्छा है। **(अफ्रीका में 55 देश हैं, उसमें से अभी तक 14 देशों में सेन्टर हैं, 41 देशों में 2 वर्ष के अन्दर सन्देश देने का प्लैन बनाया है)** वहाँ के हैण्डस निकालके वहाँ सेवा कराना, यह प्लैन बहुत अच्छा है क्योंकि और कहाँ से हैण्डस

कम ही मिलते हैं और वहाँ से वहाँ के अनुभवी होते हैं।

(निज़ार भाई ने अफ्रीका के भाई-बहिनों की तरफ से बापदादा को संकल्प पत्र दिया – हम सब संकल्प लेते हैं कि 2006 मम्मा के दिन तक अफ्रीका के सभी देशों में सन्देश देंगे, ताकि कोई का उल्हना न रहे) अच्छा है, बहुत अच्छा। ऐसे ही सभी जो भी रहे हुए हैं, उन्हों को सन्देश देना। यह प्लैन सबसे अच्छा लगा और सहज विधि हो गई ना। हैण्डस भी मिले और सेवा भी बढ़ गई। अभी सभी को करना है। **(लोकल लोग सेवा करते हैं तो रेसपाण्ड अच्छा मिलता है)** बहुत अच्छा, मुबारक हो।

2-11-2004

स्व-उपकारी बन अपकारी पर भी उपकार करो, सर्व शक्ति, सर्व गुण सम्पन्न सम्मान दाता बनो

आज स्नेह के सागर अपने चारों ओर के स्नेही बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। चाहे साकार रूप में सम्मुख हैं, चाहे स्थूल रूप में दूर बैठे हैं लेकिन स्नेह, सभी को बाप के पास बैठे हैं – यह अनुभव करा रहा है। हर बच्चे का स्नेह बाप को समीप अनुभव करा रहा है। आप सभी बच्चे भी बाप के स्नेह में सम्मुख पहुंचे हो। बापदादा ने देखा कि हर एक बच्चे के दिल में बापदादा का स्नेह समाया हुआ है। हर एक के दिल में ''मेरा बाबा'' इसी स्नेह का गीत बज रहा है। स्नेह ही इस देह और देह के सम्बन्ध से न्यारा बना रहा है। स्नेह ही मायाजीत बना रहा है। जहाँ दिल का स्नेह है वहाँ माया दूर से ही भाग जाती है। स्नेह की सबजेक्ट में सर्व बच्चे पास हैं। एक है स्नेह, दूसरा है सर्वशक्तिवान बाप द्वारा सर्वशक्तियों का खजाना।

तो आज बापदादा एक तरफ तो स्नेह को देख रहे हैं, दूसरे तरफ शक्ति सेना की शक्तियों को देख रहे हैं। जितना स्नेह समाया हुआ है उतना ही सर्व शक्तियां भी समाई हुई हैं? बापदादा ने सभी बच्चों को एक जैसी सर्व शक्तियां दी हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान बनाया है। किसको सर्व शक्तिवान, किसको शक्तिवान नहीं बनाया है। आप सब भी अपना स्वमान मास्टर सर्वशक्तिवान कहते हो। तो बापदादा चारों ओर के बच्चों से पूछते हैं, कि हर एक अपने में सर्व शक्तियों का अनुभव करते हैं? सदा सर्व शक्तियों पर अधिकार है? सर्व शक्तियाँ बापदादा का वर्सा है, तो अपने वर्से पर अधिकार है? है अधिकार? टीचर्स बोलो, अधिकार है? सोच के

बोलना। पाण्डव अधिकार है? सदा है या कभी-कभी है? जिस समय जिस शक्ति की आवश्यकता है तो आप शक्ति सेना के आर्डर से वह शक्ति हाज़िर हो जाती है? समय पर जी हज़ूर हाज़िर करती है? सोचो, देखो, अधिकारी आर्डर करे और शक्ति जी हज़ूर हाज़िर कहे, जिस भी शक्ति का आह्वान करो, जैसा समय, जैसी परिस्थिति वैसे शक्ति कार्य में लगा सको। ऐसे अधिकारी आत्मायें बने हो? क्योंकि बाप ने वर्सा दिया और वर्से को आपने अपना बनाया, अपना बनाया है ना! तो अपने पर अधिकार होता है। जिस समय जिस विधि से आवश्यकता हो, उस समय कार्य में लग जाए। मानो समाने के शक्ति की आपको आवश्यकता है और आर्डर करते हो समाने की शक्ति को, तो आपका आर्डर मान जी हाज़िर हो जाती है? हो जाती है तो कांध हिलाओ, हाथ हिलाओ। कभी-कभी होती है या सदा होती है? समाने की शक्ति हाज़िर होती है लेकिन 10 बारी समा लिया और 11 वें बारी थोड़ा नीचे ऊपर होता है? सदा और सहज हाज़िर हो जाए, समय बीतने के बाद नहीं आवे, करने तो यह चाहते थे लेकिन हो गया, यह ऐसा नहीं हो। इसको कहा जाता है सर्व शक्तियों के अधिकारी। यह अधिकार बापदादा ने तो सबको दिया है, लेकिन देखने में आता है कि सदा अधिकारी बनने में नम्बरवार हो जाते हैं। सदा और सहज हो, नेचुरल हो, नेचर हो, उसकी विधि है, जैसे बाप को हजूर भी कहा जाता है, कहते हैं हज़ूर हाज़िर है। हाज़िर हज़ूर कहते हैं। तो जो बच्चा हज़ूर की हर श्रीमत पर हाज़िर हज़ूर कर चलता है उसके आगे सर्व शक्तियां भी हज़ूर हाज़िर करती हैं। हर आज्ञा में जी हाज़िर, हर कदम में जी हाज़िर। अगर हर श्रीमत में जी हाज़िर नहीं हैं तो हर शक्ति भी हर समय हाज़िर हज़ूर नहीं कर सकती है। अगर कभी-कभी बाप की श्रीमत वा आज्ञा का पालन करते हैं, तो शक्तियां भी आपका कभी-कभी हाज़िर होने का आर्डर पालन करती हैं। उस समय अधिकारी के बजाए अधीन

बन जाते हैं। तो बापदादा ने यह रिजल्ट चेक की, तो क्या देखा? नम्बरवार हैं। सभी नम्बरवन नहीं हैं, नम्बरवार हैं और सदा सहज नहीं हैं। कभी-कभी सहज हो जाते, कभी थोड़ा मुश्किल शक्ति इमर्ज होती है।

बापदादा हर एक बच्चे को बाप समान देखने चाहते हैं। नम्बरवार नहीं देखने चाहते हैं और आप सभी का लक्ष्य भी है बाप समान बनने का। समान बनने का लक्ष्य है वा नम्बरवार बनने का लक्ष्य है? अगर पूछेंगे तो सब कहेंगे समान बनना है। तो चेक करो - एक सर्व शक्तियां हैं? सर्व पर अण्डरलाइन करो। सर्व गुण हैं? बाप समान स्थिति है? कभी स्वयं की स्थिति, कभी कोई पर-स्थिति विजय तो नहीं प्राप्त कर लेती? पर स्थिति अगर विजय प्राप्त कर लेती है तो उसका कारण जानते हो ना? **स्थिति कमजोर है तब परिस्थिति वार कर सकती है। सदा स्व स्थिति विजयी रहे, उसका साधन है - सदा स्वमान और सम्मान का बैलेन्स।** स्वमानधारी आत्मा स्वत: ही सम्मान देने वाला दाता है। वास्तव में किसी को भी सम्मान देना, देना नहीं है, सम्मान देना मान लेना है। सम्मान देने वाला सबके दिल में माननीय स्वत: ही बन जाता है। ब्रह्मा बाप को देखा – आदि देव होते हुए, ड्रामा की फर्स्ट आत्मा होते हुए सदा बच्चों को सम्मान दिया। अपने से भी ज्यादा बच्चों का मान आत्माओं द्वारा दिलाया। इसलिए हर एक बच्चे के दिल में ब्रह्मा बाप माननीय बने। तो मान दिया या मान लिया? सम्मान देना अर्थात् दूसरे के दिल में दिल के स्नेह का बीज बोना। विश्व के आगे भी विश्व कल्याणकारी आत्मा है, यह तब अनुभव करते जब आत्माओं को स्नेह से सम्मान देते हो।

तो बापदादा ने वर्तमान समय में आवश्यकता देखी सम्मान एक दो को देने की। सम्मान देने वाला ही विधाता आत्मा दिखाई देता है। सम्मान देने वाले ही बापदादा की श्रीमत (शुभ भावना, शुभ कामना) मानने वाले आज्ञाकारी बच्चे हैं। सम्मान देना ही ईश्वरीय परिवार का दिल का प्यार है।

सम्मान वाला स्वमान में सहज ही स्थित हो सकता है। क्यों? जिन आत्माओं को सम्मान देता है उन आत्माओं द्वारा जो दुआयें दिल की मिलती हैं, वह दुआओं का भण्डार स्वमान सहज और स्वत: ही याद दिलाता है। इसलिए **बापदादा चारों ओर के बच्चों को विशेष अण्डरलाइन करा रहे हैं – सम्मान दाता बनो।**

बापदादा के पास जो भी बच्चा जैसा भी आया, कमजोर आया, संस्कार के वश आया, पापों का बोझ लेके आया, कड़े संस्कार लेकर आया, बापदादा ने हर बच्चे को किस नज़र से देखा! मेरा सिकीलधा लाडला बच्चा है, ईश्वरीय परिवार का बच्चा है। तो सम्मान दिया और आप स्वमानधारी बन गये। तो फ़ालो फ़ादर। **अगर सहज सर्व गुण सम्पन्न बनना चाहते हो तो सम्मान दाता बनो।** समझा! सहज है ना? सहज है या मुश्किल है? टीचर्स क्या समझती हैं, सहज है? कोई को देना सहज है, कोई को मुश्किल है या सभी को देना सहज है? **आपका टाइटल है - सर्व उपकारी।** अपकार करने वाले पर भी उपकार करने वाले। तो चेक करो - सर्व उपकारी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति रहती है? दूसरे पर उपकार करना, स्वयं पर ही उपकार करना है। तो क्या करना है? सम्मान देना है ना! अलग-अलग बातों में धारणा करने के लिए जो मेहनत करते हो, उससे छूट जायेंगे क्योंकि बापदादा देख रहे हैं, कि समय की गति तीव्र हो रही है। समय इन्तज़ार कर रहा है, तो आप सभी को इन्तज़ाम करना है। समय का इन्तजार समाप्त करना है। क्या इन्तज़ाम करना है? अपने सम्पूर्णता और समानता की गति तीव्र करनी है। कर रहे हैं नहीं, तीव्रगति को चेक करो – तीव्रगति है?

बाकी स्नेह से नये-नये बच्चे भी पहुंचे हैं, बापदादा नये-नये बच्चों को देख खुश होते हैं। जो पहले बारी आये हैं वह हाथ उठाओ। बहुत हैं। भले पधारे बाप के घर में, अपने घर में, मुबारक हो। अच्छा –

सेवा का टर्न – कर्नाटक

कर्नाटक वाले उठो। सेवा के गोल्डन चांस की मुबारक हो। देखो पहला नम्बर लिया है तो पहला नम्बर ही रहना है ना! पुरुषार्थ में, विजयी बनने में सबमें पहला नम्बर लेने वाले। दूसरा नम्बर नहीं लेना, पहला नम्बर। है हिम्मत! हिम्मत है? तो हिम्मत आपकी और हजार गुणा मदद बाप की। अच्छा चांस लिया है। अपने पुण्य का खाता बहुत-बहुत जमा कर लिया। अच्छा कर्नाटक ने मेगा प्रोग्राम किया है? नहीं किया है, क्यों? क्यों नहीं किया? कर्नाटक को सबमें पहला नम्बर लेना चाहिए। (बैंगलोर में करेंगे) अच्छा, जिन्होंने भी बड़ा प्रोग्राम किया है वह उठो। कितने प्रोग्राम हो गये हैं? (8-10 हो चुके हैं) तो बापदादा बड़े प्रोग्राम की बड़ी मुबारक दे रहे हैं। ज़ोन कितने हैं! हर एक ज़ोन को बड़ा प्रोग्राम करना चाहिए क्योंकि आपके शहर में उल्हना देने वाले उल्हना नहीं देंगे। बड़े प्रोग्राम में आप एडवरटाइज भी बड़ी करते हो ना, चाहे मीडिया द्वारा, चाहे पोस्टर, होर्डिंग आदि भिन्न-भिन्न साधन अपनाते हो तो उल्हना कम हो जायेगा। बापदादा को यह सेवा पसन्द है लेकिन... लेकिन है। प्रोग्राम तो बड़े किये उसकी तो मुबारक है ही लेकिन हर प्रोग्राम से कम से कम 108 की माला तो तैयार होनी चाहिए। वह कहाँ हुई है? कम से कम 108, ज्यादा में ज्यादा 16 हजार। लेकिन इतनी जो एनर्जी लगाई, इतना सम्पत्ति लगाई, उसकी रिजल्ट कम से कम 108 तो तैयार हों। सबकी एड्रेस तो आपके पास रहनी चाहिए। बड़े प्रोग्राम में जो भी लाने वाले हैं, उन्हों के पास उनका परिचय तो रहता ही है तो उन्हों को फिर से समीप लाना चाहिए। ऐसे नहीं कि हमने कर लिया, लेकिन जो भी कार्य किया जाता है उसका फल तो निकलना चाहिए ना। तो हर एक बड़े प्रोग्राम करने वालों को यह रिजल्ट बापदादा को देनी है। चाहे भिन्न-भिन्न सेन्टर पर जायें,

किस शहर का भी हो वहाँ जाए, लेकिन रिजल्ट निकलनी चाहिए। ठीक है ना, हो तो सकता है ना! थोड़ा अटेन्शन देंगे तो निकल आयेंगे, 108 तो कुछ भी नहीं हैं। लेकिन रिजल्ट बापदादा देखने चाहते हैं, कम से कम स्टूडेन्ट तो बनें। सहयोग में आगे आवें, कौन-कौन कितने निकालते हैं, वह बापदादा इस सीजन में रिजल्ट देखने चाहते हैं। ठीक है ना? पाण्डव ठीक है? तो देखेंगे नम्बरवन कौन है? कितने भी निकालो, निकालो जरूर। क्या है, प्रोग्राम हो जाते हैं लेकिन आगे का सम्पर्क वह थोड़ा अटेन्शन कम हो जाता है और निकालना कोई मुश्किल नहीं है। बाकी बापदादा बच्चों की हिम्मत देख खुश है। समझा। अच्छा -

इन्दौर होस्टल तथा सभा में उपस्थित सभी कुमारियों से

बहुत कुमारियां आई हैं, जितनी भी कुमारियां आई हैं, उनमें से हैण्डस कितने निकलेंगे? कुमारियां बापदादा के राइट हैण्डस बन सकती हैं। गोल्डन चांस है। तो कितनी संख्या है! मालूम है, कितनी कुमारियां हैं। (5-6 सौ) इन्हों का नाम नोट करना और यह रिजल्ट देखना कि इतनी सारी कुमारियों में से राइट हैण्ड कितनी बनीं! हाथ उठाओ, सेन्टर पर रहने वाली नहीं उठाओ। जो राइट हैण्ड बनेंगी वह हाथ उठाओ। इन्हों का वीडियो निकालो। क्योंकि आप लोगों को मालूम है कि सेन्टर खोलने के निमन्त्रण बहुत हैं लेकिन हैण्डस कम हैं। तो आपकी तो मांगनी है। इसलिए कुमारियों को जल्दी से जल्दी सेवा के राइट हैण्ड बनना चाहिए। जो छोटी-छोटी हैं उनकी बात छोड़ो लेकिन जो सेवा कर सकती हैं उन्हों को समय के प्रमाण जल्दी तैयार हो जानां चाहिए। दहेज आपका तैयार है, सेन्टर दहेज है, वर तो है ही और दहेज भी तैयार है। तो तैयारी करो। करेंगी ना! हाँ, बड़ी-बड़ी तो निकल सकती हैं। जो समझती हैं जल्दी से

जल्दी निकल सकती हैं, वह हाथ उठाओ। देखो, कितनी कुमारियां हाथ उठा रही हैं। वीडियो निकल रहा है। अच्छा - मुबारक हो, इनएडवांस मुबारक हो। अच्छा।

सभी तरफ से जो भी स्नेही बच्चे बापदादा को दिल में याद कर रहे हैं, वा पत्र, ईमेल द्वारा याद भेजी है, उन चारों ओर के बच्चों को बापदादा दूर नहीं देख रहे हैं लेकिन दिलतख्त पर देख रहे हैं। सबसे समीप दिल है। तो बापदादा दिल से याद भेजने वालों को और याद भेजी नहीं लेकिन याद में हैं, उन सबको भी दिलतख्तनशीन देख रहे हैं। रेसपान्ड दे रहे हैं। दूर बैठे भी नम्बरवन तीव्र पुरुषार्थी भव।

अच्छा – अभी सभी एक सेकण्ड में, एक सेकण्ड एक मिनट नहीं, एक सेकण्ड में **''मैं फरिश्ता सो देवता हूँ''** – यह मंसा ड्रिल सेकण्ड में अनुभव करो। ऐसी ड्रिल दिन में एक सेकण्ड में बार-बार करो। जैसे शारीरिक ड्रिल शरीर को शक्तिशाली बनाती, वैसे यह मन की ड्रिल मन को शक्तिशाली बनाने वाली है। मैं फरिश्ता हूँ, इस पुरानी दुनिया, पुरानी देह, पुराने देह के संस्कार से न्यारी फरिश्ता आत्मा हूँ। अच्छा –

चारों ओर के अति स्नेही, सदा स्नेह के सागर में लवलीन आत्माओं को, सदा सर्व शक्तियों के अधिकारी श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बाप समान बनने वाले बाप के प्यारे आत्माओं को, सदा स्वमान में रहने वाली हर आत्मा को सम्मान देने वाली, सर्व के माननीय बनने वाली आत्माओं को, सदा सर्व उपकारी आत्माओं को बापदादा का दिल का यादप्यार और दिल की दुआयें स्वीकार हों। और साथ-साथ विश्व के मालिक आत्माओं को नमस्ते।

दादी जी से

सम्मान देने में नम्बरवन पास हैं। अच्छा है, सब दादियों से मधुबन की रौनक है। (सभा से) इन सभी को दादियों से रौनक अच्छी लगती है ना। जैसे दादियों की रौनक से मधुबन में रौनक हो जाती है, ऐसे आप सभी दादी नहीं, दीदियां और दादे तो हो। तो सभी दीदियां और सभी दादायें, सभी को यह सोचना है, करना है, जहाँ भी रहते हो उस स्थान में रौनक हो। जैसे दादियों से रौनक है, वैसे हर स्थान में रौनक हो क्योंकि दादी के पीछे दीदियां तो हो ना, कम नहीं हो। दादे भी हैं, दीदियां भी हैं। तो किसी भी सेन्टर पर रूखापन नहीं होना चाहिए, रौनक होनी चाहिए। आप एक-एक विश्व में रौनक करने वाली आत्मायें हो। तो जिस भी स्थान पर हो वह रौनक का स्थान नज़र आवे। ठीक है ना? क्योंकि दुनिया में हद की रौनक है और आप एक एक से बेहद की रौनक है। स्वयं खुशी, शान्ति और अतीन्द्रिय सुख की रौनक में होंगे तो स्थान भी रौनक में आ जायेगा क्योंकि स्थिति से स्थान में वायुमण्डल फैलता है। तो सभी को चेक करना है - कि जहाँ हम रहते हैं, वहाँ रौनक है? उदासी तो नहीं है? सब खुशी में नाच रहे हैं? ऐसे है ना! आप दादियों का तो यही काम है ना! फ़ालो दीदियां और दादायें। अच्छा।

आज इस वर्ष के इन्डियन सीजन का आदि है। तो आप सभी आदि में आ गये हैं। अच्छा है। बापदादा ने यह हाल आपके लिए ही बनाया है। आप नहीं होते हो ना तो हाल की रौनक नहीं होती है। (बाबा आते हैं तो रौनक हो जाती है) बाबा आवे और यह नहीं हों तो! (दादी को रौनक चाहिए) अच्छा है। ओम् शान्ति।

30-11-2004

अभी अपने चलन और चेहरे द्वारा ब्रह्मा बाप समान अव्यक्त रूप दिखाओ, साक्षात्कार मूर्त बनो

आज भाग्य विधाता बाप अपने चारों ओर के श्रेष्ठ भाग्यवान बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। सारे कल्प में ऐसा श्रेष्ठ भाग्य किसी का भी हो नहीं सकता। कल्प-कल्प के आप बच्चे ही इस भाग्य का अधिकार प्राप्त करते हो। याद है – अपना कल्प-कल्प के अधिकार का भाग्य? यह भाग्य सर्व श्रेष्ठ भाग्य क्यों है? क्योंकि स्वयं भाग्य विधाता ने इस श्रेष्ठ भाग्य का दिव्य जन्म आप बच्चों को दिया है, जिसका जन्म ही भाग्य विधाता द्वारा है, उससे श्रेष्ठ भाग्य और हो ही नहीं सकता। अपने भाग्य का नशा स्मृति में रहता है? अपने भाग्य की लिस्ट निकालो तो कितनी बड़ी लिस्ट है? अप्राप्त कोई वस्तु नहीं आप ब्राह्मणों के भाग्यवान जीवन में। सबके मन में अपने भाग्य की लिस्ट स्मृति में आ गई! स्मृति में लाओ, आ गई स्मृति में? दिल क्या गीत गाती? वाह भाग्य विधाता! और वाह मेरा भाग्य! इस श्रेष्ठ भाग्य की विशेषता यही है – एक भगवान द्वारा तीन सम्बन्ध की प्राप्ति है। एक द्वारा एक में तीन सम्बन्ध, जो जीवन में विशेष सम्बन्ध गाये हुए हैं – बाप, शिक्षक, सतगुरु, किसी को भी एक द्वारा तीन विशेष सम्बन्ध और प्राप्ति नहीं है। आप फलक से कहते हो हमारा बाप भी है, शिक्षक भी है तो सतगुरु भी है। बाप द्वारा सर्व खजानों की खान प्राप्त है। खज़ानों की लिस्ट भी स्मृति में आई! स्मृति में लाओ क्या-क्या खजाना बाप द्वारा मिल गया! मिल गया है या मिलना है? क्या कहेंगे? बालक सो मालिक हैं ही। शिक्षक द्वारा शिक्षा से श्रेष्ठ पद की प्राप्ति हो गई। वैसे भी देखा जाए दुनिया में भी सबसे श्रेष्ठ पद राज्य पद गाया जाता है, तो आप तो

डबल राजे बन गये हो। वर्तमान स्वराज्य अधिकारी और भविष्य में अनेक जन्म राज्य पद अधिकारी। पढ़ाई एक जन्म की, वह भी छोटा सा जन्म और पद की प्राप्ति अनेक जन्म, और राज्य भी अखण्ड, अटल, निर्विघ्न राज्य। अभी भी स्वराज्य अधिकारी बेफिकर बादशाह हो, हैं? बेफिकर बादशाह बने हो? जो बेफिकर हैं वह हाथ उठाओ। बेफिकर, थोड़ा भी फिकर नहीं है? देखना, जब कोई पपेट शो सामने आता है फिर फिकर होता है? माया का पपेट शो सामने आता है या नहीं? फिर थोड़ा-थोड़ा फिकर होता है? नहीं होता? थोड़ा चिंता, चिंतन चलता है या नहीं चलता है? वैसे श्रेष्ठ भाग्य अभी से बेफिकर बादशाह बनाता है। यह थोड़ी बहुत जो बातें आती हैं वह और ही आगे के लिए अनुभवी, परिपक्व बनाने वाली हैं।

अभी तो सभी इन भिन्न-भिन्न बातों के अनुभवी हो गये हो ना! घबराते तो नहीं हैं ना? आराम से साक्षी की सीट पर बैठ यह पपेट शो देखो, कार्टून शो देखो। है कुछ भी नहीं, कार्टून है। अभी तो मजबूत हो गये हो ना! अभी मजबूत हैं? या कभी-कभी घबराते हो? यह कागज का शेर बनकर आते हैं। है कागज का लेकिन शेर बनके आते हैं। अभी समय प्रमाण अनुभवी मूर्त बन समय को, प्रकृति को, माया को चैलेन्ज करो – आओ, हम विजयी हैं। विजयी की चैलेन्ज करो। (बीच-बीच में खांसी आ रही है) आज बाजा थोड़ा खराब है, मिलना तो है ना!

बापदादा के पास दो ग्रुप बार-बार आते हैं, किसलिए आते हैं? दोनों ग्रुप बापदादा को कहते हैं – हम तैयार हैं। एक यह समय, प्रकृति और माया। माया समझ गई है अब हमारा राज्य जाने वाला है। और दूसरा ग्रुप है – एडवांस पार्टी। दोनों ग्रुप डेट पूछ रहे हैं। फॉरेन में तो एक साल पहले डेट फिक्स करते हो ना? और यहाँ 6 मास पहले? भारत में फास्ट जाते हैं, 15 दिन में भी कोई प्रोग्राम की डेट हो जाती है। तो समाप्ति, सम्पन्नता,

बाप के समान बनने की डेट कौन सी है? वह बापदादा से पूछते हैं। यह डेट अभी आप ब्राह्मणों को फिक्स करनी है। हो सकती है? डेट फिक्स हो सकती है? पाण्डव बोलो, तीनों ही बोलो। **(बापदादा निर्वैर भाई, रमेश भाई, बृजमोहन भाई से पूछ रहे हैं)** डेट फिक्स हो सकती है? बोलो - हो सकती है? कि अचानक होनी है? ड्रामा में फिक्स है लेकिन उसको प्रैक्टिकल में लाना है या नहीं? वह क्या? बताओ। होनी है? अचानक होगा? डेट फिक्स नहीं होगी? होगी? पहली लाइन वाले बताओ होगी? जो कहते हैं ड्रामा को प्रैक्टिकल में लाने के लिए मन में डेट का संकल्प करना पड़ेगा, वह हाथ उठाओ। करना पड़ेगा? यह नहीं उठा रहे हैं? अचानक होगी? डेट फिक्स कर सकते हैं? पीछे वालों ने समझ लिया? अचानक होना है यह राइट है लेकिन अपने को तैयार करने के लिए लक्ष्य जरूर रखना पड़ेगा। बिना लक्ष्य के सम्पन्न बनने में अलबेलापन आ जाता है। आप देखो जब डेट फिक्स करते हो तभी सफलता मिलती है। कोई भी प्रोग्राम की डेट फिक्स करते हो ना? बनना ही है, यह संकल्प तो करना पड़ेगा ना! या नहीं, ड्रामा में आपेही हो जायेगा? क्या समझते हो? पहली लाइन वाले बताओ। प्रेम (देहरादून) सुनाओ। करना पड़ेगा, करना पड़ेगा? जयन्ती बोलो, करना पड़ेगा। वह कब होगी? अन्त में होगी जब समय आ जायेगा! समय सम्पन्न बनायेगा या आप समय को समीप लायेंगे?

बापदादा ने देखा है कि स्मृति में ज्ञान भी रहता है, नशा भी रहता है, निश्चय भी रहता है, लेकिन अभी एडीशन चाहिए – चलन और चेहरे से दिखाई दे। बुद्धि में याद सब रहता है, स्मृति में भी आता है लेकिन अब स्वरूप में आवे। जब साधारण रूप में भी अगर कोई बड़े आक्यूपेशन वाला है या कोई साहूकार का बच्चा एज्यूकेटेड है तो उसकी चलन से दिखाई पड़ता है कि यह कुछ है। उनका कुछ न कुछ न्यारापन दिखाई देता है। तो इतना बड़ा भाग्य, वर्सा भी है, पढ़ाई और पद भी है। स्वराज्य तो

अभी भी है ना! प्राप्तियां भी सब हैं, लेकिन चलन और चेहरे से भाग्य का सितारा मस्तक में चमकता हुआ दिखाई दे, वह अभी एडीशन चाहिए। अभी लोगों को आप श्रेष्ठ भाग्यवान आत्माओं द्वारा यह अनुभव होना है, चाहिए नहीं, होना है कि यह हमारे इष्ट देव हैं, इष्ट देवियां हैं। यह हमारे हैं। जैसे ब्रह्मा बाप में देखा – साधारण तन में होते भी आदि के समय भी ब्रह्मा बाप में क्या दिखाई देता था, कृष्ण दिखाई देता था ना! आदि वालों को अनुभव है ना! तो जैसे आदि में ब्रह्मा बाप द्वारा कृष्ण दिखाई देता था ऐसे ही लास्ट में क्या दिखाई देता था? अव्यक्त रूप दिखाई देता था ना! चलन में, चेहरे में दिखाई दिया ना! अभी बापदादा विशेष निमित्त बच्चों को यह होमवर्क दे रहा है कि अभी ब्रह्मा बाप समान अव्यक्त रूप दिखाई दे। चलन और चेहरे से कम से कम 108 माला के दाने तो दिखाई देवें। बापदादा नाम नहीं चाहते हैं, नाम नहीं बताते हैं – 108 कौन हैं लेकिन उनकी चलन और चेहरा स्वत: ही प्रत्यक्ष हो। यह होमवर्क बापदादा निमित्त बच्चों को विशेष दे रहा है। हो सकता है? अच्छा कितना समय चाहिए? ऐसे नहीं समझना कि जो पीछे आये हैं, टाइम की बात नहीं है, कोई समझे हमको तो थोड़ा वर्ष ही हुआ है। कोई भी लास्ट सो फास्ट और फास्ट सो फर्स्ट जा सकता है, यह भी बापदादा की चैलेन्ज है, कर सकते हो। कोई भी कर सकते हो। लास्ट वाला भी हो सकता है। सिर्फ लक्ष्य पक्का रखो - करना ही है, होना ही है।

डबल फॉरेनर्स हाथ उठाओ। तो डबल फॉरेनर्स क्या करेंगे? डबल चांस लेंगे ना। बापदादा नाम नहीं एनाउन्स करेगा लेकिन उनका चेहरा बतायेगा – यह हैं। हिम्मत है? पहली लाइन को बापदादा देख रहा है। है, हिम्मत है? अगर हिम्मत है तो हाथ उठाओ। हिम्मत है तो? पीछे वाले भी उठा सकते हैं। जो ओटे सो अर्जुन। अच्छा – बापदादा रिजल्ट देखने के लिए, क्या-क्या पुरुषार्थ कर रहे हैं, कौन-कौन कर रहा है वह रिजल्ट

देखने के लिए 6 मास दे रहे हैं। 6 मास रिजल्ट देखेंगे फिर फाइनल करेंगे। ठीक है? क्योंकि देखा जाता है कि अभी समय की रफ्तार तेज जा रही है, रचना को तेज नहीं जाना चाहिए, रचता को तेज होना चाहिए। अभी थोड़ा फास्ट करो, उड़ो अभी। चल रहे हैं नहीं, उड़ रहे हैं। जवाब में बहुत अच्छे जवाब देते हैं कि हम ही तो हैं ना! और कौन होगा! बापदादा खुश होते हैं। लेकिन अब लोग (आत्मायें) जो हैं ना, वह कुछ देखने चाहते हैं। बापदादा को याद है जब आदि में आप बच्चे सेवा में निकले थे तो बच्चों से भी साक्षात्कार होते थे, अभी सेवा और स्वरूप दोनों तरफ अटेन्शन चाहिए। तो क्या सुना! अब साक्षात्कार मूर्त बनो। साक्षात् ब्रह्मा बाप बनो। अच्छा।

आज नये-नये बच्चे भी बहुत आये हैं। अपने स्नेह की शक्ति से सभी पहुंच गये हो इसलिए बापदादा विशेष जो नये-नये बच्चे आये हैं, उन्हों को हर एक को नाम सहित पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं, साथ में वरदाता वरदान दे रहे हैं - सदा ब्राह्मण जीवन में जीते रहो, उड़ते रहो। अच्छा।

सेवा का टर्न –पंजाब

पंजाब वाले उठो। बहुत अच्छा। यह भी विधि अच्छी बनाई है, हर ज़ोन को चांस मिल जाता है। एक तो यज्ञ सेवा द्वारा एक-एक कदम में पदमगुणा कमाई जमा हो जाती है क्योंकि मैजॉरिटी कोई भी कर्म करते यज्ञ सेवा याद रहती और यज्ञ सेवा याद आने से यज्ञ रचता बाप तो याद आता ही है। तो सेवा में भी ज्यादा से ज्यादा पुण्य का खाता जमा कर लेते हैं और जो सच्चे पुरुषार्थी बच्चे हैं वह अपने याद के चार्ट को सहज और निरन्तर बना सकते हैं क्योंकि यहाँ एक तो महारथियों का संग है, संग का रंग सहज लग सकता है। अटेन्शन है तो यह जो 8-10 दिन मिलते हैं इसमें बहुत अच्छी प्रोग्रेस कर सकते हैं। कॉमन रीति से सेवा की तो इतना

लाभ नहीं है, लेकिन चांस है एक सहज निरन्तर योगी बनने का, पुण्य का खाता जमा करने का, और बड़े ते बड़े परिवार के नशे में, खुशी में रहने का। तो पंजाब वालों को चांस मिला है, हर ज़ोन को मिलता है लेकिन लक्ष्य रखो कि तीनों ही फायदे हुए! कितना पुण्य का खाता जमा किया? सहज याद की प्रोग्रेस कितनी की? और संगठन या परिवार के स्नेह, समीपता का कितना अनुभव किया? यह तीन ही बातों का रिजल्ट हर एक को अपना निकालना चाहिए। ड्रामा में चांस तो मिलता है लेकिन चांस लेने वाले चांसलर बनो। तो पंजाब वाले तो होशियार हैं ना! अच्छा है। अच्छी संख्या में भी आये हो, और सेवा भी खुली दिल से मिली है। आने वाली संख्या भी अच्छी आई है। अच्छा है संगठन अच्छा है।

(आज दो विंग - ग्राम विकास विंग और महिला विंग मीटिंग के लिए आये है)

महिला विंग

इसमें मैजारिटी टीचर्स हैं क्या? टीचर्स हाथ उठाओ। अच्छा चांस हैं। सेवा की सेवा और सेवा के पहले मेवा। संगठन का और बाप से मिलन का मजा लेना। तो सेवा और मेवा दोनों मिल गया। अच्छा है। अभी कोई नया प्लैन बनाया? जो भी चाहे महिलाओं का है, चाहे किसी भी वर्ग के ग्रुप्स बने हुए हैं। तो हर एक ग्रुप कुछ विशेष प्रैक्टिकल **चलन और चेहरे पर कोई न कोई गुण या शक्ति का बीड़ा उठाये** तो हम यह ग्रुप, महिला ग्रुप इस गुण या शक्ति का प्रैक्टिकल प्रत्यक्ष रूप में लायेंगे। ऐसे हर एक वर्ग वाले कोई न कोई अपने विशेष फिक्स करे और उसकी आपस में जैसे सर्विस की रिजल्ट नोट करते हो ना, ऐसे आपस में चाहे लिखापढ़ी हो, चाहे संगठन हो, यह भी चेक करते रहें। तो पहले आप लोग करके दिखाना। महिला विंग करके दिखाओ। ठीक है ना। हर एक विंग को कुछ

न कुछ अपना प्लैन बनाना है और समय फिक्स करे कि इतने समय में इतनी परसेन्टेज़ प्रैक्टिकल में लानी है। फिर जो बापदादा चाहते हैं ना, चलन और चित्र पर आवे, वह आ जायेगा। तो यह प्लैन बना करके बापदादा को देना। हर एक विंग क्या करेगा? सेवा का प्लैन जैसे नोट करते हो ना, वैसे यह करके देना। ठीक है ना! करके देना। अच्छा है छोटा-छोटा संगठन कमाल कर सकता है। ठीक है। क्या समझती हो टीचर्स? कर सकते हैं? कर सकते हैं? तो प्लैन बनाना। अच्छा। मुबारक हो सेवा की।

ग्राम विकास विंग

अभी तक ग्राम विकास वालों ने कितने गांव परिवर्तन किया है? कितने गांव में किया है? (7 गांव में किया है, एक गांव में 75 परसेन्टेज तक काम हुआ है। इस मीटिंग में भी प्रोग्राम बनाया है – **"समय की पुकार - स्वच्छ स्वर्णिम ग्राम्य भारत"** इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत गांव-गांव को व्यसन मुक्त और स्वच्छ बनाने की सेवा करेंगे) अच्छा है – प्रैक्टिकल है ना। इसकी टोटल रिजल्ट जो है प्रेसीडेंट, प्राइममिनिस्टर के पास जाती है? (अभी नहीं भेजी है) भेजनी चाहिए क्योंकि यह जो गांव-गांव में प्रैक्टिकल कर रहे हो, यह तो गवर्मेन्ट का ही काम है लेकिन आप सहयोगी बन रहे हो तो रिजल्ट देख करके अच्छा मानेंगे। एक ऐसा बुलेटिन तैयार करो जिससे गवर्मेन्ट के सभी मुख्य लोगों को वह बुलेटिन जाये, किताब नहीं, मैंगजीन नहीं, शार्ट में टोटल रिजल्ट सब तरफ की भेजनी चाहिए। अच्छा है – मुबारक हो। अच्छा – (बीच-बीच में खांसी आ रही है) आज बाजा शान्ति चाहता है। अच्छा –

बापदादा के पास, चारों ओर के सेवा की रिजल्ट भी आती रहती है और विशेष आजकल कोई भी कोना रह नहीं जाए – सबको सन्देश मिल

जाए, यह प्लैन जो प्रैक्टिकल में कर रहे हैं, उसकी रिजल्ट भी अच्छी है। बापदादा के पास डबल विदेशी बच्चों के समाचार मिले हैं और जिन्होंने भी मेगा प्रोग्राम (भारत में) किये हैं, उन्हों का समाचार भी सब मिला है। चारों ओर सेवा की रिजल्ट सफलता पूर्वक निकली है। तो बच्चों ने जैसे सेवा में सन्देश देने की रिजल्ट में सफलता प्राप्त की है ऐसे ही वाणी द्वारा, सम्पर्क द्वारा और साथ-साथ अपने चेहरे द्वारा साक्षात्कार फरिश्ते रूप का कराते चलो।

अच्छा – जो पहले बारी आये हैं वह हाथ उठाओ। बहुत हैं। अच्छा है टू लेट के बोर्ड के पहले आ गये हो, अच्छा है, चांस लो। कमाल करके दिखाओ। हिम्मत रखो, बापदादा की मदद हर बच्चे के साथ है। अच्छा–

बापदादा चारों ओर के साकार सम्मुख बैठे हुए बच्चों को और अपने-अपने स्थान पर, देश में बाप से मिलन मनाने वाले चारों ओर के बच्चों को बहुत-बहुत सेवा की, स्नेह की और पुरुषार्थ की मुबारक तो दे रहे हैं लेकिन पुरुषार्थ में तीव्र पुरुषार्थी बन अब आत्माओं को दु:ख अशान्ति से छुड़ाने का और तीव्र पुरुषार्थ करो। दु:ख, अशान्ति, भ्रष्टाचार अति में जा रहा है, अभी अति का अन्त कर सभी को मुक्तिधाम का वर्सा बाप से दिलाओ। ऐसे सदा दृढ़ संकल्प वाले बच्चों को यादप्यार और नमस्ते। ओम् शान्ति।

15-12-2004

बापदादा की विशेष आशा – हर एक बच्चा दुआयें दे और दुआयें ले

आज बापदादा अपने चारों ओर के बेफिक्र बादशाहों की सभा को देख रहे हैं। यह राज सभा सारे कल्प में इस समय ही है। रूहानी फ़खुर में रहते हो इसलिए बेफिक्र बादशाह हो। सवेरे उठते हैं तो भी बेफिक्र, चलते फिरते, कर्म करते भी बेफिक्र और सोते हो तो भी बेफिक्र नींद में सोते हो। ऐसे अनुभव करते हो ना! बेफिक्र हैं? बने हैं वा बन रहे हैं? बन गये हैं ना! बेफिक्र और बादशाह हो, स्वराज्य अधिकारी इन कर्मेन्द्रियों के ऊपर राज्य करने वाले बेफिक्र बादशाह हो अर्थात् स्वराज्य अधिकारी हो। तो ऐसी सभा आप बच्चों की ही है। कोई फिक्र है? है कोई फिक्र? क्योंकि अपने सारे फिकर बाप को दे दिये हैं। तो बोझ उतर गया ना! फिकर खत्म और बेफिक्र बादशाह बन अमूल्य जीवन अनुभव कर रहे हो। सबके सिर पर पवित्रता के लाइट का ताज स्वत: ही चमकता है। बेफिक्र के ऊपर लाइट का ताज है, अगर कोई फिकर करते हो, कोई बोझ अपने ऊपर उठा लेते हो तो मालूम है सिर पर क्या आ जाता है? बोझ के टोकरे आ जाते हैं। तो सोचो ताज और टोकरे दोनों सामने लाओ, क्या अच्छा लगता? टोकरे अच्छे लगते या लाइट का ताज अच्छा लगता? बोलो, टीचर्स क्या अच्छा लगता है? ताज अच्छा लगता है ना! सभी कर्मेन्द्रियों के ऊपर राज्य करने वाले बादशाह हो। पवित्रता लाइट का ताजधारी बनाती है इसलिए आपके यादगार जड़ चित्रों में डबल ताज दिखाया है। द्वापर से लेकर बादशाह तो बहुत बने हैं, राजे तो बहुत बने हैं लेकिन डबल ताजधारी कोई नहीं बना। बेफिक्र बादशाह स्वराज्य अधिकारी भी कोई नहीं बना क्योंकि पवित्रता की शक्ति मायाजीत, कर्मेन्द्रियां जीत विजयी बना देती है। बेफिक्र बादशाह की निशानी है – **सदा स्वयं भी सन्तुष्ट और औरों को**

भी सन्तुष्ट करने वाले। कभी भी कोई अप्राप्ति है ही नहीं जो असन्तुष्ट हो। जहाँ अप्राप्ति है वहाँ असन्तुष्टता है। जहाँ प्राप्ति है वहाँ सन्तुष्टता है। ऐसे बने हो? चेक करो - सदा सर्व प्राप्ति स्वरूप, सन्तुष्ट हैं? गायन भी है– अप्राप्त नहीं कोई वस्तु देवताओं के नहीं लेकिन ब्राह्मणों के खज़ाने में। सन्तुष्टता जीवन का श्रेष्ठ शृंगार है, श्रेष्ठ वैल्यु है। तो सन्तुष्ट आत्मायें हो ना!

बापदादा ऐसे बेफिक्र बादशाह बच्चों को देख खुश होते हैं। वाह मेरे बेफिक्र बादशाह वाह! वाह! वाह! हो ना! हाथ उठाओ जो बेफिक्र हैं। बेफिक्र? फिकर नहीं आता? कभी तो आता है? नहीं? अच्छा है। बेफिक्र बनने की विधि बहुत सहज है, मुश्किल नहीं है। सिर्फ एक शब्द की मात्रा का थोड़ा सा अन्तर है। वह शब्द है - मेरे को तेरे में परिवर्तन करो। मेरा नहीं तेरा, तो हिन्दी भाषा में मेरा भी लिखो और तेरा भी लिखो तो क्या फ़र्क होता है, मे और ते का? लेकिन फ़र्क इतना हो जाता है। तो आप सब मेरे-मेरे वाले हो या तेरे-तेरे वाले हो? मेरे को तेरे में परिवर्तन कर लिया? नहीं किया हो तो कर लो। मेरा-मेरा अर्थात् दास बनने वाला, उदास बनने वाला। माया के दास बन जाते हैं ना तो उदास तो होंगे ना! उदासी अर्थात् माया के दासी बनने वाले। तो आप मायाजीत हो, माया के दास नहीं। तो उदासी आती है? कभी-कभी टेस्ट कर लेते हो, क्योंकि 63 जन्म उदास रहने का अभ्यास है ना! तो कभी-कभी वह इमर्ज हो जाती है। इसलिए बापदादा ने क्या कहा? हर एक बच्चा बेफिक्र बादशाह है। अगर अभी भी कहाँ कोने में कोई फिकर रख दिया हो तो दे दो। अपने पास बोझ क्यों रखते हो? बोझ रखने की आदत पड़ गई है? जब बाप कहते हैं बोझ मेरे को दे दो, आप लाइट हो जाओ, डबल लाइट। डबल लाइट अच्छा या बोझ अच्छा? तो अच्छी तरह से चेक करना। अमृतवेले जब उठो तो चेक करना कि विशेष वर्तमान समय सबकान्सेस में भी कोई बोझ तो नहीं है?

सबकान्सेस तो क्या स्वप्न मात्र भी बोझ का अनुभव नहीं हो। पसन्द तो डबल लाइट है ना! तो विशेष यह होम वर्क दे रहे हैं, अमृतवेले चेक करना। चेक करना तो आता है ना, लेकिन चेक के साथ, सिर्फ चेक नहीं करना चेंज भी करना। मेरे को तेरे में चेंज कर देना। मेरा, तेरा। तो चेक करो और चेंज करो क्योंकि बापदादा बार-बार सुना रहे हैं – समय और स्वयं दोनों को देखो। समय की रफ्तार भी देखो और स्वयं की रफ्तार भी देखो। फिर यह नहीं कहना कि हमको तो पता ही नहीं था, समय इतना तेज चला गया। कई बच्चे समझते हैं कि अभी थोड़ा ढीला पुरुषार्थ अगर है भी तो अन्त में तेज कर लेंगे। लेकिन बहुतकाल का अभ्यास अन्त में सहयोगी बनेगा। बादशाह बनके तो देखो। बने हैं लेकिन कोई बने हैं, कोई नहीं बने हैं। चल रहे हैं, कर रहे हैं, सम्पन्न हो जायेंगे....। अब चलना नहीं है, करना नहीं है, उड़ना है। अभी उड़ने की रफ्तार चाहिए। पंख तो मिल गये हैं ना! उमंग-उत्साह और हिम्मत के पंख सबको मिले हैं और बाप का वरदान भी है, याद है वरदान? हिम्मत का एक कदम आपका और हजार कदम मदद बाप की, क्योंकि बाप का बच्चों से दिल का प्यार है। तो प्यार वाले बच्चों की बाप मेहनत नहीं देख सकते। मुहब्बत में रहो तो मेहनत समाप्त हो जायेगी। मेहनत अच्छी लगती है क्या? थक तो गये हो। 63 जन्म भटकते, भटकते मेहनत करते थक गये थे और बाप ने अपनी मुहब्बत से भटकने के बजाए तीन तख्त के मालिक बना दिया। तीन तख्त जानते हो? जानते क्या हो लेकिन तख्त निवासी हो। अकालतख्त निवासी भी हो, बापदादा के दिलतख्त नशीन भी हो और भविष्य विश्व राज्य के तख्त नशीन भी हो। तो बापदादा सभी बच्चों को तख्त नशीन देख रहे हैं। ऐसा परमात्म दिलतख्त सारे कल्प में अनुभव नहीं कर सकेंगे। क्या समझते हैं पाण्डव? बादशाह हैं? हाथ उठा रहे हैं। तख्त नहीं छोड़ना। देह भान में आये अर्थात् मिट्टी में आ गये। यह देह मिट्टी है। तख्त नशीन

बने तो बादशाह बने।

बापदादा सभी बच्चों के पुरुषार्थ का चार्ट चेक करते हैं। चार ही सबजेक्ट में कौन-कौन कहाँ तक पहुंचा है? तो बापदादा ने हर एक बच्चे का चार्ट चेक किया कि बापदादा ने जो भी खज़ाने दिये हैं वह सर्व खज़ाने कहाँ तक जमा किये हैं? तो जमा का खाता चेक किया क्योंकि खज़ाने बाप ने सबको एक जैसे, एक जितना दिया है, कोई को कम, कोई को ज्यादा नहीं दिया है। खज़ाने जमा होने की निशानी क्या है? खज़ाने का तो मालूम ही है ना, सबसे बड़ा खज़ाना है श्रेष्ठ संकल्प का खज़ाना। संकल्प भी खज़ाना है, तो वर्तमान समय भी बहुत बड़ा खज़ाना है क्योंकि वर्तमान समय में जो कुछ प्राप्त करने चाहे, जो वरदान लेने चाहे, जितना अपने को श्रेष्ठ बनाने चाहे, उतना अभी बना सकते हैं। अब नहीं तो कब नहीं। जैसे संकल्प के खज़ाने को व्यर्थ गंवाना अर्थात् अपने प्राप्तियों को गंवाना। ऐसे ही समय के एक सेकण्ड को भी व्यर्थ गंवाया, सफल नहीं किया तो बहुत गंवाया। साथ में ज्ञान का खज़ाना, गुणों का खज़ाना, शक्तियों का खज़ाना और हर आत्मा और परमात्मा द्वारा दुआओं का खज़ाना। सबसे सहज है पुरुषार्थ में ''दुआयें दो और दुआयें लो।'' सुख दो और सुख लो, न दु:ख दो न दु:ख लो। ऐसे नहीं कि दु:ख दिया नहीं लेकिन ले लो तो भी दु:खी तो होंगे ना! तो दुआयें दो, सुख दो और सुख लो। दुआयें देना आता है? आता है? लेना भी आता है? जिसको दुआयें लेना और देना आता है वह हाथ उठाओ। अच्छा - सभी को आता है? अच्छा - डबल फॉरेनर्स को भी आता है? मुबारक है, देने आता है लेने आता है तो मुबारक है। सभी को मुबारक है, अगर लेने भी आता और देने भी आता फिर और चाहिए क्या। दुआयें लेते जाओ दुआयें देते जाओ, सम्पन्न हो जायेंगे। कोई बद-दुआ देवे तो क्या करेंगे? लेंगे? बद-दुआ आपको देता है तो आप क्या करेंगे? लेंगे? अगर बद-दुआ मानो ले लिया तो आपके अन्दर स्वच्छता

रही? बद-दुआ तो खराब चीज़ है ना! आपने ले ली, अपने अन्दर स्वीकार कर ली तो आपका अन्दर स्वच्छ तो नहीं रहा ना! अगर ज़रा भी डिफेक्ट रहा तो परफेक्ट नहीं बन सकते। अगर खराब चीज़ कोई देवे तो क्या आप ले लेंगे? कोई बहुत सुन्दर फल हो लेकिन आपको खराब हुआ दे देवे, फल तो बढ़िया है फिर ले लेंगे? नहीं लेंगे ना कि कहेंगे अच्छा तो है, चलो दिया है तो ले लें। कभी भी कोई बद-दुआ दे तो आप मन में अन्दर धारण नहीं करो। समझ में आता है यह बद-दुआ है लेकिन बद-दुआ अन्दर धारण नहीं करो, नहीं तो डिफेक्ट हो जायेगा। तो अभी यह वर्ष, अभी थोड़े दिन पड़े हैं पुराने वर्ष में लेकिन अपने दिल में दृढ़ संकल्प करो, अभी भी किसकी बद-दुआ मन में हो तो निकाल दो और कल से दुआ देंगे, दुआ लेंगे। मंजूर है? पसन्द है? पसन्द है या करना ही है? पसन्द तो है लेकिन जो समझते हैं करना ही है, कुछ भी हो जाये, लेकिन करना ही है, वह हाथ उठाओ। करना ही है।

जो स्नेही सहयोगी आज आये हैं वह हाथ उठाओ। तो जो स्नेही सहयोगी आये हैं, बापदादा उन्हों को मुबारक दे रहे हैं क्योंकि सहयोगी तो हो, स्नेही भी हो लेकिन आज एक और कदम उठाके बाप के घर में वा अपने घर में आये हो, तो अपने घर में आने की मुबारक है। अच्छा जो स्नेही सहयोगी आये हैं वह भी समझते हैं कि दुआयें देंगे और लेंगे? समझते हो? हिम्मत रखते हो? जो स्नेही सहयोगी हिम्मत रखते हैं, मदद मिलेगी, लम्बा हाथ उठाओ। अच्छा। फिर तो आप भी सम्पन्न हो जायेंगे, मुबारक हो। अच्छा जो गाडली स्टूडेन्ट रेग्युलर हैं, चाहे ब्राह्मण जीवन में बापदादा से मिलने पहली बार आये हैं लेकिन अपने को ब्राह्मण समझते हैं, रेग्युलर स्टूडेन्ट समझते हैं वह अगर समझते हैं कि करना ही है, वह हाथ उठाओ। दुआ देंगे, दुआ लेंगे? करेंगे? टीचर्स उठा रही हैं? यह कैबिन वाले नहीं उठा रहे हैं। यह समझते हैं हम तो देते ही हैं। अभी करना ही है।

कुछ भी हो जाए, हिम्मत रखो। दृढ़ संकल्प रखो। अगर मानो कभी बद-दुआ का प्रभाव पड़ भी जावे ना तो 10 गुणा दुआयें ज्यादा दे करके उसको खत्म कर देना। एक बद-दुआ के प्रभाव को 10 गुणा दुआयें देके हल्का कर देना फिर हिम्मत आ जायेगी। नुकसान तो अपने को होता है ना, दूसरा तो बद-दुआ देके चला गया लेकिन जिसने बद-दुआ समा ली, दु:खी कौन होता है? लेने वाला या देने वाला? देने वाला भी होता है लेकिन लेने वाला ज्यादा होता है। देने वाला तो अलबेला होता है।

आज बापदादा अपने दिल की विशेष आशा सुना रहे हैं। बापदादा की सभी बच्चों के प्रति, एक-एक बच्चे के प्रति चाहे देश, चाहे विदेश में हैं, चाहे सहयोगी हैं क्योंकि सहयोगियों को भी परिचय तो मिला है ना। तो जब परिचय मिला है तो परिचय से प्राप्ति तो करनी चाहिए ना। तो बापदादा की यही आशा है कि **हर बच्चा दुआयें देता रहे।** दुआओं का खज़ाना जितना जमा कर सको उतना करते जाओ क्योंकि इस समय जितनी दुआयें इकट्ठी करेंगे, जमा करेंगे उतना ही जब आप पूज्य बनेंगे तो आत्माओं को दुआयें दे सकेंगे। सिर्फ अभी दुआयें आपको नहीं देनी हैं, द्वापर से लेके भक्तों को भी दुआयें देनी हैं। तो इतना दुआओं का स्टॉक जमा करना है। राजा बच्चे हो ना! बापदादा हर एक बच्चे को राजा बच्चा देखते हैं। कम नहीं। अच्छा।

सेवा का टर्न – दिल्ली ज़ोन

अच्छा दिल्ली वाले सभी उठो। दिल्ली का नाम सुन करके सब खुश होते हो ना! क्योंकि कल्प-कल्प की आपकी राजधानी है। वैसे देखो ड्रामा में राजधानी दिल्ली तो है ही लेकिन सेवा की आरम्भ भी दिल्ली से हुई। आदि से लेकर भिन्न-भिन्न सेवाओं की नई-नई इन्वेन्शन भी दिल्ली वालों ने निकाली है। औरों ने भी निकाली है लेकिन दिल्ली वालों ने भी निकाली

है। यह यज्ञ सेवा का चांस मिला है। यज्ञ सेवा का फल बहुत बड़ा है क्योंकि यज्ञ सेवा अर्थात् ब्राह्मण आत्माओं की सेवा। भक्ति में तो 8-10 ब्राह्मणों को भोजन खिलाया, कुछ किया तो समझते हैं बड़ा पुण्य हो गया लेकिन यहाँ 10 हजार, 12 हजार, 8 हजार ब्राह्मणों की सेवा का चांस मिलता है। यज्ञ पिता के यज्ञ की सेवा है। ब्रह्मा भोजन का, यज्ञ का कणा-कणा बहुत वैल्युबुल है और आप ब्राह्मणों को वह ब्रह्मा भोजन कितना प्यार से प्राप्त होता है। यह ब्रह्मा भोजन कम नहीं है। जिसके भी भाग्य में ब्रह्मा भोजन होता है उनको पता नहीं होता है कि इसका फल क्या मिलना है लेकिन मिलता जरूर है। इसलिए भक्ति में भी कहते हैं शिव के भण्डारे भरपूर काल कटंक सब दूर। तो खाने वाले को कितना फल होगा। अच्छा है, दिल्ली में सेवा के प्लैन तो बनाते रहते हैं लेकिन एक विशेषता बापदादा ने सुनी, जो अच्छी लगी कि दिल्ली वालों ने अपने निमित्त बने हुए प्रेजीडेंट की सेवा बहुत अच्छी की है और वह निमित्त बन औरों को भी मैसेज देता रहता है। तो अच्छा माइक तैयार किया है ना, पॉवरफुल। अभी दिल्ली वालों को सेवा का और नया प्लैन निकालना चाहिए। वा कोई भी जोन, बॉम्बे भी कर सकता, हर एक ज़ोन में कोई न कोई प्लैन की इन्वेन्शन करने वाला है। अभी मेगा प्रोग्राम भी हो गये, वह भी कॉमन हो गये, देखो, यह विशेष आपके दादी की इन्वेन्शन थी। और कितना सहज हो रहा है। पहले समझते थे लाख को इकट्ठा करना बहुत मेहनत की बात है लेकिन अभी जहाँ भी हुआ है, बड़ी दिल से किया है और बड़ी सफलता मिली है। बापदादा नाम नहीं लेते लेकिन रिजल्ट देखी गई कि जितनी बड़ी दिल से किया है उतनी सफलता मिली है। सफलता तो मिलनी है ही। सफलता तो ब्राह्मण आत्माओं के गले का हार है। जन्म सिद्ध अधिकार है। तो दिल्ली वालों को अभी कुछ नया करना चाहिए। दिल्ली वाले ठीक है ना! इन्वेन्शन करने वाले भी बहुत हैं। अच्छा है। हर एक वर्ग वालों ने जो भी सेवा अभी

तक की है, अच्छी की है। अभी और अच्छे ते अच्छी करेंगे। अच्छी की है और अच्छे ते अच्छी होती रहेगी। आखिर साइलेन्स की शक्ति को साइंस की शक्ति पर विजय तो प्राप्त करनी ही है। अभी साइंस वाले भी सम्पर्क में आ रहे हैं। जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं, परिचय मिल गया है, समझते हैं कार्य अच्छा है, उन्हों को ज्ञान का कणा-दाना भी बुद्धि में स्वीकार हुआ, उसका फल जरूर मिलेगा। ज्ञान का कणा-दाना भी विनाश नहीं होता है, अविनाशी फल है। अभी दिल्ली वालों ने समझा ना – क्या करना है? और माइक तैयार करो। चार पांच तैयार किया है, बापदादा के पास लिस्ट पहुंची है लेकिन और तैयार करो। सभी ज़ोन जो आज आये हैं। सेवा का सबूत लेके आये हैं ना।

स्नेही सहयोगी जो आये हैं ना वह उठो, थोड़ा सा खड़े हो जाओ। बैठे-बैठे तो थक गये होंगे अभी थोड़ा खड़े हो जाओ। अच्छा – बहुत अच्छे-अच्छे आये हैं। आप लोगों को पता है कि आप किसके मैसेन्जर बने हुए हो? गॉडली मैसेन्जर बने हुए हो। गॉड का परिचय देते हो ना! तो गॉडली मैसेन्जर हो। इतनी भी सेवा करते हो उसका फल आपका निश्चित है, कोई टाल नहीं सकता। खुशखबरी यह है कि आप ज़ो गॉडली मैसेन्जर बन औरों को सन्देश देते हो उनको अपनी नई दुनिया की गेट पास तो मिल गई है। केवल गेट पास मिली है, अभी सीट की पास लेनी है। अच्छा है जो भी मिलता है उनको रास्ता तो दिखाते हो ना! तो पुण्य का काम तो कर रहे हो ना! तो पुण्य का खाता कभी खत्म नहीं होता है। तो पुण्य आत्मायें तो बन गये हो लेकिन अभी सिर्फ पुण्य आत्मा नहीं बनना, थोड़े में खुश होने वाले हो क्या! थोड़े में खुश होने वाले हो या सब कुछ लेना है? सब कुछ लेना है। तो पुण्य आत्मा तो बने हो, पुण्य का काम किया है ना, कर रहे हो अभी भी करते रहेंगे लेकिन जो बाप चाहता है कि मेरे बच्चे राजा बच्चे बन जायें, स्वराज्य अधिकारी बन जायें। तो बनेंगे ना? बनना है ना! बनना है?

कांध तो हिलाओ। बहुत अच्छा किया। आप मेहमान नहीं हो, गेस्ट नहीं हो, होस्ट हो। अपने घर में आये हो। इतना बड़ा घर आपका अच्छा लगा ना! अपना घर अच्छा लगा तो अभी आते रहना। यहाँ रिवाज है, जो आते हैं ना और उसको जाना तो पड़ता है, तो जब जाते हैं ना तो उसको दादी गो सून, कम सून की टोली खिलाती है। आपको भी मिलेगी। तो गो सून कम सून, अपने घर में आते रहना, क्योंकि आना ही है। आना ही है ना! बहुत अच्छा। सभी बच्चे भी आपको देख करके खुश हो रहे हैं क्योंकि सेवा का प्रत्यक्ष सबूत लाये हैं ना, तो सभी खुश हो रहे हैं। जिन्होंने भी आपको लाया है वह खुश हो रहे हैं और 10 हजार ब्राह्मण आत्माओं के द्वारा आपको मुबारक हो, मुबारक हो। सब ठीक हैं? आराम से हैं? भले पधारे। फर्स्ट ग्रुप में आये हो। फर्स्ट ग्रुप का भी तो महत्व होता है ना! अच्छा – बैठ जाओ, थक गये होंगे।

बिजनेस विंग – बिजनेस विंग वाले उठो। बिजनेस विंग वालों ने कौन सा माइक तैयार किया है? किया है? किया है ना? क्योंकि बिजनेस वालों को बिजनेस करने, कराने की आदत तो है ना। तो बाप से बिजनेस कराना भी बिजनेस ग्रुप को सहज है। अच्छा है। बापदादा ने देखा है कि जब से वर्गो की सेवा के लिए वर्ग बने हैं, तो हर एक को सेवा का विस्तार करने का उमंग-उत्साह अच्छा है। अभी और भी बापदादा ने तो कहा ना, हर बात में बापदादा को और तीव्रता चाहिए। पुरुषार्थ में भी तो सेवा में भी। भागदौड़ तो कर रहे हैं, समाचार मिलता रहता है लेकिन अभी समय की रफ्तार समान थोड़ा और रफ्तार को तेज करो क्योंकि अचानक कुछ भी हो सकता है। तो उल्हना नहीं रह जाए। बापदादा को यही है कि कोई भी आत्मा का उल्हना नहीं रह जाए कि हमें तो मालूम ही नहीं है। बाकी बापदादा को सेवा के समाचार मिलते रहते हैं। अच्छा कर रहे हैं। अपने-अपने एरिया में कोई न कोई प्रोग्राम बनाते ही होंगे ना! चारों ओर धूम मचा

लो। प्रभु सन्देश, प्रभु सन्देश की धूम मचा दो। अच्छा।

सोशल विंग

सोशल विंग वालों ने जो भी सोशल वर्कर्स हैं उन सबके जो भी स्थान बने हुए हैं, उन्हों को सन्देश दे दिया है? जो भी जिस भी स्टेट से आते हो, उस स्टेट वालों की जिम्मेवारी है कि उस स्टेट में आपके वर्ग का कोई सन्देश से रह नहीं जाए। करते तो हो, बापदादा को मालूम है, चारों ओर प्रोग्राम बने हुए भी होते हैं लेकिन हर स्टेट के जो हर वर्ग वाले हैं उनको कम से कम अपनी स्टेट में ऐसी सेवा करनी चाहिए जो कोई रह नहीं जाये। तो हर स्थान पर कर तो रहे हो, होता रहता है। बापदादा ने कहा, रिपोर्ट पहुंचती है, कर रहे हैं और थोड़ा तेज करो क्योंकि बापदादा समय की रफ्तार को देख इशारा दे रहा है। बाकी अच्छी सेवा कर रहे हो, मुबारक हो। और भी अच्छे ते अच्छी करते रहेंगे।

ट्रांसपोर्ट विंग

कितनी आत्माओं को मंजिल तक पहुंचाया है? क्योंकि ट्रांसपोर्ट की तो जिम्मेवारी है मंजिल पर पहुंचाना। बापदादा खुश है, सेवा का उमंग अच्छा है। सबको अच्छा चांस मिल जाता है, सेवा की मीटिंग भी हो जाती और फिर मिलन भी हो जाता, डबल कमाई हो जाती है। सभी वर्ग वाले होशियार हैं, डबल चांस वाले हैं। अभी मंसा सेवा को भी और तीव्र करो क्योंकि वाणी की सेवा से सारे विश्व तक पहुंचने में टाइम लगता है लेकिन मंसा सेवा फास्ट सेवा है और पॉवरफुल भी है और मेहनत भी कम है, सिर्फ पॉवरफुल स्टेज बनानी है। तो सदैव मंसा, वाचा, कर्मणा तीनों सेवा इक्ट्ठी कर सकते हो, एक समय में। कर्मणा अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क में जो आते हैं उन्हों के सम्बन्ध में आना भी कर्मणा है। सम्बन्ध द्वारा भी बहुत

सेवा होती है। तो सभी वर्ग वालों को जैसे और प्लैन बनाते हो, सेवा के साधन बनाते हो, ऐसे अपने-अपने वर्ग में मंसा सेवा की भी कोई विधि बनाओ जो विशेष मंसा सेवा भी आत्माओं की हो। अच्छा। मुबारक है, अच्छी सेवा है। बापदादा ने कह दिया है सभी वर्गो की रिजल्ट अच्छी है।

यूथ ग्रुप

यूथ ग्रुप को मुबारक हो। देखो, थोड़े समय में आर्डर मिलने से पहुंच गये हो। इसकी विशेष मुबारक है। अच्छा यहाँ तो आये लेकिन मंसा सेवा की? जो विशेष आत्मायें आनी थी उन्हों की यहाँ बैठे मंसा सेवा की? कारण अकारण आ नहीं सके लेकिन मंसा सेवा से उन आत्माओं को कुछ पहुंचाया कि सिर्फ मीटिंग की? वह आत्मायें भी याद तो करती होंगी, आना था, पहुंचना था। अच्छा है यूथ ग्रुप और बढ़ता जाए, तो भारत की समस्या खत्म हो जाए। यूथ का कर्तव्य है अपने-अपने स्थान के यूथ को ब्राह्मण यूथ बनावे। भ्रष्टाचार से बचाये, श्रेष्ठाचारी बनाये। अभी देखो गवर्मेन्ट तक भी आवाज पहुंचा है लेकिन स्पष्ट रिजल्ट उनकी बुद्धि में क्लीयर हो जाए, तो उन्हों को और नजदीक लाना पड़ेगा। हर शहर के, स्थान के जो भ्रष्टाचार, झगड़ा करने वाले यूथ ग्रुप हैं उन्हों की सेवा का कुछ न कुछ तरीका बनाना चाहिए। कोई ऐसा यूथ का परिवर्तन करके दिखाओ। हर एक शहर में यूथ ग्रुप तो होता ही है ना, तो हर एक शहर वाले कोई दो तीन यूथ ग्रुप को परिवर्तन करके दिखावे जो सबके ध्यान पर आ जाये। जैसे जेल में सेवा की थी तो कई परिवर्तन हुए जो जहाँ तहाँ अनुभव सुनाते थे, ऐसे ही कोई यूथ ग्रुप की जो एसोशियेशन्स हैं उसका परिवर्तन करके दिखाओ। और वह यूथ, दूसरे यूथ को अनुभव सुनावें। कर रहे हैं, अच्छा है। लेकिन अभी ऐसा कोई एक्जैम्पल निकालो, जो अति झगड़ालू हो, उसको ठीक करके दिखाओ, नामीग्रामी हो। है ना हिम्मत? ऐसा कोई

परिवर्तन करके दिखाओ, जैसे बापदादा कहते हैं ना माइक बनाओ, वैसे आप झगड़ालू को शान्तमय बनाके एक्जैम्पुल दिखाओ, ऐसा ग्रुप बनाके यहाँ लाना। देखो कितने यूथ आये हैं, बहुत हैं। अच्छे-अच्छे हैं और सब तरफ के हैं। फॉरेनर्स भी हैं। अच्छा है। अभी कोई आवाज फैलाओ। थोड़ा-थोड़ा सेवा तो कर रहे हो, खाली तो नहीं बैठे हो लेकिन कोई ऐसे जैसे बॉम्ब डालते हैं ना तो आवाज हो जाता है, ऐसे कोई आत्मिक बॉम्ब लगाओ। एटम बॉम्ब नहीं, आत्म बॉम्ब। अच्छा - मुबारक हो बहुत। टाइम पर पहुंचने की मुबारक हो। अच्छा।

डबल् विदेशी

हाथ हिलाओ। सभी ने देखा। डबल विदेशियों को बापदादा सदा डबल मुबारक देते हैं क्योंकि मैजारिटी डबल विदेशियों की विशेषता है कि वह डबल कार्य कर रहे हैं। लौकिक भी कर रहे हैं और सेन्टर भी चला रहे हैं। चाहे सेन्टर चला रहे हैं, चाहे सेन्टर पर सहयोगी हैं लेकिन मैजारिटी डबल काम कर रहे हैं। वैसे भारत में भी हैं लेकिन यहाँ मैजारिटी ऐसे हैं। और बापदादा कभी-कभी जानबूझ के सीन देखते हैं, बापदादा के पास नेचरल टी.वी. है, यह टी.वी. नहीं। देखते हैं कैसे भागते हैं, नाश्ता किया, यह किया वह किया, भागा। अच्छा लगता है। ऐसे ही पुरुषार्थ में भी डबल मार्क्स लेना। लेने वाले हैं और परिवर्तन किया भी है और करने का उमंग भी अच्छा है। बापदादा को डबल विदेशियों की नेचरल नेचर एक बहुत अच्छी लगती है कि साफ दिल हैं। जो भी होगा छिपायेंगे नहीं, स्पष्ट। गिरेंगे तो भी स्पष्ट, चढ़ेंगे तो भी स्पष्ट। तो साफ दिल बापदादा को प्रिय लगती है। अच्छा है। डबल मुबारक हो। आप लोगों को भी देखकर सभी खुश होते हैं। अगर कोई भी टर्न में डबल विदेशी नहीं होते हैं ना तो संगठन में कमी लगती है इसलिए बहुत अच्छा है। हर ग्रुप में आते रहें। शोभा है ना। हर

एक बच्चा इस दरबार का श्रृंगार है। तो उड़ते रहना, चलना नहीं, दौड़ना नहीं, हाई जम्प नहीं देना, उड़ना। उड़ने वाले। देखो डबल विदेशी स्थूल में भी उड़ने के बिना पहुंच नहीं सकते हैं, उड़के ही आना पड़ता है। तो इस सम्पन्न बनने की मंजिल पर पहुंचने में भी उड़ती कला में रहना। अच्छा – मुबारक हो। अच्छा –.

ऐसे नहीं कि जो किसी भी वर्ग में नहीं उठे उन्हों को मुबारक नहीं है, उन्हों को पदमगुणा मुबारक है। और जो दूर बैठे सुन रहे हैं, देख रहे हैं, कोई सुनने वाले हैं, कोई देखने और सुनने वाले हैं, दोनों को, चारों ओर के बच्चों को बहुत-बहुत-बहुत-बहुत मुबारक और याद क्योंकि हर सीजन में, हर टर्न में सभी पत्र बहुत भेजते हैं। तो बापदादा को वह पत्र पहुंचते हैं, ऐसे ही नहीं जाते हैं, पहुंचते हैं। कोई प्यार के पत्र भेजते, कोई अपने पुरुषार्थ के पत्र भेजते, कोई सेवा के पत्र भेजते, कोई प्रामिस के पत्र भेजते हैं, प्रामिस भी बहुत अच्छी-अच्छी करते हैं। तो बापदादा के पास सब प्रकार के और सब तरफ से पत्र पहुंच जाते हैं। आपके मुआफ़िक बापदादा पत्र बैठ पढ़ते तो नहीं हैं लेकिन पहुंच जाते हैं दिल में। पत्रों का पोस्ट आफिस बापदादा की दिल में है, तो वहाँ पहुंच जाते हैं।

अच्छा – बापदादा की आशा अण्डरलाइन की? जिसने की वह हाथ उठाओ, कर ली। अच्छा। बापदादा ने 6 मास का होम वर्क भी दिया है, याद है? टीचर्स को याद है? लेकिन यह दृढ़ संकल्प की रिजल्ट एक मास की देखेंगे क्योंकि नया वर्ष तो जल्दी शुरू होने वाला है। 6 मास का होम वर्क अपना है, यह एक मास दृढ़ संकल्प की रिजल्ट देखेंगे। ठीक है ना? टीचर्स एक मास ठीक है? पाण्डव ठीक है? अच्छा – जो पहली बारी मधुबन में पहुंचे हैं, वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। देखो, बापदादा को सदा नये बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं। लेकिन नये बच्चे जैसे वृक्ष होता है ना, उसमें जो छोटे-छोटे पत्ते निकलते हैं वह चिड़ियों को बहुत प्यारे लगते हैं,

ऐसे नये-नये जो बच्चे हैं तो माया को भी नये बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं। इसलिए हर एक जो नये हैं, वह हर रोज़ अपने नवीनता को चेक करना, आज के दिन अपने में क्या नवीनता लाई? कौन सा विशेष गुण, कौन सी शक्ति अपने में विशेष धारण की? तो चेक करते रहेंगे, स्वयं को परिपक्व करते रहेंगे तो सेफ रहेंगे। अमर रहेंगे। तो अमर रहना, अमर पद पाना ही है। अच्छा।

चारों ओर के बेफिक्र बादशाहों को, सदा रूहानी फ़खुर में रहने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा प्राप्त हुए खजानों को जमा खाते में बढ़ाने वाले तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को, सदा एक समय में तीनों प्रकार की सेवा करने वाले श्रेष्ठ सेवाधारी बच्चों को बापदादा का यादप्यार, पदम-पदम-पदमगुणा यादप्यार और नमस्ते।

जयपुर में 19 तारीख को मेगा प्रोग्राम है, उसका समाचार बापदादा को सुनाया

बापदादा ने समाचार सुना कि राजस्थान की राजधानी में मेगा प्रोग्राम हो रहा है। पूना का भी बहुत अच्छा हुआ। मैंगलोर का भी बहुत अच्छा हुआ। सभी जगह का तो बता दिया बहुत अच्छा हुआ। अभी जो होने वाला है, वह भी अच्छा होगा। अच्छा - जयपुर का मेला और ही राजस्थान में आवाज ज्यादा फैलायेगा क्योंकि जहाँ हेडक्वार्टर है, तो हेडक्वार्टर का आवाज भी हेड होना चाहिए ना। तो अच्छा है, आपस में मीटिंग कर रहे हैं, सभी मिल करके करेंगे, सफलता तो गले का हार है ही। तो हिम्मत है और विशेष मधुबन की मदद है। बापदादा की तो मदद है ही। इसलिए सदा सफलता है, इस निश्चित निश्चय से बढ़ते चलो। ठीक है ना! पूने वालों

को भी बहुत-बहुत मुबारक हो और मैंगलोर में तो छोटे-छोटियों ने कमाल कर दिखाई। तो छोटों ने सुभानअल्ला का प्रैक्टिकल सबूत दिखाया। इसलिए सभी को मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा – ओम् शान्ति।

31-12-2004

इस वर्ष के आरम्भ से बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज करो, यही मुक्तिधाम के गेट की चाबी है

आज नवयुग रचता बापदादा अपने बच्चों से नव वर्ष मनाने के लिए, परमात्म मिलन मनाने के लिए बच्चों के स्नेह में अपने दूरदेश से साकार वतन में मिलन मनाने आये हैं। दुनिया में तो नव वर्ष की मुबारक एक दो को देते हैं। लेकिन बापदादा आप बच्चों को नव युग और नये वर्ष की, दोनों की मुबारक दे रहे हैं। नया वर्ष तो एक दिन मनाने का है। नवयुग तो आप संगम पर सदा मनाते रहते। आप सभी भी परमात्म प्यार की आकर्षण में खींचते हुए यहाँ पहुंच गये हो। लेकिन सबसे दूरदेश से आने वाला कौन? डबल विदेशी? वह तो फिर भी इस साकार देश में ही हैं लेकिन बापदादा दूरदेशी कितना दूर से आये हैं? हिसाब निकाल सकते हैं, कितने माइल से आये हैं? तो दूरदेशी बापदादा चारों ओर के बच्चों को चाहे सामने डायमण्ड हाल में बैठे हैं, चाहे मधुबन में बैठे हैं, चाहे ज्ञान सरोवर में बैठे हैं, गैलरी में बैठे हैं, आप सबके साथ जो दूर बैठे देश विदेश में बापदादा से मिलन मना रहे हैं, बापदादा देख रहे हैं सभी कितने प्यार से, दूर से देख भी रहे हैं, सुन भी रहे हैं। तो चारों ओर के बच्चों को नवयुग और नये वर्ष की पदमगुणा मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। बच्चों को तो नवयुग नयनों के सामने है ना! बस आज संगम पर हैं, कल अपने नवयुग में राज्य अधिकारी बन राज्य करेंगे। इतना नजदीक अनुभव हो रहा है? आज और कल की ही तो बात है। कल था, कल फिर से होना है। अपने नव युग की, गोल्डन युग की गोल्डन ड्रेस सामने दिखाई दे रही है? कितनी सुन्दर है! स्पष्ट दिखाई दे रही है ना! आज साधारण ड्रेस में हैं

और कल नव युग की सुन्दर ड्रेस में चमकते हुए दिखाई देंगे। नव वर्ष में तो एक दिन के लिए एक दो को गिफ्ट देते हैं। लेकिन नव युग रचता बापदादा ने आप सबको गोल्डन वर्ल्ड की सौगात दी है, जो अनेक जन्म चलने वाली है। विनाशी सौगात नहीं है। अविनाशी सौगात बाप ने आप बच्चों को दे दी है। याद है ना! भूल तो नहीं गये हो ना! सेकण्ड में आ जा सकते हो। अभी-अभी संगम पर, अभी-अभी अपनी गोल्डन दुनिया में पहुंच जाते हो कि देरी लगती है? अपना राज्य स्मृति में आ जाता है ना!

आज के दिन को विदाई का दिन कहा जाता है और 12 बजे के बाद बधाई का दिन कहा जायेगा। तो विदाई के दिन, वर्ष की विदाई के साथ-साथ आप सबने वर्ष के साथ और किसको विदाई दी? चेक किया सदा के लिए विदाई दी वा थोड़े समय के लिए विदाई दी? बापदादा ने पहले भी कहा है कि समय की रफ्तार तीव्रगति से जा रही है, तो सारे वर्ष की रिजल्ट में चेक किया कि क्या मेरे पुरुषार्थ की रफ्तार तीव्र रही? या कब कैसे, कब कैसे रही? दुनिया की हालतों को देखते हुए अब अपने विशेष दो स्वरूपों को इमर्ज करो, वह दो स्वरूप हैं – **एक सर्व प्रति रहमदिल और कल्याणकारी और दूसरा हर आत्मा के प्रति सदा दाता के बच्चे मास्टर दाता।** विश्व की आत्मायें बिल्कुल शक्तिहीन, दु:खी, अशान्त चिल्ला रही हैं। बाप के आगे, आप पूज्य आत्माओं के आगे पुकार रही हैं – कुछ घड़ियों के लिए भी सुख दे दो, शान्ति दे दो। खुशी दे दो, हिम्मत दे दो। बाप तो बच्चों के दु:ख, परेशानी को देख नहीं सकते, सुन नहीं सकते। क्या आप सभी पूज्य आत्माओं को रहम नहीं आता! मांग रहे हैं – दो, दो, दो...। तो दाता के बच्चे कुछ अंचली तो दे दो। बाप भी आप बच्चों को साथी बना के, मास्टर दाता बनाके, अपने राइट हैण्ड बनाके यही इशारा देते हैं – इतनी विश्व की आत्मायें सभी को मुक्ति दिलानी है। मुक्तिधाम में जाना है। तो हे दाता के बच्चे अपने श्रेष्ठ संकल्प द्वारा, मंसा

शक्ति द्वारा, चाहे वाणी द्वारा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा, चाहे शुभ भावना शुभ कामना द्वारा, चाहे वायब्रेशन वायुमण्डल द्वारा किसी भी युक्ति से मुक्ति दिलाओ। चिल्ला रहे हैं मुक्ति दो, बापदादा अपने राइट हैण्डस को कहते हैं रहम करो।

अभी तक हिसाब निकालो। चाहे मेगा प्रोग्राम किया है, चाहे कान्फ्रेन्स की है, चाहे भारत में या विदेश में सेन्टर्स भी खोले हैं लेकिन टोटल विश्व के आत्माओं की संख्या के हिसाब से कितनी परसेन्ट में आत्माओं को मुक्ति का रास्ता बताया है? सिर्फ भारत कल्याणकारी हो या विदेश में जो भी 5 खण्ड हैं, तो जहाँ-जहाँ सेवाकेन्द्र खोले हैं वहाँ के कल्याणकारी हो वा विश्व कल्याणकारी हो? विश्व का कल्याण करने के लिए हर एक बच्चे को बाप का हैण्ड, राइड हैण्ड बनना है। किसको भी कुछ दिया जाता है तो किससे दिया जाता है? हाथों से दिया जाता है ना। तो बापदादा के आप हैण्डस हो ना, हाथ हो ना। तो बापदादा राइट हैण्डस से पूछते हैं, कितनी परसेन्ट का कल्याण किया है? कितनी परसेन्ट का किया है? सुनाओ, हिसाब निकालो। पाण्डव हिसाब करने में होशियार हैं ना? इसीलिए बापदादा कहते हैं अब स्व-पुरुषार्थ और सेवा के भिन्न-भिन्न विधियों द्वारा पुरुषार्थ तीव्र करो। स्व की स्थिति में भी चार बातें विशेष चेक करो - इसको कहेंगे तीव्र पुरुषार्थ।

एक बात – पहले यह चेक करो कि निमित्त भाव है? कोई भी रॉयल रूप का मैं पन तो नहीं है? मेरापन तो नहीं है? साधारण लोगों का मैं और मेरा भी साधारण है, मोटा है लेकिन ब्राह्मण जीवन का मेरा और मैं पन सूक्ष्म और रॉयल है। उसकी भाषा मालूम है क्या है? यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। यह तो होना ही है। चल रहे हैं, देख रहे हैं...। तो एक निमित्त भाव, हर बात में निमित्त हैं। चाहे सेवा में, चाहे स्थिति में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में चेहरा और चलन निमित्त भाव का हो। और उसकी

दूसरी विशेषता होगी - निर्मान भावना। निमित्त और निर्मान भाव से निर्माण करना। तो तीन बातें सुनी - निमित्त, निर्मान और निर्माण और चौथी बात है - निर्वाण। जब चाहे निर्वाणधाम में पहुंच जायें। निर्वाण स्थिति में स्थित हो जाएं क्योंकि स्वयं निर्वाण स्थिति में होंगे तब दूसरों को निर्वाणधाम में पहुंचा सकेंगे। अभी सभी मुक्ति चाहते हैं, छुड़ाओ, छुड़ाओ चिल्ला रहे हैं। तो यह चार बातें अच्छी परसेन्ट में प्रैक्टिकल जीवन में होना अर्थात् तीव्र पुरुषार्थी। तब बापदादा कहेंगे वाह! वाह! बच्चे वाह! आप भी कहेंगे वाह! बाबा वाह! वाह! ड्रामा वाह! वाह! पुरुषार्थ वाह! लेकिन पता है अभी क्या करते हो? पता है? कभी वाह! कहते हो कभी व्हाई कहते हो। वाह! के बजाए व्हाई, और व्हाई हो जाता है हाय। तो व्हाई नहीं, वाह! आपको भी क्या अच्छा लगता है, वाह! अच्छा लगता है या व्हाई? क्या अच्छा लगता है? वाह! कभी व्हाई नहीं करते हो? गलती से आ जाता है।

डबल फारेनर्स व्हाई-व्हाई कहते हैं? कभी-कभी कह देते हो? जो डबल फारेनर्स कभी भी व्हाई नहीं कहते वह हाथ उठाओ। बहुत थोड़े हैं। अच्छा - भारतवासी जो वाह! वाह! के बजाए क्यों-क्या कहते हैं वह हाथ उठाओ। क्यों-क्या कहते हो? किसने छुट्टी दी है आपको? संस्कारों ने? पुराने संस्कारों ने आपको व्हाई की छुट्टी दे दी है और बाप कहते हैं वाह! वाह! कहो। व्हाई-व्हाई नहीं। तो अभी नये वर्ष में क्या करेंगे? वाह! वाह! करेंगे? या कभी-कभी व्हाई कहने की छुट्टी दे दें? व्हाई अच्छा नहीं है। जैसे वाई हो जाती है ना, तो खराब हो जाता है ना। तो व्हाई वाई है, यह नहीं करो। वाह! वाह! कितना अच्छा लगता है। हाँ बोलो, वाह! वाह! वाह!

अच्छा – तो दूरदेश में सुन रहे हैं, देख रहे हैं – भारत में भी विदेश में भी, उन बच्चों से भी पूछते हैं वाह! वाह! करते हो या व्हाई, व्हाई करते हो? अभी विदाई का दिन है ना! आज वर्ष के विदाई का लास्ट डे है। तो

सभी संकल्प करो - व्हाई नहीं कहेंगे। सोचेंगे भी नहीं। क्वेश्चन मार्क नहीं, आश्चर्य की मात्रा नहीं, बिन्दी। क्वेश्चन मार्क लिखो, कितना टेढ़ा है और बिन्दी कितनी सहज है। बस नयनों में बाप बिन्दू को समा दो। जैसे नयनों में देखने की बिन्दी समाई हुई है ना! ऐसे ही सदा नयनों में बिन्दू बाप को समा लो। समाने आता है? आता है या फिट नहीं होती है? नीचे ऊपर हो जाती है? तो क्या करेंगे? विदाई किसको देंगे? व्हाई को? कभी भी आश्चर्य की निशानी भी नहीं आवे, यह कैसे! यह भी होता है क्या! होना तो नहीं चाहिए, क्यों होता है! क्वेश्चन मार्क नहीं, आश्चर्य की मात्रा भी नहीं। बस बाप और मैं। कई बच्चे कहते हैं यह तो चलता ही है ना! बापदादा को बहुत रमणीक बातें रूहरिहान में कहते हैं, सामने तो कह नहीं सकते हैं ना। तो रूहरिहान में सब कुछ कह देते हैं। अच्छा कुछ भी चलता है लेकिन आपको चलना नहीं है, आपको उड़ना है तो चलने की बातें क्यों देखते हो, उड़ो और उड़ाओ। शुभ भावना, शुभ कामना ऐसी शक्तिशाली है जो बीच में सिर्फ व्हाई नहीं आवे, सिवाए शुभ भावना शुभ कामना के, तो इतनी पावरफुल है जो किसी अशुभ भावना वाले को भी शुभ भावना में बदल सकते हो। सेकण्ड नम्बर - अगर बदल नहीं सकते हो तो भी आपकी शुभ भावना, शुभ कामना अविनाशी है, कभी-कभी वाली नहीं, अविनाशी है तो आपके ऊपर अशुभ भावना का प्रभाव नहीं पड़ सकता है। क्वेश्चन में चले जाते हो, यह क्यों हो रहा है? यह कब तक चलेगा? कैसे चलेगा? इससे शुभ भावना की शक्ति कम हो जाती है। नहीं तो शुभ भावना, शुभ कामना इस संकल्प शक्ति में बहुत शक्ति है। देखो, आप सभी आये बापदादा के पास। पहला दिन याद करो, बापदादा ने क्या किया? चाहे पतित आये, चाहे पापी आये, चाहे साधारण आये, भिन्न-भिन्न वृत्ति वाले, भिन्न-भिन्न भावना वाले आये, बापदादा ने क्या किया? शुभ भावना रखी ना! मेरे हो, मास्टर सर्वशक्तिवान हो, दिलतख्त नशीन

हो, यह शुभ भावना रखी ना, शुभ कामना रखी ना, उससे ही तो बाप के बन गये ना। बाप ने कहा क्या कि हे पापी क्यों आये हो? शुभ भावना रखी, मेरे बच्चे, मास्टर सर्व शक्तिवान बच्चे, जब बाप ने आप सबके ऊपर शुभ भावना रखी, शुभ कामना रखी तो आपके दिल ने क्या कहा? मेरा बाबा। बाप ने क्या कहा? मेरे बच्चे। ऐसे ही अगर शुभ भावना, शुभ कामना रखेंगे तो क्या दिखाई देगा? मेरा कल्प पहले वाला मीठा भाई, मेरी सिकीलधी बहन। परिवर्तन हो जायेगा।

तो इस वर्ष में कुछ करके दिखाना। सिर्फ हाथ नहीं उठाना। हाथ उठाना बहुत सहज है। मन का हाथ उठाना क्योंकि बहुत काम रहा हुआ है। बापदादा तो नज़र करते हैं, विश्व की आत्माओं के ऊपर तो बहुत तरस पड़ता है। अब प्रकृति भी तंग हो गई है। प्रकृति खुद तंग हो गई है, तो क्या करे? आत्माओं को तंग कर रही है। और बाप बच्चों को देखके तरस में आ जाते हैं। आप सबको तरस नहीं आता? सिर्फ खबर सुनकर चुप हो जाते हो, बस, इतनी आत्मायें चली गई। वो आत्मायें सन्देश से तो वंचित रह गई। अभी तो दाता बनो, रहमदिल बनो। यह तब होगा, रहम तब आयेगा जब इस वर्ष के आरम्भ से अपने में बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज करो। बेहद की वैराग्य वृत्ति। यह देह की, देहभान की स्मृति, यह भी बेहद के वैराग्य की कमी है। छोटी-छोटी हद की बातें स्थिति को डगमग करती हैं, कारण? बेहद की वैराग्य वृत्ति कम है, लगाव है। वैराग्य नहीं है लगाव है। **जब बिल्कुल बेहद के वैरागी बन जायेंगे, वृत्ति में भी वैरागी, दृष्टि में भी बेहद के वैरागी, सम्बन्ध-सम्पर्क में, सेवा में सबमें बेहद के वैरागी... तभी मुक्तिधाम का दरवाजा खुलेगा।** अभी तो जो आत्मायें आ रही हैं फिर जन्म लेंगी, फिर दुःखी होंगी। अब मुक्तिधाम का गेट खोलने के निमित्त तो आप हो ना? ब्रह्मा बाप के साथी हो ना! तो बेहद की वैराग्य वृत्ति है गेट खोलने की चाबी। अभी चाबी नहीं लगी है, चाबी

तैयार ही नहीं की है। ब्रह्मा बाप भी इन्तजार कर रहा है, एडवांस पार्टी भी इन्तजार कर रही है, प्रकृति भी इन्तजार कर रही है, तंग हो गई है बहुत। माया भी अपने दिन गिनती कर रही है। अभी बोलो, हे मास्टर सर्वशक्तिवान, बोलो क्या करना है?

इस वर्ष में कोई नवीनता तो करेंगे ना! नया वर्ष कहते हैं तो नवीनता तो करेंगे ना! अभी बेहद के वैराग्य की, मुक्तिधाम जाने की चाबी तैयार करो। आप सभी को भी तो पहले मुक्तिधाम में जाना है ना। ब्रह्मा बाप से वायदा किया है - साथ चलेंगे, साथ आयेंगे, साथ में राज्य करेंगे, साथ में भक्ति करेंगे...। तो अभी तैयारी करो, इस वर्ष में करेंगे कि दूसरा वर्ष चाहिए? जो समझते हैं इस वर्ष में अटेन्शन प्लीज, बार-बार करेंगे वह हाथ उठाओ। करेंगे? फिर तो एडवांस पार्टी आपको बहुत मुबारक देगी। वह भी थक गये हैं। अच्छा - टीचर्स क्या कहती हैं? पहली लाइन क्या कहती है? पहले तो पहली लाइन के पाण्डव और पहली लाइन की शक्तियां जो करेंगे वह हाथ उठाओ। आधा हाथ नहीं, आधा उठायेंगे तो कहेंगे आधा करेंगे। लम्बा हाथ उठाओ। अच्छा। मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा - डबल विदेशी हाथ उठाओ। एक दो में देखो किसने नहीं उठाया है। अच्छा, यह सिन्धी ग्रुप भी हाथ उठा रहा है, कमाल है। आप भी करेंगे? सिन्धी ग्रुप करेंगे? तब तो डबल मुबारक हो। बहुत अच्छा। एक दो को साथ देकर, शुभ भावना का इशारा देते, हाथ में हाथ मिलाते करना ही है। अच्छा। (सभा में कोई ने आवाज की) सब बैठ जाओ, नथिंग न्यु।

मधुबन निवासी

मधुबन वाले हाथ उठाओ, अच्छा ऊपर भी जो सुन रहे हैं वह हाथ उठा रहे हैं। देश विदेश वाले हाथ उठा रहे हैं। अच्छा है। संगठन में शक्ति है, एक दो को शुभ भावना का इशारा, बोलना नहीं, बोलेंगे तो

झगड़ा हो जायेगा। शुभ भावना का इशारा दो। शुभ भावना का इशारा देना जानते हो ना, शुभ भावना का इशारा दे सकते हो?

अच्छा – बापदादा खुश है जो बापदादा ने डायमण्ड हाल बनवाया है, उसको सफल कर रहे हैं इसीलिए सफलता भव। हर सेकण्ड को, हर संकल्प को, हर बोल को, हर कदम को, हर वस्तु को सफल करो और सफल कराओ। 12 बजे के बाद इस नये वर्ष में बापदादा की तरफ से पहला वरदान अपने को देना - **सफलता भव।** संकल्प भी असफल नहीं हो क्योंकि आपका एक शुभ संकल्प विश्व का कल्याण करने वाला है। इतना अमूल्य है। एक-एक सेकण्ड विश्व कल्याण का आधार है। इसीलिए सफल करो सफलता मूर्त बनो। बस यह चेक करो सेकण्ड जो बीता, संकल्प जो चला, सफल हुआ? तो सभी आज मैजारिटी पट में बैठे हैं, यह पटरानियां हैं, यह कोच रानियां हैं, कोच राने हैं, कुर्सी राने और कुर्सी रानियां और आप पटरानी हो। मजा है ना। थक तो नहीं गये हैं? क्योंकि आज लम्बा समय है ना! और तीन बजे से लेके जगह पकड़ लेते हैं। बापदादा सब देखता रहता है। जो 3-4 बजे से हाल में आये हैं वह हाथ उठाओ। टी.वी. में देखो कितने हैं? सारे ही हाथ उठा रहे हैं। कोई 3 बजे कोई 4 बजे आये। तीन बजे आने वालों को त्रिलोकीनाथ का वरदान है। भक्ति में बहुत किया है ना, तो साल में एक बारी यहाँ भी कर लेते हैं। अपने राज्य में यह नहीं होगा। लेकिन वहाँ न बाप आयेगा, न आप आयेंगे। बैठेंगे कहाँ। अभी मजा ले लो। पट में नहीं बैठे हो, बापदादा तो आपको दिलतख्त पर देख रहे हैं। लेकिन दृश्य बहुत अच्छा लग रहा है। सब बिन्दु होकर बैठे हैं। सर्दी लग रही है? सर्दी भाग गई ना! अच्छा। **(आज हाल में 15-16 हजार भाई बहनें बैठे हैं)**

अभी-अभी एक सेकण्ड में बिन्दु बन बिन्दु बाप को याद करो और जो भी कोई बातें हों उसको बिन्दु लगाओ। लगा सकते हो? बस एक

सेकण्ड में ''मैं बाबा का, बाबा मेरा।'' अच्छा।

सेवा का टर्न – महाराष्ट्र

अच्छा – हर ज़ोन को सेवा का गोल्डन चांस मिलता है। इन 15-20 दिनों में सच्चे ब्राह्मणों की सेवा कर अपने पुण्य की कोठियां भर देते हैं क्योंकि अच्छी सेवा करते हैं तो सबके दिल से क्या निकलता है? बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। तो यह दुआयें पुण्य के खाते में जमा हो जाती हैं। तो किसी को भी पुण्य का खाता जमा करना सहज है, योगबल से तो होता ही है लेकिन यह कर्म करते भी अगर पुण्य का खाता जमा करना है तो कर्मयोगी स्थिति में यज्ञ सेवा करो तो आपका खाता भरपूर हो ही जायेगा। यह सहज विधि है। महाराष्ट्र तो है, महाराष्ट्र की संख्या भी महा है। सेन्टर्स भी ज्यादा हैं, गीता पाठशालायें तो बेशुमार हैं। अच्छा है। बापदादा तो देखते हैं जो भी अपने स्व-इच्छा से अपने को सेवा में जीवन सहित समर्पण करते हैं, उन सभी समर्पित बच्चों को शरीर निर्वाह का साधन अवश्य सहज प्राप्त होता है। खाओ, पिओ प्रभु के गुण गाओ। सेवा करते हैं, भाषण करते हैं, कोर्स कराते हैं, यह क्या है? प्रभु के गुण ही तो गाते हैं। और दाल रोटी देने के लिए तो बापदादा बंधा हुआ है। 36 प्रकार का भोजन नहीं खिलायेगा, वह कभी-कभी खिला देगा। तो बहुत अच्छा – चाहे ट्रस्टी बनके भी सेवा कर रहे हैं, अगर ट्रस्टी हैं, सच्चे ट्रस्टी, मतलब के ट्रस्टी नहीं, सच्चे ट्रस्टी हैं तो बापदादा कभी भूखा नहीं रख सकता। दाल रोटी जरूर खिलायेगा क्योंकि बापदादा भूखा रहता है क्या? जब बापदादा भूखा नहीं रहता, सभी भोग लगाते हैं। आप सभी भोग लगाते हैं ना, चतुराई तो नहीं करते, एक गिट्टी खिलाओ, बाकी भूल जाओ, नहीं। अगर ट्रस्टी हैं तो भी बापदादा बंधा हुआ है। तो महाराष्ट्र जितने महा हैं उतने वारिस भी महान हैं? हैं ना!

अभी इस वर्ष में बापदादा सभी ज़ोन में कितने-कितने वारिस क्वालिटी हैं, वह लिस्ट मंगायेंगे, उन वारिसों की सेरीमनी करेंगे। टीचर्स तो जानती हैं ना! देखेंगे, इसमें नम्बरवन कौन सा ज़ोन है? महाराष्ट्र होगा ना! बहुत अच्छा। पक्के वारिस कौन हैं, कितने हैं? और इस वर्ष में यह जो मेगा प्रोग्राम किया है वह तो बहुत अच्छा किया। कितने प्रोग्राम हुए हैं? कहाँ-कहाँ हुए हैं? (15-16 हुए है) बापदादा ने देखा कोई कोई प्रोग्राम तो ज़ोन ने मिलकर किया है लेकिन कोई कोई प्रोग्राम एक सेन्टर या आसपास उसके कनेक्शन वालों ने किया है, वह कौन-से हैं? **(मैंगलोर, सम्बलपुर, बिलासपुर, पूना, मेहसाना)** तो कमाल की ना उन्होंने। वह आये हैं? कौन आये हैं? पूना वाले उठो। पूना की टीचर्स उठो। पूना ने भी कमाल की। ठीक है। सर्टीफिकेट अच्छा लिया। अच्छा – मेहसाना। कर लिया है? मुबारक हो। बिलासपुर के भाई आये हैं, उनको भी मुबारक हो। सम्भलपुर वाला कोई है? थोड़े-थोड़े आये हैं, उसको भी मुबारक है, हिम्मत रखकर किया और सफलता पाई। तो सफलता की मुबारक हो। अच्छा। यह तो हुआ, अभी बापदादा क्या चाहते हैं? सभी वर्गो की सेवा तो हुई लेकिन अभी बापदादा चाहते हैं कि हर वर्ग ने जो भी आदि से अन्त तक सेवा की है, जैसे बापदादा ने माइक बुलाये, थे तो नम्बरवार माइक, सभी पावरफुल नहीं थे, थोड़े मीडियम थे। लेकिन अभी बापदादा यह चाहते हैं कि इतना समय जो वर्ग की सेवा की, उसमें आई.पी. या वी.आई.पी. हर ज़ोन से कितने निकले हैं जो कहें कि नॉलेज को मैं मानता हूँ। सिर्फ यह महिमा नहीं करें – यह कार्य बहुत अच्छा है और कोई कर नहीं सकता, यह नहीं कहें लेकिन नॉलेज को मानता हूँ। ऐसे नॉलेजफुल ग्रुप बापदादा देखने चाहते हैं। क्लीयर हुआ। तो इस वर्ष में लास्ट टर्न आयेगा ना उसमें हर वर्ग वाले जो ऐसे आई.पी. हो, वी.आई.पी. का तो भाग्य थोड़ा पीछे है लेकिन आई.पी. जो नॉलेज को मानता हो, ऐसा ग्रुप बापदादा के सामने

लाओ। वह सेवा करे। उनको सेवा के निमित्त बनायेंगे। ठीक है! अभी अगले वर्ष का यह होम वर्क है वर्ग वालों को क्योंकि कोई न कोई वर्ग तो आता ही है।

कल्चरल विंग्

अच्छा - कल्चरल वाले जब कल्चरल दिखाते हो तो उसमें और क्या सिद्ध करते हो? जो भी कल्चरल करते हो उसमें आपके चलन चेहरे और कर्म से क्या कैरेक्टर दिखाई देता है, यह श्रेष्ठ कैरेक्टर वाले हैं, यह दिखाई देता है? हाँ करो या ना? हाँ तो हाथ हिलाओ। अच्छा दोनों लक्ष्य रखते हो। क्योंकि कल्चरल प्रोग्राम तो सभी करते हैं लेकिन आप जो कल्चरल दिखाते हो या प्रोग्राम करते हो उसमें सिर्फ कल्चरल नहीं हो लेकिन नैतिक मूल्य भी समाये हुए हों, कैरेक्टर हो। उससे क्या होगा? देखने वालों को सहज ही आकर्षण होगी कि हम भी कैरेक्टर धारण करें। तो इस विधि से, क्योंकि कई ज्ञान सुनने नहीं चाहते हैं, सीधा ज्ञान नहीं सुनेंगे लेकिन आपके कल्चरल से वह कैरेक्टर सीख जायें। ऐसा कर भी रहे हो और भी लक्ष्य रखो कि कम से कम देखने वाले जो हैं उनको नैतिक वैल्यु का इशारा तो मिले, आकर्षण तो हो, हमको करना है। बाकी अच्छा कर रहे हैं। जो भी वर्ग कर रहे हैं बापदादा हर वर्ग के पुरुषार्थ और रिजल्ट को देख खुश हैं। और इस वर्गीकरण की सेवा के बाद कई भाई बहिनों को चांस मिला है, सेवा के क्षेत्र में आगे आने में और बिजी रहते हैं। इसलिए बापदादा को वर्गो की सेवा अच्छी लगती है। सभी कर रहे हैं। कभी कोई वर्ग आता है, कभी कोई वर्ग आता है तो सभी ठीक हैं? बहुत ठीक या ठीक हैं? बहुत ठीक? तीव्र पुरुषार्थी या पुरुषार्थी क्या हैं? अच्छा चल रहे हैं या उड़ रहे हैं? क्या कहेंगे? अभी उड़ना है और उड़ाना है। चलने का टाइम पूरा हो गया। जैसे बैलगाड़ी का सीजन पूरा हो गया, कारें

आ गई हैं। पहले तो बैलगाड़ियों में ही जाते थे। तो अभी चलने का समय पूरा हुआ, अभी उड़ना है। अच्छा।

ज्युरिस्ट विंग

अच्छा – अच्छे-अच्छे आये हैं, मुबारक हो। जज और वकील तो आवाज बुलन्द करने वाले होते हैं ना, तो अभी ऐसा कोई प्रैक्टिकल का प्लैन बनाओ जो आप भी स्प्रीचुअल्टी का आवाज बुलन्द करके दिखाओ। जो सबकी नज़र में आये कि साधारण वकील, साधारण जज और स्प्रीचुअल जज या वकील में कितना अन्तर है। हो जायेगा, बापदादा ने सुना – गीता के भगवान का भी सोच रहे हैं। सोचो। इसमें कोई को निमित्त बनाना पड़ेगा। कोई जज हो, कोई धर्मात्मा हो, दोनों ग्रुप में से दो चार को तैयार करो, सेवा में, मैदान में आना पड़ेगा। आपस में मीटिंग करो, सभी जज और रिलीजस वाले मिलकर मीटिंग करके कोई प्लैन सोचो। दोनों ही मिलकर राय करो। फिर कुछ कर सकेंगे। हो जायेगा, होना तो है ही। मुबारक हो। जो भी आये हैं, उन्हों को भी विशेष मुबारक हो। अच्छा।

डबल विदेशी

डबल विदेशी तो शान्तिवन वा मधुबन का विशेष श्रृंगार हैं। बापदादा देखते हैं एक-एक बच्चा विशेष डबल हीरो है। रत्न भी है और हीरो पार्ट बजाने वाले भी हैं। तो हर एक विदेशी डबल हीरो है। देखो कितने देशों में और वहाँ से ही तैयार होके वहाँ ही सेवा कर रहे हैं। कितने देशों से आये हुए हैं? **(45 देशों से)** अच्छा, 45 देश वाले हाथ उठाओ। जो भिन्न-भिन्न देश से आये हैं, उनमें से एक-एक हाथ उठाओ। छोटा बच्चा भी हाथ हिला रहा है। मुबारक हो। अच्छा। 45 देश वालों को पदमापदम मुबारक हो। **(छोटे बच्चों की रिट्रीट चल रही है)** सभी देखो यह बच्चों

का ग्रुप कितना अच्छा है। कितने देश के बच्चे हैं? **(15 देश के 28 बच्चे हैं)** गीत सुनाओ। (बच्चों ने गीत गाया मैं बाबा का, बाबा मेरा) अच्छा - सभी बच्चे अमृतवेला करते हो? जो बच्चे अमृतवेला करते हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा जो कभी-कभी करते हैं वह हाथ उठाओ। कभी-कभी वाले ज्यादा हैं। अच्छा - लड़ाई झगड़ा करते हो? जो लड़ाई नहीं करता है वह हाथ उठाओ। तो अभी यहाँ से जाने के बाद लड़ाई नहीं करना क्योंकि ब्रह्माकुमार हो ना। तो ब्रह्माकुमार, बाबा मेरा, मैं बाबा का कहा तो लड़ाई नहीं करना है, नहीं तो बाबा मेरा नहीं होगा। अभी लड़ाई करेंगे? (नहीं) अभी परिवर्तन करेंगे। अभी टीचर्स सब रिपोर्ट देना तो लड़ाई झगड़ा किया है या नहीं किया? बाकी मुबारक हो। अच्छा है, फिर भी पुरुषार्थ अच्छा किया है इसलिए पदमगुणा मुबारक हो। (विदेश का यूथ ग्रुप भी आया है) (मेरा बाबा का साइन बोर्ड दिखा रहे है) बहुत अच्छा, ताली बजाओ। बापदादा ने सुना तो रिजल्ट में यूथ ग्रुप ने पुरुषार्थ में बहुत गुह्यता लाई है। तो यह पुरुषार्थ में जो सूक्ष्म में गये, तो सदा पुरुषार्थ में आगे से आगे बढ़ते रहना, पीछे नहीं होना; आगे बढ़ते रहना और उड़ते रहना। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा –

(दादी जानकी ने बापदादा से पूछा – विश्व की करोड़ों आत्माओं को इस साल में मैसेज कैसे मिले, मेरा बाबा है, यह अनुभव कैसे हो, उसके लिए क्या प्लैन बनें?)

उसके लिए कोई ग्रुप बनाओ, ऐसा कोई छोटा ग्रुप बनाओ जो इस बात पर मनन करे क्योंकि विधियां तो सुनाई, हर एक को चाहे मंसा संकल्प द्वारा, चाहे वृत्ति वायब्रेशन द्वारा, चाहे वाणी द्वारा, चाहे सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा हर एक को लक्ष्य रखना है कि सारे दिन में कितनी आत्माओं की सेवा की? चाहे मंसा की, चाहे वृत्ति वायब्रेशन से की, वाणी द्वारा की,

प्रोग्राम द्वारा की या सम्बन्ध सम्पर्क से की या चलन चेहरे से की, हर एक को नोट करना चाहिए कि मेरे सेवा की रिजल्ट सारे दिन की क्या रही? और एक ग्रुप बनाओ जो सोचे, सेवा के बिना रह नहीं सके। उसको देख कर सब फ़ालो करेंगे। लेकिन स्व स्थिति और सेवा की स्थिति दोनों का बैलेन्स हो। फिर सेवा बहुत बढ़ेगी और दूसरों को भी उमंग आयेगा कि बैलेन्स है। सिर्फ सेवा करते हैं तो कहते हैं, यह तो बोलने वाले हैं ही। लेकिन ऐसा छोटा ग्रुप बनाओ जो यह पान का बीड़ा उठावे कि हम स्व-स्थिति और सेवा की विधियों से सेवा करेंगे। एक एक्जैम्पल हो ग्रुप फिर वह जैसे कहते हैं ना एक दीपक से दीवाली हो जाती है, वैसे एक ग्रुप से वृद्धि होती जायेगी। अच्छा।

सभी को वर्ष का होम वर्क तो याद है ना, जो बापदादा ने कहा कि इस वर्ष में क्या विदाई देनी है और बधाई मनानी है, वह याद है ना? अभी बापदादा भी देखेंगे एक मास की रिजल्ट में सिर्फ यहाँ यह लिखें कि इतनी परसेन्टेज सेवा की, 40 परसेन्ट, 80 परसेन्ट, 20 परसेन्ट 10 परसेन्ट.... सिर्फ परसेन्टेज लिखें लम्बा चौड़ा पत्र नहीं लिखें, फिर बापदादा फर्स्ट नम्बर वालों को इनाम देंगे। लेकिन बैलेन्स स्व और सेवा का बैलेन्स, सन्तुष्टता प्रसन्नता का बैलेन्स। ठीक है। सब रिजल्ट लिखेंगे, सिर्फ परसेन्टेज लिखना मीठी दादी, योगयुक्त दादी...., लम्बा नहीं लिखना, बस परसेन्टेज लिखना क्योंकि पढ़ने का टाइम नहीं होता है। फिर सारे ब्राह्मण परिवार में जो एक मास की रिजल्ट भेजेंगे और नम्बरवन आयेंगे उसको बापदादा इनाम देंगे। ठीक है? पसन्द है? समझ में आया? माताओं को समझ में आया? टीचर्स को समझ में आया? पीछे वालों को समझ में आया? हाथ उठाओ पीछे वाले। अच्छा -

अभी चारों ओर के सर्व नये युग के मालिक बच्चों को, चारों

ओर के नये वर्ष मनाने के उमंग-उत्साह वाले बच्चों को सदा उड़ते रहना और उड़ाते रहना, ऐसे उड़ती कला वाले बच्चों को, सदा तीव्र पुरुषार्थ द्वारा विजय माला के मणके बनने वाले विजयी रत्नों को बापदादा का नये वर्ष और नये युग की दुआओं के साथ-साथ पदमगुणा थालियां भर-भर के मुबारक हो, मुबारक हो। एक हाथ की ताली बजाओ। अच्छा।

दादी जी से

तबियत कैसी भी है लेकिन सम्भाल रही हो बहुत अच्छा। अच्छा सम्भाल रही हो। आपकी दादियों की युनिटी और चेहरा और चलन उसको देख करके सबकी पालना हो रही है। बाप का तो पहले दिन से हाथ और साथ है ही है। अच्छा - (जानकी दादी से) विदेश ठीक है? राजस्थान की जो टीचर्स आई हैं वह उठें।

राजस्थान की तीन बहनें

त्रिमूर्ति आई है। सहज हो गया ना! सहज हुआ, हिम्मत बढ़ी? अभी तो नहीं कहेंगी बड़ा मुश्किल है। अभी 10 गुणा करके दिखाना। राजस्थान को परिस्तान बनाना ही है। इसीलिए हिम्मत रखकर बढ़ते चलो। अभी आवाज फैलाना। अभी आवाज फैलाया है, अभी जिन वी.आई.पी की एड्रेसेज हैं उनको स्नेह मिलन में बुलाओ, अभी लोहा गर्म है उसमें जो भी बनाने चाहे बन जायेगा। तो हर एक स्थान जो भी जयपुर में नजदीक हैं, उसमें बुलाओ। और वैसे भी राजस्थान में बीच-बीच में स्नेह मिलन रखो, ब्रह्माभोजन खिलाओ। ब्राह्मणों का तो रखना ही है लेकिन वी.आई.पीज का रखो। आई.पीज को खड़ा करो तो राजस्थान आगे जायेगा। बाकी अच्छा कर लिया, मुबारक हो, सहज हो गया। मुबारक हो। (बाबा को

मुबारक हो) दादियों को मुबारक दो। अच्छा किया। ऐसे ही मिलकर करना, इस साल में दो तीन प्रोग्राम करो। कभी यह करे, कभी यह करे...। अच्छा।

निर्मलशान्ता दादी से

आपकी शक्ल सुहानी (सुन्दर) लग रही है। बीमार नहीं लग रही है। (बीमार थोड़ेही हूँ) अच्छा है। बहुत अच्छा। **(रुक्मिणि बहन से)** – यह भी बहुत अच्छी मेहनत करती है। थक तो नहीं गई। बहुत अच्छी दिल से सेवा की, उसकी मुबारक है, मुबारक है।

रात्रि 12 बजे के पश्चात बापदादा ने सभी बच्चों को नये वर्ष 2005 की बधाइयां दी

चारों ओर के सभी सिकीलधे, लाडले, तख्तनशीन, स्वराज्य अधिकारी बच्चों को नये वर्ष और नव युग की बधाइयां हो, बधाइयां हों। सदा ही इस वर्ष सबको बधाइयां देनी हैं और बधाइयां लेनी हैं - इसी लक्ष्य से लक्षण धारण कर उड़ते रहना, उड़ाते रहना। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।